दुर्गाप्रसाद खत्री
रोहतासमठ
2

प्रकाशक :—
श्री कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी ।

मूल्य :—

सजिल्द—२६/००   अजिल्द—२०/००

मुद्रक :
लहरी प्रेस;
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

चौथा भाग

पहिला बयान

पुराने महल की एक खिड़की के आगे खड़ी मैना अपने सामने की पहाड़ियों के पीछे डूबते सूर्यदेव की ओर देख रही है ।

आसमान पर दौड़ते और तरह तरह के रंगों में भीगे हुए छोटे छोटे बादल के टुकड़े सूर्य की बिदाई पर मानों खेद प्रकट कर रहे हैं, और शायद उन्हीं के दुःख से दुःखी होकर मैना भी अपनी डबडबाई हुई आंखें आंचल से पोछ रही थी जब यकायक किसी ने दबे पाँव उस कमरे में पहुंच कर उसकी दोनों आंखें पीछे से बन्द कर लीं । मैना ने अपनी कोमल कलाइयां उठा कर आंखें बन्द करने वाले के दोनों हाथ पकड़े और तब एक लम्बी साँस भर कर कहा, "बारे आप किसी तरह आए तो सही !"

शेरसिंह ने, क्योंकि ये आने वाले वे ही थे, अपने हाथ हटा लिए मगर मैना की उँगलियां मलते हुए कहा, "लेकिन यह क्या मैना, तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों ?" मैना ने उनसे आंखें मिलाते हुए कहा, "क्या आपको भी बताना पड़ेगा ?" शेरसिंह बोले, "अगर राजा गोपालसिंह वाली खबर सुन कर तुम्हारा यह हाल है तो तुम इन आंसुओं को पोंछ डालो क्योंकि इनकी जरूरत नहीं ।" उत्कंठा से उनके दोनों हाथ पकड़ मैना बोल उठी, "सो क्या, सो क्या ?" शेरसिंह हँस कर बोले, "अब बूआजी के सामने ही सब कुछ सुनना, वे कहाँ हैं ?"

मैना० । अपने कमरे में गम में डूबी पड़ी हैं, सभों को हटा दिया है, मुझे भी पास रहने नहीं दिया ।

शेर० । अच्छा, तब तो मुझे सीधे उन्हीं के पास चलना चाहिए ! मगर तुमसे भी बहुत कुछ मुझको कहना है !

मैना ने पूछा, "सो क्या ?" पर शेरसिंह बूआजी के कमरे में जाने के लिए घूम चुके थे अस्तु वह उनके पीछे पीछे चल कर उस जगह पहुंची जहां बेचारी बुढ्ढा देवीरानी अपनी छोटी पलंगड़ी पर सिर से पैर तक चादर ताने पड़ी हुई थीं। बार बार आंखें पोछते रहने से चादर का चेहरे पर वाला हिस्सा गीला हो गया था और इस समय भी वे बाहर अपने हाथ निकाल कर आंखें ही पोछ रही थीं जब शेरसिंह ने वहां पहुंच कर कहा, "यह क्या बूआजी, आपने अपना यह क्या हाल बना रक्खा है !"

शेरसिंह की आवाज सुनते ही बूआजी ने चमक कर मुंह पर से चादर हटा दी और रोते रोते लाल हो गई अपनी आंखों को शेरसिंह की तरफ घुमा कर कहा, "शेरसिंह, तुम आ गए ! आओ, बैठ जाओ, और सुनाओ जमानिया की क्या अवस्था है ?"

शेरसिंह ने घूम कर बूआजी के दोनों पैर छूए और तब सामने आकर कहा, "बूआजी, आप ऐसा करेंगी यह कम से कम मैं तो सोच भी नहीं सकता था। क्या अभी उसी दिन आपने मुझको ढाढ़स बंधाते हुए नहीं कहा था कि गम मत करो शेरसिंह, लोग चाहे जो कुछ भी कहें, पर मुझको विश्वास नहीं हो सकता कि गोपालसिंह इस दुनिया में नहीं है।"

देवी० । ठीक है, मैंने कहा था, और यह सोच कर कहा था कि तिलिस्म बनाने वाले कभी गलती नहीं करेंगे ! जब उन्होंने एक तिलिस्म गोपालसिंह के नाम पर बांधा है और उसी के हाथों उसका तोड़ना लिख गए हैं तो ब्रह्मा की भी मजाल नहीं कि इस काम में बाधा डाल सके। पर अब लोगों से जो कुछ सुनती हूं उससे तो यही मानना पड़ता है कि वह कम्बख्त खबर सही है और गोपाल इस दुनिया में नहीं रहा। इस समय भी पड़ी पड़ी मैं यही सोच रही थी कि तिलिस्म बनाने वाले भी तो आखिर मनुष्य ही थे कोई देवता नहीं, और जब देवताओं से गलती हो सकती है तो मनुष्य से क्यों नहीं होगी !

शेर० । ठीक है, देवताओं से गलती हो सकती है और मनुष्य से भी गलतियां होती ही हैं, पर तिलिस्म बनाने वाले देवताओं से भी बढ़ कर थे। उनसे कभी गलती हो ही नहीं सकती !

देवीरानी ने चमक कर पलंग की दोनों पाटियां पकड़ लीं और गहरी निगाहें

उन पर जमा कर पूछा, "इसका मतलब ?" शेरसिंह ने गम्भीर भाव से जवाब दिया—"यही कि गोपालसिंह पर मुसीबत बहुत भारी आई, पर उनकी जान सही सलामत है।" देवीरानी उठ कर बैठ गईं, एक हाथ से उन्होंने अपना कलेजा दबा लिया और दूसरे से पलंग की पाटी पकड़ कर बोलीं, "फिर कहो शेरसिंह, क्या कहा तुमने? मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता, पास आ जाओ, बैठ जाओ !"

मुस्कुराते हुए शेरसिंह पलंगड़ी के पास पहुंच कर बैठ गये और हाथ का इशारा करके मैना को भी अपने पास ही बैठा लिया, तब बोले, "मैं बहुत ठीक कह रहा हूं बूआजी, कम्बख्त दुश्मनों ने गोपालसिंह को बहुत गहरा धोखा दिया और वे बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ गये मगर उनकी जान पर कोई आंच नहीं आई है और वे सही सलामत हैं।"

बूआजी० । कहां हैं ?

शेर० । (झुक कर धीरे से) जमानिया तिलिस्म के अन्दर खास बाग के चौथे दर्जे की एक ऐसी जगह में जहां से बहुत कोशिश करके भी निकल नहीं सकते।

बूआ० । जरूर यह दारोगा की कारवाई होगी !

शेर० । मैं यह तो नहीं कह सकता कि उसका इसमें बिल्कुल हाथ नहीं है पर तब यह जरूर है कि जिन खास खास लोगों को यह भेद मालूम हो चुका है उनको यही विश्वास है कि यह कारवाई मुन्दर की है।

बूआ० । मुन्दर की !!

शेर० । जी हां, हेलासिंह की लड़की मुन्दर ! आपको याद होगा कि बहुत दिन हुआ मैंने आपसे कहा था कि गोपालसिंह की शादी के बारे में भी दारोगा साहब कोई बहुत भारी चालाकी कर गये हैं और मुझे शक होता है कि आज जो औरत जमानिया के राजमहल में मायारानी बनी हुई ऐश कर रही है वह बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी नहीं बल्कि कोई और ही है।

देवी० । हां ठीक है तुमने कुछ ऐसी बात कही थी और साथ ही शायद यह भी कहा था कि तुम्हारे गुरुभाई भूतनाथ को इस मामले की बहुत कुछ बातें मालूम हैं।

शेर० । जी हां, उसने दारोगा को धोखा देकर आखिर मालूम कर ही लिया कि वह लक्ष्मीदेवी के बदले हेलासिंह की लड़की मुन्दर को मायारानी बनाया चाहता है। पर अफसोस, भूतनाथ खुद एक धोखे में पड़ गया और उसी के सबब से हमलोग भी इस बारे में गाफिल रह गये।

देवी० । सो क्या ?

शेर० । मैंने भूतनाथ से जब इस सम्बन्ध में पूछा तो उसने कहा कि दारोगा का इरादा मुन्दर की शादी गोपालसिंह से करा देने का जरूर था, पर अब जब वह मर ही गई तो सब डर जाता रहा।

देवी० । तो भूतनाथ ने यह बात तुमसे झूठ कही और मुन्दर जीती थी तथा गोपाल से ब्याह भी दी गई ?

शेर० । जी हां, मुन्दर जीती रह गई, मगर भूतनाथ ने भी कुछ जान बूझ कर मुझसे यह झूठ नहीं कहा था; उसके ऐसा विश्वास करने का कारण था। आपको शायद याद होगा कि भूतनाथ की करनी से लोहगढ़ी के बारूदखाने में आग लग गई और समूची ऊपरी इमारत उड़ गई थी।

देवी० । मुझे खूब याद है।

शेर० । जिस समय की यह घटना है उस समय मेरे दोस्त और मददगार दलीपशाह मेरी सूरत बने हुए उसी इमारत के अन्दर बैठे गौहर नन्हों और मुन्दर से कुछ जरूरी बातों की जानकारी ले रहे थे। दारोगा का बर्गलाया हुआ भूतनाथ उसी समय वहां पहुंचा और उसकी करनी से लोहगढ़ी उड़ गई जिससे वह खुद भी बहुत सख्त जख्मी हुआ, बल्कि मैं भी चोट खा जाता अगर आपका दिया हुआ वह अद्भुत कवच मेरे शरीर पर न होता जिसे पहिन कर तिलिस्मी शैतान बना करता हूं, क्योंकि भाग्यवश उसी समय मैं भी उस जगह पहुंच गया था। खैर मुख्तसर यह कि जब उस जगह से कई लाशें निकाली गईं तो केवल भूतनाथ ही नहीं बल्कि हम लोगों को भी यही विश्वास हो गया कि गौहर और नन्हों के साथ साथ मुन्दर भी उसी जगह मर गई, अतः हम लोग उसकी तरफ से कुछ निश्चिन्त से हो गए। दारोगा को मौका मिल गया और वह अपनी मनचाही कर गुजरा अर्थात् उसने मुन्दर को गोपालसिंह के गले मढ़ दिया।

बूआ० । तो मुन्दर बची रह गई थी, मरी नहीं थी ?

शेर० । जी हां, किसी तर्कीब से दारोगा उन तीनों ही को बचा कर निकाल ले गया और वे लाशें जिन्हें हम लोगोंने उनकी समझा किन्हीं और ही आदमियों की थीं।

बूआ० । और वही मुन्दर अब जमानियाके राजमहलमें मायारानी बनी हुई है?

शेर० । जी हां, और अब उसी ने गोपालसिंह के साथ यह कार्रवाई की।

देवी० । अच्छा कैसे कैसे क्या क्या हुआ सो खुलासा कहो और यह बताओ कि अब जो तुम कह रहे हो वह खबर सही है या मुझे गोपालसिंह के बारे में पुनः कोई बुरी बात सुननी पड़ेगी ?

शेर० । (हंस कर) जी नहीं, अब जो कुछ मैं कह रहा हूं वह बिल्कुल सही है क्योंकि मैं वहां जाकर उनसे बातें करता हुआ आ रहा हूं, रहा कैसे कैसे क्या क्या हुआ सो इस बारे में खुलासा हाल आप फिर मुझसे सुनियेगा क्योंकि इस समय मैं जरा जल्दी में हूं, सिर्फ एक बहुत जरूरी बात आपसे पूछने के लिए ही आया हूं और उसे जानकर तुरन्त फिर चला जाऊंगा। सक्षेप में मामला यह है कि यह मुन्दर चालचलन की खराब तो पहिले की ही थी, महल में रानी की शान शौकत से रह कर कुछ दिनों अपने आपको भूल सी गई थी पर फिर उसकी आदतों ने जोर मारा। किसी एक लौंडे पर वह आशिक हो गई और यहां तक फरेफ्ता हो गइ कि उसे बांदी बना कर महल में डाल लिया। शायद किसी तरह गोपालसिंह को इसकी सुन गुन लग गई और वे सही भेद जानने के फिराक में पड़ गये, अन्त मे और कोई चारा न देख कम्बख्त मुन्दर ने धोखा दे उनको बेहोश कर कैद-खाने मे डाल दिया और लोगों में यह मशहूर कर दिया कि वे मर गये।

देवी० । (सिर हिला कर) तुम चाहे जो कहो मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि यह कार्रवाई उसी की है। एक अकेली औरत का इतना बड़ा कलेजा नहीं हो सकता। जरूर इसमें दारोगा का भी हाथ है।

शेर० । बहुत मुमकिन है कि हो क्योंकि यह घटना अर्थात् गोपालसिंह का मरना जिस दिन मशहूर हुआ उसके एक दिन पहिले दारोगा के कब्जे से एक बहुत ही गुप्त चीज निकल कर गोपालसिंह के हाथ में पड़ चुकी थी और इसी घटना पर ख्याल करके मैंने शुरू ही में आपसे कहा कि दारोगा का इसमें बिल्कुल ही हाथ नहीं है सो मैं नहीं कह सकता।

देवी० । वह चीज क्या थी ?

शेर० । (देवीरानी की तरफ झुक कर) तिलिस्म की चाभी, वही पोथी जिसे हमारे बाबाजी गोपालसिंह को दिया चाहते थे !

देवी० । (चौंक कर) हैं, और वह अब तक दारोगा के पास थी ?

शेर० । जी हां, प्रभाकरसिंह की बदौलत तिलिस्म से छूटे हुए कैदियों में गोपालसिंह के दिली दोस्त श्यामलाल भी थे जिन्हें यह बात मालूम थी कि दारोगा ने इस चीज को कहां छिपा कर रक्खा है। इन्द्रदेव उन्हें साथ लेकर दारोगा के मकान में घुसे और उस चीज को कब्जे में कर राजा गोपालसिंह के पास पहुंचा आए। उनका इरादा यह था कि इसकी मदद से राजा गोपालसिंह तिलिस्म तोड़ने का काम शुरू कर देंगे और दारोगा अपने नतीजे पर पहुंचेगा, जिसको इस चो

के लिए ही वे अब तक छोड़ते चले आ रहे थे पर हुआ इसका बिलकुल उलटा ही। गोपालसिंह दूसरे ही दिन मुर्दा मशहूर हो गये और वह पोथी पुनः गायब हो गई।

देवी०। तब जरूर इस कार्रवाई में दारोगा का ही हाथ है, मगर खैर तुम आगे की बात कहो, तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि गोपाल मरा नहीं जीता है?

शेर०। कई आदमियों के साथ साथ इस बात का शक दलीपशाह के शागिर्द गिरिजाकुमार को भी था जिसने एक दिन जमानिया के ऐयार बिहारीसिंह को धोखा देकर खास उसके मुंह से सुन लिया था कि गोपालसिंह मरे नहीं जीते हैं* मगर इसके बाद ही वह दारोगा के फन्दे में पड़ गया और किसी को यह खबर बता न सका। भाग्यवश किसी तरह मैं उस जगह जा पहुंचा जहां दारोगा ने गिरिजाकुमार को बन्द किया हुआ था। उसे छुड़ा तो न सका पर उससे अच्छी तरह बातें हुईं तथा उसी समय उसने यह बात मुझसे कही और मैं इसे सुनते ही चौकन्ना हो गया। तिलिस्म की चप्पा चप्पा जमीन, जहां कहीं भी मैं जा सकता था; मैंने छान मारी, और अन्त में उन्हें जीते जागते देख ही लिया। आपसे मैंने कहा था कि वे खास जमानिया के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में एक ऐसी जगह बन्द कर दिये गये जहां से किसी तरह निकल नहीं सकते, मगर मैं खुद दूबदू उनके सामने पहुंच कर उनसे बातें कर आया हूं और अब इसलिए आपके पास आया हूं कि यह जानूं कि उन्हें किस तरह उस जगह से छुट्टी दिलाई जा सकती है?

देवीरानी यह सुनते ही सीधी हो कर बैठ गईं और हाथ बढ़ा कर शेरसिंह का सिर छूने बाद बोलीं, "जो जो तुम जानना चाहते हो मुझसे खुशी खुशी पूछो, जहां तक मुझे मालूम है मैं बताऊँगी और अगर जरूरत पड़ी तो खुद तुम्हारे साथ चल कर बेचारे लड़के को कैद से छुट्टी दिलाऊंगी, मगर सबसे पहिले तुम यह बताओ कि वह तिलिस्मी पोथी जिसे बाबाजी गोपालसिंह को दिया चाहते थे और जिसके बारे में तुमने अभी कहा कि इन्द्रदेव ने दारोगा से लेकर गोपाल को दे दी अब कहां है?"

शेर०। (चिन्ता के साथ) इस समय मेरे आने का एक कारण यह पोथी भी है। गोपालसिंह का कहना है कि वह उनके पास नहीं है, जरूर मुन्दर के कब्जे में होगी या शायद लौट कर पुनः दारोगा के पास पहुंच गई हो, जिसकी कार्रवाइयों का कोई अन्त नहीं मिल सकता, अस्तु सबसे पहिले मैं आपसे यही जानना चाहता हूं कि अगर वह पोथी नहीं मिली तो क्या होगा? तिलिस्म तो फिर टूटेगा नहीं?

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति चौबीसवां भाग, दूसरा बयान।

देवी०। क्या उस पोथी और गोपाल की स्वतन्त्रता में कोई सम्बन्ध है? वह पोथी अगर न भी मिले तो गोपाल को तुम कैद से छुड़ा सकते हो कि नहीं?

शेर०। मैं इस बारे में ठीक ठीक कुछ कह नहीं सकता। वे एक बड़ी ही गुप्त जगह में बन्द किये गये हैं जो केवल तिलिस्म ही नहीं है बल्कि मुन्दर ने खुद भी उनकी हिफाजत का बहुत बड़ा बन्दोबस्त कर रक्खा है और फिर यह भी है कि मैं चेष्टा करने पर भी कोई मौका अभी तक पा नहीं सका हूं, मैंने तो बस यह पता लगाया कि यहां कोई जाल तो नहीं है और वे सचमुच गोपालसिंह ही तो हैं और दौड़ा दौड़ा आपके पास चला आया यह पूछने के लिए कि अब उन्हें कैसे छुड़ाया जाय या क्या करना उचित होगा!

देवी०। (चिन्ता के साथ) बिना पूरा पूरा हाल जाने मैं कैसे क्या बताऊं? अच्छा तुम यह कुछ कह सकते हो कि जब मुन्दर का चालचलन खराब है, वह किसी पर आशिक हो गई है—इतना कि उसे लौंडी बना कर महल में रक्खे हुई है, और सब तरह से खुदमुख्तार भी है क्योंकि तिलिस्मी कायदों के मुताबिक तिलिस्म के राजा के न रहने पर उसकी रानी ही तिलिस्म की मालिक होती है तो अब भी उसने गोपाल को जीता क्यों रख छोड़ा है, एक दम से मार ही क्यों न डाला? या अब क्यों नहीं मार डालती जब कि सारी दुनिया उसे मुर्दा समझ कर निश्चिन्त हो गई है?

शेर०। मैं इस बात का भी कोई जवाब नहीं दे सकता, सिवाय इसके कि उनके जिन्दा रहने में मुन्दर अपना कोई स्वार्थ देखती होगी।

देवी०। बेशक यही बात है, और मेरा ख्याल तो यह कहता है कि जरूर किसी तिलिस्मी मामले का भेद जानने के लिए ही वह उसे जिन्दा छोड़े हुए है, जैसे ही वह भेद जान जायगी उसी समय गोपाल को मार डालेगी।

शेर०। बहुत मुमकिन है कि आपका खयाल सही हो।

देवी०। अच्छा तुम यह जानते हो कि वह कौन मर्द है जिसे मुन्दर ने लौंडी का भेष धरा कर महल में रख छोड़ा है?

शेर०। जानता तो नहीं मगर मुझे कुछ कुछ शक है और इसका निश्चय करने के लिए मैं अपने आदमी छोड़ आया हूं, मुझे विश्वास है कि यहां से लौटते ही यह बात ठीक ठीक मुझको मालूम हो जायगी।

देवी०। गोपाल जीता है और मुन्दर की कैद में है यह बात तुमने अभी और किसी के कानों तक पहुंचाई है?

शेर० । किसी को नहीं कही, पर सोच रहा हूं कि इन्द्रदेव को कम से कम यह भेद बता दूं ।

देवी० । (कुछ देर तक गम्भीर चिन्ता में डूबी रहने के बाद) तुम मर्द हो, ऐयार हो, और बाहरी बातों की तुम्हें पूरी पूरी खबर है इस लिए आखिरी फैसला तो मैं तुम्हारे पर छोड़ती हूं, जैसा मुनासिब समझना करना, पर इस समय जो बातें मेरे मन में उठती हैं वे तुम्हें जरूर सुना देना चाहती हूं ।

शेर० । आज्ञा !!

देवी० । मेरी समझ में तो गोपाल को जीते रखने और दुनिया में मरा जाहिर करने में मुन्दर का जरूर कोई बहुत बड़ा स्वार्थ है और जब तक वह पूरा नहीं हो जाता तभी तक गोपाल की जिन्दगी कायम है, अस्तु अब जो कुछ हम लोगों को यानी तुमको करना चाहिए वह यह है कि सबसे पहिले तो गोपाल को किसी ऐसे ढंग से उस कैद से छुड़ा लेना चाहिए कि किसी को कानोंकान खबर न हो और मुन्दर तक भी इस भेद को जानने न पाये, और यह इस तरह पर हो सकता है कि तुम गोपाल की ही सूरत शक्ल का कोई दूसरा आदमी उस जगह रख दो और गोपाल को निकाल लो ।

शेर० । यह जरा मुश्किल......

देवी० । नहीं, बहुत मुश्किल न होगा, यद्यपि इसके लिये कुछ तैयारी आवश्यक होगी और सो यह कि सबसे पहिले तुम जमानिया महल में अपना कोई आदमी ऐसा घुसाओ जो मुन्दर का विश्वासपात्र बन जाय और इसके लिये मैं मैना को तजवीज करती हूं जो होशियार चालाक और विश्वासी है तथा हम लोगों का सब इरादा भी जानती है ?

मैना० । जी ..मगर...मैं तो...

देवी० । (हाथ के इशारे से रोक कर) यह मैना तो मुन्दर के पास रह कर यह जानने की कोशिश करे कि उसने किस लिए गोपाल को जिन्दा रख छोड़ा है और बन पड़े तो यह भी पता लगाये कि वह मर्द कौन है जिस पर मुन्दर आशिक है,और तुम गोपाल को उस कैद से छुड़ा कर मेरे पास ले आओ । मैं उसे तिलिस्म तोड़ने की...(रुक कर) हां, तुमने एक दफे मुझसे कहा था कि कोई तिलिस्मी किताब भूतनाथ ने वीरेन्द्रसिंह के महल से चुराई थी जो इन्द्रदेव को मिली और उन्होंने तुमको दे दिया है ?

शेर० । जी हां, लोगों में वह 'रिक्तगन्थ' के नाम से मशहूर है । भूतनाथ ने

उसे तिलिस्म की सैर करने और बन पड़े तो कुछ दौलत हथियाने के इरादे से चुराया था, पर उससे गौहर रण्डी ने मार दिया और वहां से घूमती फिरती वह इन्द्रदेव के पास पहुंची, जिन्होंने उसे दलीपशाह के सुपुर्द इस इरादे से कर दिया कि वह पुनः बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचा दी जावे, पर दलीपशाह यह काम पूरा न कर सके । दारोगा के डर से उन्होंने वह किताब मुझे दे दी और इसके बाद हो व उसके चंगुल में फंस गये । मैं इसलिए उसे अभी तक अपने पास रक्खे हुए था कि शायद उसकी मदद से तिलिस्म के कैदियों को निकालने में कुछ सुभीता हो मगर प्रभाकरसिंह अपने हिस्से वाला समूचा तिलिस्म तोड़ चुके, अब सोचता हूं कि उसे राजा बीरेन्द्रसिंह के महल में पहुंचा दूं ।

देवी० । (सिर हिला कर) नहीं, अब उसकी जरूरत पड़ेगी । वह पोथी कहां है ?

शेर० । इस समय तो वह मौजूद नहीं है पर बहुत हिफाजत की जगह पर है और आप कहें तो मंगवा भी सकता हूं ।

देवी० । खैर अबकी जाना तो लेते आना । मुझे ऐसा भास होता है कि तिलिस्म का दूसरा हिस्सा अब टूटा चाहता है और यह सब उसी के बाधनूं बंध रहे हैं । मुझे अपने गुरु महाराज के न मिलने का बहुत अफसोस था पर अब कुछ आशा पुनः बंधने लगी है, खैर अगर मेरा ख्याल सही है तो मुन्दर गोपाल को इसलिए छोड़े हुए है कि उसके हाथ वह तिलिस्मी किताब अभी तक नहीं लगी है । सम्भव है कि गोपाल अगर स्वतन्त्र हो जाय तो उस किताब पर पुनः कब्जा कर सके जो बाबाजी उसे दिया चाहते थे और जिसे तुम कहते हो कि इन्द्रदेवने अपने एक दोस्त की सहायता से दारोगा के कब्जे से निकाल कर गोपाल को दिया था । अगर मेरा ख्याल सही है और गोपाल उस किताब पर काबू कर सका तो फिर रिक्तगन्थ और उस किताब की मदद से तिलिस्म तोड़नेमें अवश्य समर्थ होगा इसमें कोई सन्देह नहीं ।

शेर० । बहुत मुमकिन है कि आपका ख्याल सही हो और वह किताब मुन्दर के हाथ अभी तक न लगी हो । खैर राजा गोपालसिंह से पुनः मुलाकात कर मैं इस बात का पक्का पता लगा लूंगा, मगर उनको छुड़ा कर उनकी जगह कोई दूसरा आदमी रख देना मुझे कठिन जान पड़ता है, क्योंकि वे जहां है वहां से उनको छुड़ाना असम्भव है, जब तक कि आप इसकी कोई तर्कीब न निकालें ।

देवी० । तुम उस जगह का बयान मुझसे करो तो मैं गौर करूंगी, मगर मेरी समझ में तो उसके जीते रहने की खबर तुम्हें और किसी को यहां तक कि अपने दोस्त इन्द्रदेव को भी नहीं देनी चाहिए, क्योंकि अगर एक दफे भी यह बात फैल

गई कि वह जीता है तो उसके दुश्मन—दारोगा और मुन्दर—जरूर चौकन्ने हो जायंगे और तब उसके जान की खैर न रहेगी; अस्तु फिलहाल दोस्त दुश्मन सभी ही को अंधेरे में रखना मुनासिब है, हां अगर तुम उसे छुड़ा सको तो बात दूसरी है, तब तुम उसे सीधे मेरे पास लाना क्योंकि सबसे पहिले मैं उस लड़के से कुछ बातें करना चाहती हूं।

शेर०। मैं ऐसा ही करूंगा, पर उन्हें मुन्दर की कैद से छुड़ाना ही तो...

देवी०। वह मैं अच्छी तरह समझती हूं और साथ ही तुम्हारी होशियारी चालाकी और गम्भीरता की भी थाह पा चुकी हूं इसी से मुझको पूरा विश्वास है कि चाहे जितनी भी बाधा आवे तुम यह काम जरूर कर सकोगे। अवश्य ही मुझसे जो कुछ मदद हो सकेगी मैं करूंगी ही!

शेर०। (देवीरानी के पैर छू कर) मैं इतना ही कह सकता हूं कि अपने भरसक कोशिश करने से बाज न आऊंगा।

देवी०। अच्छा तो अब बताओ कि वह कहां कैद है और उसके छुड़ाने में तुम्हें क्या अंदस दरपेश हुई? सब हाल सुन कर जो कुछ मुझे सूझेगा तुम्हें बताऊंगी इसके बाद तुम मैना को लेकर इसी वक्त गोपाल की फिक्र में रवाना हो जाना, बेचारा लड़का बड़ी तकलीफ में होगा। इधर पास आ जाओ, (मैना से) तू भी पास खिसक आ।

दोनों देवीरानी की पलंगड़ी से सट कर बैठ गए और शेरसिंह धीरे धीरे उनसे कुछ कहने लगे।

शेरसिंह और देवीरानीकी बातें बहुत देर तक चलती रहीं और उनके समाप्त होने पर मैना ने भी उनसे कई तरहकी बातें पूछीं जिनका उन्होंने पूरा पूरा जवाब दिया। जिस समय इन लोगों की बातें समाप्त हुईं उस समय रात बहुत काफी बीत गई थी तथा सब तरफ सन्नाटा छा चुका था। देवीरानी की आज्ञा पाकर [मै]ना उनकी खास सन्दूकड़ी उठा लाई जिसे खोल बूआजी ने उसमें से कोई चीज [नि]काली और उसे शेरसिंह के हवाले किया, इसके बाद कोई चीज मैना को भी [दी] और तब सन्दूकड़ी बन्द कर पलंगड़ी के नीचे रख दी। उनका इरादा समझ [क]र शेरसिंह और मैना वहां से बिदा हुए और वे थकावट की मुद्रा से लेट गईं।

शेरसिंह बाहर निकले और मैना उनके साथ हुई। दोनों में धीरे धीरे बातें [भ]ी होती जाती थीं—

शेर०। कहने को तो बूआजी औरत हैं, मगर मुझे कभी कभी उनकी बुद्धि

पर आश्चर्य होता है। इस समय जो कुछ बातें उन्होंने कहीं और गोपालसिंह के बारे में जो कुछ फैसला किया उस तक साधारण बुद्धि वाला आदमी कदापि पहुंच नहीं सकता।

मैना०। कदापि नहीं, और मुझे विश्वास है कि आप उनके बताए ढंग से चलेंगे तो जरूर न केवल राजा गोपालसिंह की जान ही बच जायगी और वे जमानिया के सिंहासन पर बैठेंगे बल्कि तिलिस्म तोड़ कर उसकी दौलत के भी मालिक बनेंगे।

शेर०। बेशक, इसमें कोई शक नहीं, मगर मुझे इधर एक तरद्दुद जरूर होने लगा है।

मैना०। सो क्या?

शेर०। यही बूआजी के बारे में, मुझे शक है कि कहीं हमारे राजा साहब उन पर सफाई का हाथ न फेरें...!

मैना०। और उनका कोई अनिष्ट न करें? ठीक है, यही बात मेरे मन में भी घूमा करती है, बल्कि आपसे मैं यह जिक्र करने ही वाली थी कि मुझे राजा साहब की नीयत इस बारे में कुछ अच्छी नहीं मालूम पड़ती है। आजकल उन्होंने बूआजी के पास अपना आना जाना बहुत बढ़ा दिया है, जब आते हैं घण्टों बैठे रहते हैं और बातें करते हैं भी तो तिलिस्म ही के बारे में। मुझे सन्देह होता है कि वे कोई बात बूआजी से दरियाफ्त करना चाहते हैं जिसे या तो वे जानती नहीं या जानबूझ कर अनजान बन रही हैं और टालमटोल कर जाती हैं। इसका अन्त कभी न कभी बुरा ही होगा क्योंकि हमारे राजा साहब कैसे जिद्दी और कड़े स्वभाव के हैं आप भी जानते हैं।

शेर०। ठीक, मगर उनकी कोई कार्रवाई लगेगी नहीं इसका भी तुम विश्वास रक्खो। वे बूआजी को अच्छी तरह पहिचानते ही नहीं उनसे बहुत ज्यादा डरते भी हैं, यकायक उनके ऊपर हाथ न उठावेंगे, फिर भी आशा करता हूं कि तुम खूब चौकन्नी और सब तरह से होशियार रहा करती होगी।

मैना०। अपने भरसक तो मैं सब तरफ से बहुत ही होशियार रहती आयी हूं, पर अब क्या होगा? बूआजी ने जो नया हुक्म लगा दिया है उससे तो गड़बड़ी हो जायगी ही। जब मैं यहां रहूंगी ही नहीं तब उनकी हिफाजत कौन करेगा?

शेर०। मैं इसका भी कुछ न कुछ बन्दोबस्त करूंगा, तुम चिन्ता न करो, और फिर बूआजी भी खुद बखुद जमाना देखे हुए और सब तरह से होशियार हैं।

मैना० । हां सो तो हुई है, खैर जाने दीजिये, जो होगा देखा जायगा, अब आप यह कह दीजिये कि वह रिक्तगन्थ क्या बला है जिसके बारे में बूआजी ने आपसे कहा ?

शेर० । वह तिलिस्म सम्बन्धी एक पोथी है जिसकी मदद से तिलिस्म तोड़ा या वहां की सैर की जा सकती है। कहा जाता है कि वह किसी के खून से लिखी गयी है, कम से कम रिक्तगन्थ के माने यही हैं कि किसी के खून से लिखी किताब। यह राजा बीरेन्द्रसिंह को चुनारगढ़ का विक्रमी तिलिस्म तोड़ते समय हाथ लगी थी और इसके बारेमें मशहूर यह है कि इसमें किसी बहुत बड़े तिलिस्म का हाल लिखा गया है जिसे बीरेन्द्रसिंह के लड़के तोड़ेंगे।

मैना० । मगर बूआजी तो इससे गोपालसिंह वाला तिलिस्म तोड़वाना चाहती हैं।

शेर० । हो सकता है, कोई बात होगी, या शायद इससे काम में कुछ मदद मिल सकती होगी।

मैना० । इस बारे में बूआजी ने जो कुछ कहा अगर सच है तो बड़े ताज्जुब की बात है !

शेर० । ताज्जुब की और साथ साथ खुशी की भी। रही बात की सचाई, सो इसमें तो कुछ शक हो ही नहीं सकता।

मैना० । शायद उनका ख्याल गलत हो और...

शेर० । ऐसा नहीं हो सकता, पुजारीजी के बाद तिलिस्मी मामलों का जानकार इनसे बढ़ कर आज दुनिया में कोई भी नहीं रहा है। इनकी बात को तुम बस ब्रह्मा की लीक समझो !

मैना० । मगर मुझको ताज्जुब दो बातों का होता है।

शेर० । सो क्या ?

मैना० । एक तो इन्हें औरत होते हुए भी तिलिस्मी मामलों की इतनी जानकारी क्योंकर हुई !

शेर० । और दूसरा ?

मैना० । कि हमारे राजा साहब तिलिस्म की दौलत या वहां के सामान के लिए इतनी छटपट तो करते हैं पर हमारी बूआजी की खुशामद क्यों नहीं करते ? इनकी मदद से तो सहज ही में सब अभिलाषा पूरी कर सकते थे !

शेर० । क्या तुम समझती हो कि खुशामद बूआजी से कोई ऐसा काम करा

सकती है जिसे वे नहीं करना चाहतीं !

मैना० । खुशामद नहीं तो जोर जुल्म जबर्दस्ती !

शेर० । उसका भी कोई असर बूआजी पर न होगा। ऐसे कड़े दिल की ये हैं कि अगर इनके बदन के टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिए जांय तो भी इनसे इनकी मर्जी के खिलाफ कोई काम कराया नहीं जा सकता। मगर खैर इन बातों का सवाल ही नहीं उठता क्योंकि असल बात कुछ और ही है।

मैना० । वह क्या ?

शेर० । रोहतासगढ़ के किले और इलाके ही नहीं बल्कि इस समूची रियासत को तिलिस्म से बहुत बड़ा सरोकार है, मगर बहुत ही पुराने जमाने से एक किंवदन्ती के तौर पर यह बात चली आ रही है कि इन सब तिलिस्मों और उनकी दौलत के मालिक रोहतासगढ़ के राजा लोग नहीं बल्कि उनके नाती यानी लड़कियों के खानदान के होंगे। किसी पुराने जमाने में यहां के दो एक राजाओं ने अपने हाथ पांव फैलाए और तिलिस्मी दौलत पर कब्जा जमाना चाहा, पर हर दफे नतीजा बहुत ही खराब निकला और बहुत बड़ी मुसीबत रियासत पर आ गई, इससे यहां का कोई भी राजा अब भूल कर भी तिलिस्मी मामलों में दखल नहीं देता।

मैना० । मगर तब दिग्विजयसिंह क्यों ऐसा करते हैं ? क्या उन्हें यह बात नहीं मालूम है ?

शेर० । गलती करते हैं, यह बात अच्छी तरह इनको मालूम है और कम से कम एक दफे तो मेरे सामने वृद्ध महाराज ने उनको इसी बात पर बहुत कुछ डांटा फटकारा था और कहा था कि तिलिस्मी दौलत की लालच मत करो, अगर करोगे तो बर्बाद हो जाओगे, वह हमारे लिए शिवनिर्माल्य है।

मैना० । और तिस पर भी वे ऐसा करते हैं !

शेर० । हां, और तुम बिश्वास रक्खो कि अगर वे अपना रास्ता नहीं बदलेंगे तो बर्बाद हो जायेंगे। कई दफे मैं खुद इसके लिए उन्हें समझा चुका हूं पर वे नहीं मानते और आग से खेल रहे हैं।

मैना० । मैंने उड़ती हुई यह खबर भी सुनी है कि वे आपको गिरफ्तार करके कहीं बन्द कर देना चाहते हैं, पर यह खबर कहां तक सही है मैं कह नहीं सकती!

शेर० । मैंने भी ऐसा सुना है और इस तरफ से बहुत होशियार रहता हूं। कई दफे तो मैंने यह सोचा कि यहां का आना जाना एकदम ही बन्द कर दूं मगर

लाचारी जान मारती है।

कहते हुए शेरसिंह ने मैना की एक उंगली दबा दी जिसके जवाब में उसने कस कर चिकोटी काटते हुए पूछा, "मगर मेरी उस पहिली बात का जवाब क्या है? बूआजी को इतना हाल तिलिस्म का कैसे मालूम हुआ? मैंने कई दफे चाहा कि उनसे पूछूं पर हिम्मत न पड़ी।"

शेर०। मैंने अपने गुरु महाराज से इस बारे में जो कुछ सुना वह बता सकता हूं। बात यह थी कि इन बूआजी के दादा अर्थात् हमारे वर्तमान महाराज दिग्विजयसिंह के परदादा का इन पर जब ये बहुत बच्ची थीं, अजहद प्रेम था। एक मिनट के लिए भी वे इनको अपनी आंखों की ओट न करते थे। दिन रात उठते बैठते सोते जागते यहां तक कि राजदर्बार में भी ये हरदम उनके साथ रहती थीं। और तो और, जब वे शिकार पर जाते तब भी इनको अपने साथ रखते थे। ऐसे ही एक मौके पर, जब कि महाराज पूरब की पहाड़ियों में तेंदुओं के शिकार पर गए थे, एकायक सुबह के समय ये जो उस समय बिल्कुल बच्ची थीं लश्कर से कहीं गायब हो गईं। बड़ा हड़कम्प मचा, चारों तरफ सैकड़ों आदमी खोजने लगे, स्वयं महाराज घबड़ा कर इधर उधर इनको पुकारते फिरने लगे, पर इनका कहीं पता न लगा। आखिर महाराज थक हार कर अपने खेमे के बाहर एक चट्टान पर जाकर बैठ गए जिसके बगल ही में एक गार था। उस समय उन्होंने गार के अन्दर किसी बच्चे के हंसने और किसी जानवर के गुर्राने की आवाज सुनी और कुछ आदमियों को ले उस गार में घुसे। थोड़ा आगे बढ़ने पर देखा क्या कि एक गुफा के भीतर ये एक तेंदुए के बच्चे के साथ खेल रही हैं और इनके हाथ में वही सोने वाला उल्लू है जिसका तुम कई दफे जिक्र सुन चुकी हो।

मैना०। सोने वाला उल्लू!

शेर०। हां, महाराज ने अपनी जान से प्यारी पोती को उठा कर कलेजे से लगा लिया और नौकरों ने उस तेंदुए के बच्चे को पकड़ लिया। पूछताछ करने पर इन्होंने बताया कि तेंदुए के बच्चे का बार बार उस गुफा में रोना सुन ये उसको खोजती वहां पहुंच गई थीं और उसी गुफा में इन्हें वह सोने का उल्लू मिला था। सिपाहियों ने जब खोज ढूंढ़ की तो उसी गुफा में और भीतर जाकर उस बच्चे की मां को मुर्दा पड़े पाया और लोगों ने पहिचाना कि दो दिन पहिले शिकार में सख्त घायल होकर वह भागी थी। मालूम होता है अपनी माद में पहुंच कर मर गई थी और बच्चा भूख से व्याकुल हो बाहर निकला था। पर जो बात सबसे

ताज्जुब की थी सो यह कि विशेष छानबीन करने पर वह गुफा तिलिस्मी तहखाने में पहुँचने की एक राह निकली—वही जिसमें तुम एक बार मेरे साथ गई थीं जब दिग्विजयसिंह को भूत बने निकलते देखा था।

मैना०। अच्छा वही गुफा!

शेर०। महाराज ने उस गुफा को साफ करा के रास्ता वगैरह ठीक करा दिया और वह सोने का उल्लू भी जिसका भेद इनके गुरु महाराज ने उन्हें बता दिया था, बहुत हिफाजत से तोशेखाने में रखवा दिया, यह कह कर कि इनके ब्याह में इन्हीं को दिया जायगा। मगर तब से उनकी यह धारणा हो गई कि इनके ऊपर भगवान का कुछ विशेष अनुग्रह है और इन्हें तिलिस्मी मामलों की ज्यादा जानकारी होगी। तभी से वे जब कभी भी तिलिस्म में जाते इनको अपने साथ रखते और तिलिस्म का सब भेद बताते जाते थे और यही सबब है कि तिलिस्म का इतना ज्यादा हाल इन्हें मालूम है।

मैना०। ठीक है, ये सब बातें उड़ती फिरती औरों के मुंह से मैंने सुनी थीं पर अब ठीक आपसे पता लगा। मगर यदि ऐसा ही है तो फिर वह सोने वाला उल्लू इनके पास न रह कर जमानिया की रानी के पास क्योंकर चला गया?

शेर०। इनके ब्याह के समय जो दुर्घटना हुई उसका हाल शायद तुम्हें नहीं मालूम?

मैना०। बहुत थोड़ा, मुझे सिर्फ इतना ही मालूम है कि इनका ब्याह तो हुआ पर ये जिन्दगी भर न तो कभी ससुराल गईं और न अपने पति का ही इन्होंने मुंह देखा। शायद वे साधु होकर कहीं निकल गये।

शेर०। हां कुछ ऐसी ही बात, कम से कम लोगों में मशहूर यही है, पर खैर मतलब की बात यह है कि ये जिन्दगी में एक बार भी ससुराल न गईं और वह सोने का उल्लू इन्हीं के पास रह गया जिसे अन्त में इन्होंने अपनी भतीजी के ब्याह में उसे दहेज में दिया और इस तरह वह जमानिया पहुँचा। अच्छा अब तुम रुक जाओ, वह देखो किले का फाटक नजर आने लगा, अब आगे बढ़ना तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं है।

मैना०। यह क्या, हम लोग तो बातें करते करते फाटक पर आ निकले! तो क्या आप अपने डेरे पर जाकर कुछ देर आराम न करेंगे?

शेर०। जो बातें बूआजी की तुमने सुनीं उसके बाद भी क्या आराम करने का मौका हम लोगों को है? मैं यहां से सीधा चुनारगढ़ जाऊंगा।

मैना० । हां जाना तो चाहिये फिर भी कुछ आराम कर लेते तो अच्छा था, आगे मर्जी आपकी । अच्छा अब मुझे क्या कहते हैं ? आपसे मैं कब कहां मिलूं, या अभी मिलने की जरूरत नहीं ?

शेर० । नहीं बहुत जरूरत है क्योंकि तुम्हें बड़ा ही जरूरी एक काम करना है, अच्छा गौर से सुनो ।

शेरसिंह थोड़ी देर तक मैना को कुछ समझाते रहे, इसके बाद वे किले के बाहर की तरफ चले और मैना जनाने महल की तरफ लौटी ।

दूसरा बयान

आधी रात का समय है और सन्नाटे के आलम में यह सूनसान मैदान भांय भांय कर रहा है ।

गंगाजी यहां से दूर पड़ती हैं फिर भी सब तरफ फैला बालू देखने से जान पड़ता है कि किसी जमाने में जरूर इसी जगह से होकर बहती होंगी । अभी अभी निकले हुए चन्द्रमा की टेढ़ी किरणें यह भी बताती हैं कि जरूर यह कोई श्मशान है और इस कारण स्थान का डरावनापन और भी भयानक भास होता है, पर वह नौजवान भी गजब के मजबूत कलेजे का जान पड़ता है जो किसी बात का कोईभी खयाल किये बिना अकेलाही काला लबादा ओढ़े इधरसे उधरटहल रहा है।

टहलते टहलते कभी कभी रुक कर यह एक बार दूर बहती हुई गंगाजी की तरफ देखता है और दूसरी दफे उस छोटे जंगल की तरफ जो यहां से कुछ ही दूर पर है और जिसमें से कभी कभी किसी दरिन्दे जानवर की आहट मिल जाती है। रह रह कर इसकी निगाह उस छोटे चबूतरे की तरफ भी घूम जाती है जिसके ऊपर एक शिवलिंग स्थापित है और यह आप ही आप कुछ बुदबुदा कर पुनः टहलना आरम्भ कर देता है ।

आखिर एक दफे घबड़ा कर इसने आसमान पर ऊंचे होते हुए चन्द्रमा की तरफ देखा और तब कुछ अस्पष्ट स्वर में कहा, "अभी तक नहीं आई, मालूम होता है आज भी मुझे धोखा देगी, अगर ऐसा हुआ तो फिर मैं भी मुरौवत या लिहाज का नाम न लूंगा और उसका पूरा भण्डाफोड़ कर दूंगा, वह भी क्या कहेगी........।"

कहते कहते नौजवान यकायक रुक गया । उस चबूतरे की तरफ से किसी प्रकार की आहट आई थी और जब इस नौजवान ने घूम कर उधर देखा तो अपने

ही जैसा काला लबादा ओढ़े किसी को उसके पीछे से निकलकर सामने आते पाया। यह झपट कर उसकी तरफ बढ़ा और पास पहुंच कर चाहता ही था कि दोनों हाथ उसके कंधों पर रक्खे और चन्द्रमा की तरफ मुंह घुमा कर देखे कि इस नये आने वाले ने पीछे हट कर कहा, "नहीं नहीं, बेवकूफी मत करो, कोई देख लेगा तो गजब हो जायगा, जो कुछ कहना है जल्दी कहो और मुझे तुरन्त लौट जाने दो !"

फिर भी नौजवान की बेसब्री ने न माना । उसने बोलने वाले की ठुड्डी पकड़ ली और चेहरा चन्द्रमा की तरफ घुमा ही दिया जिससे हमने भी देख कर पहिचान लिया कि यह मुन्दर है। नजदीक ही था कि नौजवान कुछ और हाथ पांव बढ़ाता पर मुन्दर बिगड़ कर बोली, "मैंने क्या कहा तुमने सुना कि नहीं ? कोई मुझे यहां देख लेगा तो गजब हो जायगा ! तुम जानते नहीं कि आज कल मुझ पर कैसा सख्त पहरा रहता है,जो कुछ कहनाहो जल्द कहो और मुझको जाने दो।"

मगर नौजवान ने मुन्दर के दोनों हाथ पकड़ लिए और कहा, "सो तो न होगा । बीसों दफे वादाखिलाफी करने के बाद तो आज तुम मिली हो और आते ही रौब जमाना शुरू कर दिया ! पहिले तो यह बात न थी तुममें ! मालूम होता है रानी बन कर तुम और सब बातों के साथ साथ इस बात को भी भूल गई हो मुन्दर कि मैं....."

मुन्दर ने घबरा कर नौजवान के होठों पर उंगली रख दी और कहा, "बस खबरदार, मेरा नाम जबान से मत निकालना । मैं बार बार कहती हूं फिर भी तुम नहीं समझते, कोई देख सुन लेगा तो क्या होगा? इसे तुम नहीं जान सकते पर मैं खूब जानती हूं ।"

नौजवान कुछ चिढ़ कर बोला,"जो होगा सो देखा जायगा । तुम बार बार यही सब कह कह कर मुझे डराओ मत और समझ लो कि बिना पूरी तरह अपने दिल की बातें कहे आज मैं तुमको जाने देने वाला नहीं ! इस सूनसान भयानक मैदान में कौन कम्बख्त हमारी बातें सुनने वाला इस समय खड़ा है जो हमें देखे और पहिचानेगा, और अगर ऐसा ही डर है तो चलो उस तरफ पेड़ों की आड़ में हो जाएँ, पर यह समझ रक्खो कि मैं बिना पूरी तरह से अपने दिल का गुबार निकाले अब तुम्हें जाने देने वाला नहीं ।"

मुन्दर० । मैं जानती थी कि मुलाकात होते ही तुम इसी तरह की बेवकूफियां करना शुरू कर दोगे और इसी से मैं आती न थी । अरे मर्द आदमी, अब भी क्या तुम मुझे वह पहिले वाली ही समझ रहे हो ? जमाना बदल गया, वक्त बदल

गया. अब मैं जमानिया की रानी हूं जिसके एक इशारे पर....

नौजवान०। (हंस कर) हजारों गर्दनें कट सकती हैं! ठीक है, जरूर जमाना बदल गया और साथ साथ तुम भी बदल गई। अब तुम्हें मेरी याद भला क्यों रहेगी और वह वक्त भी क्यों याद आयेगा जब कि हम और तुम जंगलों में हाथ में हाथ बांधे घूमते......

मुन्दर०। समझ गई कि मैं चाहे जो भी कहूं तुम्हारी अक्ल में न आवेगा कि इस वक्त मेरी कैसी नाजुक स्थिति है। किस तरह पचासों लौंडी गुलामों और पहरेदारों की निगाहें बचा कर मैं यहाँ तक आई इसे तुम भला क्या जान सकते हो, और यदि एक बार भी मेरी किसी सहेली ने मेरा पलंग खाली देख लिया तो क्या हड़कम मचेगा इसे भी तुम क्या समझ सकते हो? खैर मुझ पर जो बीतेगा मैं झेल लूंगी, तुम कहो किस लिए तुमने मुझको बुलाया है?

नौज०। अगर सच पूछो तो सिर्फ एक बार तुम्हारी सूरत देखने के लिए, जिसे देखे बिना मैं पागल होता जा रहा था।

मुन्दर०। जरूर, बल्कि हो गये हो! अच्छा देख लिया न, अब जाने दो।

नौज०। और एक छोटी सी बात कहने के लिए।

मुन्दर०। उसे भी कह डालो!

नौजवान मुन्दर की तरफ झुका और उसके कान के पास मुंह ले जाकर उसने धीरे से कुछ कहा। न जाने वह कौन सी बात थी कि जिसके सुनते ही मुन्दर का मुंह सूख गया और वह घबड़ा कर बोली, "हैं, यह तुम क्या कह रहे हो?"

नौज०। मैं बहुत ठीक कहता हूं, तुम इस बात पर जरा भी शक मत करो।

मुन्दर०। (सिर हिला कर) नहीं नहीं, यह असम्भव है, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

नौज०। ऐसा! तब तो मुझे कोई सबूत भी देना पड़ेगा। अच्छा इसे देखो और पहिचानो।

नौजवान ने अपना हाथ कपड़ों के अन्दर डाला और कोई चीज निकाल मुन्दर की हथेली पर रख दी। यह एक अंगूठी थी जिसका कीमती नगीना चन्द्रमा की रोशनी पाकर तड़प उठा, मगर मुन्दर पर इस अंगूठी ने गजब का असर किया। उसके मुंह से 'हाय' की एक आवाज निकली जिसे उसने तुरन्त ही रोका पर फिर सम्हल न सकी और बल खाकर गिरने लगी। उस नौजवान

ने उसे सम्हाला और दोनों हाथों से उसको पकड़ कर कहा, "कहो अब तो तुम्हें विश्वास हुआ? मगर घबड़ाओ नहीं, अगर मेरे कहने में रहो और जैसे मैं बताऊँ वैसे चलो तो अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। मैं सब कुछ सम्भाल लूंगा और तुम्हारे ऊपर जरा सी आंच न आने दूंगा।"

मुन्दर ने बड़ी कठिनता से अपने आंसू रोकते हुए कहा, "इस अंगूठी को देख कर भी मैं कैसे समझूं कि अभी कुछ बिगड़ा नहीं है।" नौजवान बोला, "शान्ति के साथ कहीं बैठो और मेरी पूरी बातें सुनो, तुमको आप ही विश्वास हो जायगा। हाँ अगर इस तरह की जल्दीबाजी मचाओगी और घबराहट दिखाती रहोगी तो जरूर कुछ भी न हो सकेगा।"

मुन्दर ने एक बार गहरी निगाहों से अपने चारो तरफ देखा। चन्द्रमा ऊँचे उठ आया था पर उसकी साफ रोशनी भी इस सुनसान रेतीले मैदान में किसी आदमी की सूरत दिखा न रही थी। चारो तरफ गहरा सन्नाटा छाया हुआ था और पास का जंगल भांय भांय कर रहा था। उसने एक लम्बी सांस खींच कर कहा, "अच्छा चलो उधर पेड़ों की आड़ में हो जाएँ। मगर जो कुछ तुम्हें कहना है जल्दी कहो, देरी होने से बहुत भारी आफत आ सकती है बल्कि ताज्जुब नहीं कि पचासों आदमी मुझको खोजते हुए इसी जगह आ पहुंचें, क्योंकि आने की जल्दी में मैं अपने पीछे सब दर्वाजे खुले छोड़ती आई हूं।"

नौजवान ने कुछ जवाब न दे मुन्दर की कमर में हाथ डाल दिया और सहारा देता हुआ उस तरफ ले चला जिधर पेड़ों की अंधियारी नजर आ रही थी।

इन दोनों के जाते ही उस चबूतरे के अन्दर से कुछ खटके की सी आवाज आई और उसकी बगली दीवार में एक छोटा रास्ता दिखाई पड़ने लगा जिसके भीतर से गर्दन निकाल कर दो आदमियों ने बाहर की तरफ देखा। चन्द्रमा दूसरी तरफ होने के कारण जिधर ये दोनों थे उधर अंधेरा था और सहज ही में किसी की निगाह इन पर या उस रास्ते पर पड़ न सकती थी जिसे इन्होंने खोला था, दूसरे ये लोग काले कपड़ों से अपने को ढांके हुए भी थे।

जब मुन्दर और वह नौजवान पेड़ों के पास पहुंच उनकी आड़ में गायब हो गये, इन दोनों नये आने वालों में से एक ने दूसरे की तरफ देख कर कहा, "कहिये अब तो आपको विश्वास हो गया न कि जो कुछ मैंने कहा था वह बिल्कुल सही था?"

दूसरे ने जवाब दिया, "बेशक, अब तो मानना ही पड़ा। मुन्दर शुरू से ही

मनचली थी और मेरी गलती थी जो मैंने उस पर विश्वास किया। पर अब यह तो बताओ कि यह नौजवान कौन है ? मुझे इसकी आवाज कुछ पहिचानी हुई सी तो जरूर जान पड़ती है मगर ठीक ठीक समझ नहीं पा रहा हूं।"

पहिले ने जवाब दिया, "इसकी बातें सुन के भी आप इसे पहिचान न सके ? यह वही श्रीविलास है, चंचलदास का भतीजा।" दूसरे ने यह सुनते ही चमक कर कहा, "ओह अब मैं पहिचान गया, बेशक वही है, पर इसने अगर मुन्दर से पुन: लागसांट शुरू कर दी तो बड़ी मुश्किल हो जायगी और मेरी कार्रवाइयों में बहुत बड़ी बाधा पहुंचेगी।"

पहिला०। (हँस कर) अब इसे तो आप ही जानिये।

दूसरा०। हां मैं ठीक जानता हूं, और तुमने बहुत अच्छा किया जो समय रहते मुझे होशियार कर दिया। मगर अब तुम्हें एक दूसरे काम के लिए भी तैयार हो जाना चाहिए।

पहिला०। कहिये।

दोनों आदमी आपुस में धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे। रंग ढंग से मालूम होता था कि वह दूसरा आदमी पहिले से कोई ऐसा काम करने के लिये कह रहा है जिससे पहिला इन्कार करता है, पर अन्त में इनकी बातें समाप्त हुईं और पहिले ने दूसरे से कहा, "खैर जब आपका ऐसा ही हुक्म है तो लाचारी है, जो आप कहें वह मुझे करना ही होगा, मगर इस काम का नतीजा आप समझ लीजिए, भले बुरे की जिम्मेदारी आपकी होगी मेरा काम केवल आपका हुक्म बजा लाना होगा !"

दूसरे ने कहा, "हाँ हाँ, वह तो मैं मंजूर ही करता हूं और इसीलिए तो इस काम का इनाम भी तुम्हें पहिले ही दे दिया चाहता हूं।" उसने अपने जेब में हाथ डाला और कोई चीज निकाल कर पहिले आदमी के हाथ पर रख दी जिसने एक दफे उस चीज को ललचौंही निगाहों से देखा और तब फौरन ही अपने कपड़ों के अन्दर छिपाते हुए कहा, "खैर; तो यही अगर आपका आखिरी हुक्म है तो मैं कहूंगा कि आप इसी वक्त मुझे इस काम पर जाने दीजिये। यह रात का वक्त और सन्नाटे का आलम मेरे काम में मदद देगा, फिर न जाने कब मौका मिले।"

पहिले ने कहा, "ठीक है, तुम अभी जा सकते हो।" दोनों में कुछ बातें हुईं, इसके बाद वह पहिला आदमी उस छोटे रास्ते के बाहर होकर दबता और आड़ देता हुआ एक तरफ को निकल गया और दूसरे ने चबूतरे के अन्दर होकर

वह रास्ता पुन: बन्द कर लिया। चारो तरफ फिर सन्नाटा छा गया।

थोड़ी देर के बाद मुन्दर और वह नौजवान हाथ में हाथ मिलाये जंगल की तरफ से आते नजर आये। इस समय मुन्दर की अवस्था बदली हुई थी और वह प्रसन्न नजर आती थी। चबूतरे के पास पहुंच दोनों रुके और मुन्दर ने नौजवान से कहा, "अच्छा अब तुम जाओ, अधिक देर करना मेरे लिए घातक होगा।" नौजवान बोला, "हां मैं जाता हूं, मगर तुम एक बार फिर कह दो कि जो कुछ मैंने कहा वह तुम्हें मंजूर है। मुझसे तुमको बराबर ही मिलते जुलते रहना पड़ेगा और इस बात को बिल्कुल भूल जाना पड़ेगा कि तुम अब रानी हो गई हो।" मुन्दर ने जवाब दिया, "हाँ मैं मंजूर करती हूं, मगर तुमको भी अपना वादा सब तरह से पूरा करना पड़ेगा।" नौजवान ने कलेजे पर हाथ रख कर कहा, "मैं कसम खाकर कहता हूं कि जो कुछ कहा है उसे पूरा करूंगा और जैसे बनेगा वैसे हफ्ते भर के अन्दर ही सब सामान लाकर तुम्हारे सामने रख दूंगा।" मुन्दर ने कहा, "तब मुझे भी तुम हमेशा सब तरहसे तैयार पाओगे, अच्छा देर मत करो जाओ।"

जरा देर बाद वह नौजवान घूम कर जंगल की तरफ रवाना हो गया। देखते देखते पेड़ों की आड़ ने उसे छिपा लिया।

मुन्दर कुछ देर तक उसी जगह खड़ी जाते हुए उस नौजवान को देखती रही। जब वह पेड़ों की आड़ में हो गया तो वह घूमी और यह कहती हुई चबूतरे के पीछे की तरफ चली--"यह बहुत बुरी बला पीछे लग गई ! पर लाचारी है, इससे बिगाड़ कर लेने से भी तो काम नहीं चल सकता।"

हम ऊपर कह आये हैं कि इस चबूतरे पर एक शिवलिंग बना हुआ था। मुन्दर ने ऊपर को हाथ कर इस शिवलिंग के बगल में बने हुए नन्दी के सींघों को पकड़ कर कुछ किया और इसके साथ ही चबूतरे के बगल का एक पत्थर हट कर वहां रास्ता नजर आने लगा। मुन्दर इस रास्ते में उतर जाना चाहती ही थी कि यकायक चमक कर रुक गई। पीछे जंगल की तरफ से उसे एक चीख की आवाज आती सुनाई दी जिसने उसे चौंका दिया और वह घूम कर उधर ही को देखने लगी। पुन: एक चीख की आवाज आई और साथ ही 'हाय मार डाला' के शब्द सुन पड़े। इसके बाद ही एक धम्माके की आवाज भी आई।

मुन्दर कांप गई। उसके मुंह से निकला, "हैं, यह तो उसी श्री की आवाज है !" एक क्षण के लिए उसके मन में आया कि चबूतरे के अन्दर घुस जाय और रास्ता बन्द कर ले पर फिर उसके दिल ने न माना। वह उसी जगह खड़ी होकर

गौर करने लगी कि कोई और आहट सुनाई देती है या नहीं। एक दफे पत्तों के चरमराने की आवाज आई मानों कोई तेजी के साथ भागा जा रहा हो, पर इसके बाद फिर कोई आहट सुनाई न पड़ी।

आखिर मुन्दर से न रहा गया। यद्यपि उसका दिल धड़क रहा था और बुद्धि उधर जाने से मना करती थी फिर भी वह दबे पांव उस तरफ बढ़ी जिधर से चीख की आवाज आई थी, या जिधर उससे बिदा हो वह नौजवान गया था। शीघ्र ही उसने बीच का फासला ते किया और जंगल के अन्दर घुसी। दस ही बीस कदम गई होगी कि सामने जमीन पर कोई चीज पड़ी देखी और वह एक हलकी चीख मार कर उसकी तरफ झपटी। वही नौजवान जो अभी उससे बिदा हुआ था खून में लथपथ जमीन पर पड़ा हुआ था। मुन्दर धड़कते कलेजे से उसके ऊपर झुकी और पहिली ही निगाह में जान गई कि चोट करारी लगी है। नौजवान का एक हाथ जमीन पर फैला हुआ था और दूसरा उस खंजर पर था जो उसकी छाती में घुसा हुआ था, उसकी आंखें बन्द थीं और चेहरा पीला पड़ गया था। वह इस तरह गाफिल पड़ा था कि मुन्दर को विश्वास हो गया कि दम तोड़ चुका या तोड़ना ही चाहता है।

मुन्दर की आंखों से बरबस निकल पड़ने वाले आंसुओं की कई बूंदें नौजवान के चेहरे पर गिर पड़ीं, उसकी इच्छा हुई कि अच्छी तरह जांच करे कि इसके बचने की कोई उम्मीद है या नहीं मगर उसके दिल ने कह दिया कि यह अब मनुष्य की कोशिश के बाहर चला गया। उसे अपनी नाजुक हालत का भी खयाल आया और उसने एक लम्बी सांस ली, एक बार अपने चारो तरफ देखा, तब उठ खड़ी हुई और दौड़ती हुई उसी चबूतरे के पास पहुंच उस रास्ते के अन्दर घुस गई जो उसने पैदा किया था। उसके अन्दर जाते ही एक खटके की आवाज के साथ वह पत्थर जो अलग हुआ था अपनी जगह पर बैठ गया और वहां पहिले की तरह सन्नाटा छा गया।

मगर यह हालत बहुत थोड़ी देर तक रही इसके बाद ही जंगल में से सूखे पत्तों की चरमराहट की आवाज आने लगी और कुछ ही देर बाद दो नकाबपोश उसी जगह आ पहुंचे इनमें से एक तो लम्बे कद का था और दूसरा नाटा। इनकी घूमती फिरती और चंचल निगाहें कह रही थीं कि ये दोनों किसी को खोज रहे हैं। आखिर इनमें से एक की नजर उस लाश पर पड़ ही गई और वह बोल उठा, "बेशक वह कुछ करके भागा था, यह देखो!" दोनों तेजी के साथ उस

नौजवान की लाश के पास पहुंचे और उसकी बगल में बैठ कर जांच करने लगे। एक के मुंह से निकला, "अरे, यह तो श्रीविलास है!" दूसरे ने कहा, "चोट कारी लगी है मगर अभी मरा नहीं है, दम है।"

लम्बे कद का आदमी देर तक देख भाल करता रहा। नब्ज देखी, सांस पर गौर किया, पलकें उलट कर पुतलियों की हालत पर ध्यान दिया, कपड़े हटा कर जख्म की कैफियत देखा, और सबके अन्त में अपनी बगल से लटकते एक झोले में से कोई दवा की शीशी निकाल उसकी कुछ बूंदें जबर्दस्ती मुंह खोल जख्मी की जुबान पर टपकाई। थोड़ी देर बाद पुनः नब्ज की हालत देखी और कहा, "मुझे तो यकीन है कि ठीक तरह से इलाज किया जाय तो यह बच सकता है।" दूसरे ने कहा, "इसे किसी आराम की जगह पहुंचाना चाहिए, यहां इस बियाबान में तो यह किसी तरह जीता नहीं बच सकता।" पहिला बोला, "परन्तु यहां से इसे ले चलना भी तो मुश्किल है जहां कोसों तक किसी आबादी का नाम निशान नहीं।" दूसरे ने जवाब दिया, "आपने एक डोंगी का प्रबन्ध करने को कहा था, हम लोगों को यद्यपि देर तो बहुत हो गई मगर मुझे विश्वास है कि वह अभी तक वहां होगी, कहिये तो इशारा करूं?" दूसरा बोला, "अगर मिल जाय तो बेशक कुछ काम चल सकता है! मगर इसे देर तक यहां रखना मुनासिब नहीं। इसका दुश्मन जो कोई भी वह रहा हो, हम लोगों को देख चुका है और जरूर होशियार हो गया होगा।"

नाटे कद का आदमी उठ खड़ा हुआ और जंगल के बाहर की तरफ कुछ कदम बढ़ कर उसने कपड़ों से एक सीटी निकाल कर जोर से बजाई। कुछ देर तक कोई जवाब न मिला, मगर इसके बाद बहुत दूर गंगा की तरफ से हलकी सीटी की आवाज सुन पड़ी। इसने दुबारा सीटी बजाई और तब अपने साथी से कहा, "बारे मेरे आदमी अभी तक मौजूद हैं, चलिए इसे गंगाजी तक ले चलें, तब तक वे लोग भी आ जायेंगे।"

दोनों ने मिल कर नौजवान को उठाया और गंगा तट की तरफ ले चले। नदी दूर पड़ती थी और रास्ते भर बालू होने के कारण उस नाटे कद के आदमी को जो कमजोर और दुर्बल जान पड़ता था, भारी बोझ उठाये चलना मुश्किल हो रहा था, फिर भी वे दोनों किसी तरह किनारे तक पहुंच ही गये। उसी समय एक हलकी और तेज जाने वाली डोंगी भी उधर आती हुई नजर आई जिसे चार आदमी खे रहे थे। बात की बात में वह पास आ पहुंची। नाटे आदमी ने कोई

सवाल किया जिसके जवाब में डोंगी पर से 'जी हां मैं ही हूं' सुनाई पड़ा। इसने फिर कहा, "डोंगी किनारे लगाओ और इस जख्मी को उठा कर ले चलो !"

डोंगी किनारे लगी और खेने वाले नीचे उतर आये। जख्मी नौजवान उठा कर डोंगी पर रक्खा गया जिसके पीछे पीछे ये दोनों जो उसे यहां तक लाए थे सवार हुए। खेने वाले भी चढ़ गये और डोंगी ने किनारा छोड़ दिया। कुछ ही देर बाद वह बीच गंगा में जा पहुंची और तब तेजी के साथ बहाव की तरफ जाने लगी।

तीसरा बयान

शाम का वक्त है। जनानिया के खास बाग की रविशों पर मालियों ने अभी अभी झाड़ू देकर छिड़काव किया है और खुशनुमा गुलबूटे और पत्ते पानी से धुल कर अपनी रंग बिरंगी छटा दिखा रहे हैं। फूलों की खुशबू से भरी ठंढी हवा चल रही है और चारो तरफ एक अजीब समा बंधा हुआ है।

तरह तरह की सुन्दर पौशाक और गहने जेवरों से लदी खूबसूरत और मदमाती सखियां इधर उधर घूम फिर कर चुहल और हंसी मजाक कर रही हैं। कोई बड़े बड़े फूलों को तोड़ उनसे गेंदबाजी करती है तो कोई उनसे अपना शृंगार ही करने की धुन में है। हंसी की किलकारियों से नजरबाग गूंज रहा है और मालूम होता है कि स्वर्ग की परियां इस खुशनुमा बाग में उतर कर इसे नन्दनकानन बना देना चाहती हैं।

यह सब कुछ है पर हमारी मायारानी के दिल पर इन बातों और इस समय की बहार का कोई असर नहीं हो रहा है। वह एक दम अकेली सुस्त और उदास अपने दोनों हाथ पीठ के पीछे बांधे और सिर झुकाए न जाने किस गम में डूबी हुई चमेली की टट्टियों के बीच में घूम रही है। उसकी किसी सखी या लौंडी को उसके पास आने की इजाजत नहीं है और उसकी यह हालत देख खुद भी सभों की तबीयत गिरती ही जा रही है।

आखिर उनमें से एक जो सबसे शोख चुलबुली और मदमाती थी रह न सकी। उसने अपनी कई संगी साथिनों को इकट्ठा कर उनसे कुछ सलाह मशविरा किया और तब उनमें से दो बाग के बाहर कहीं चली गईं। कुछ देर बाद जब वे लौटीं तो उनके साथ साथ एक और नयी औरत थी जिसकी पोशाक और सजधज निराले ढंग की थी और साफ बता रही थी कि यह किसी दूसरे प्रान्त की

रहने वाली है। इसके साथ कुछ सामान भी था जिसे वे ही दोनों उठाये हुए थीं जो उसे लेने यहां से गई थीं।

इन्हें आते देखते ही वह मदमाती सखी मायारानी के पास पहुंची और उसका पंजा पकड़ कर बोली, "मेरी रानी, आखिर कुछ तो बताओ कि तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हारी ऐसी हालत तो आज तक कभी हम लोगों ने देखी न थी !" मायारानी ने उसकी तरफ अपनी निगाहें उठाईं और गमगीन हँसी हँस कर बोली, "तुम लोग जाओ हँसी खुशी करो और मुझे छोड़ दो, मैं एक बहुत बड़ी चिन्ता में पड़ गई हूं और मुझे इस समय हँसी मजाक कुछ नहीं सूझ रहा है।"

जवाब में उस सखी ने जिद्द करके कहा, "रानी, तुम्हारे बिना हम लोगों का मन हंसी खुशी और दिल बहलाव में नहीं लग रहा है। हम लोग जानते हैं कि तुम पर एक भारी राज्य का बोझ है, पर चिन्ता के भार से मन को गमगीन बना लेने से तो कोई फायदा न होगा। थोड़ी देर के लिए अपने मन को फिक्र और तरद्दुद से दूर कर दो, देखोगी कि अपने आप ही कोई रास्ता ऐसा सूझ जायगा कि चिन्ता दूर भाग जायगी।"

इतने ही में, शायद इस पहिली सखी के इशारे पर, एक दूसरी सहेली इनके पास पहुंच कर बोली, "मेरी रानी, देखो वह तमाशा करने वाली आ गई जिसे तुमने इस वक्त के लिए बुलाया था। हम लोगों ने सुना है कि वह बहुत तरह के खेल दिखा सकती है और जादू भी जानती है।" मायारानी बोली, "जाओ तुम लोग उसका तमाशा देखो।" पर दोनों सखियां जिद्द करके बोलीं, "नहीं, तुम न चलोगी तो हम लोग कोई उसका तमाशा न देखेंगी। चलो, अच्छा थोड़ी ही देर बैठना !"

आखिर मायारानी की सखियां जिद्द करके उसे उस तरफ ले ही गईं जिधर वह नई आई हुई औरत अपना साज समाज फैलाये बैठी हुई थी। मायारानी को देखते ही उसने खड़े होकर अदब से सलाम किया, मायारानी एक कुर्सी पर बैठ गई और सब सखियां तथा लौंडियां उसे घेर कर खड़ी हो गईं।

तरह तरह के ताश और हाथ की सफाई के खेल तथा और कई तरह के जादूगरी के तमाशे दिखा कर वह औरत कुछ देर तक इन सभों का मन बहलाव करती रही, इसके बाद उसने अदब के साथ मायारानी से कहा, "सरकार, मैं दो खेल और जानती हूं ! तीर का निशाना अच्छा लगा सकती हूं, और जादू के जोर से लोगों के मन की बात बता सकती हूं।"

मायारानी ने तीर का निशाना देखने की इच्छा प्रकट की और उस औरत ने अपने सामानों में से तीर कमान निकाला। इसमें शक नहीं कि वह निशाना लगाने के काम में बहुत होशियार थी और उसकी निशानेबाजी में सफाई थी। धागे से लटकते और इधर उधर पेंगें खाते हुए नीबुओं को तीर से काट देना, आंखें बन्द करके निशाना लगाना, शीशे में परछाईं देख कर निशाना लगाना, बहुत ऊंचे खड़े होकर टब के पानी पर तैरते हुए नीबू को तीर से उछाल कर ऊपर ले आना इत्यादि तरह तरह के कितने ही खेल देर तक वह दिखाती रही।

मायारानी उसके तीर चलाने के करतब देखती जाती थी और मन ही मन गम्भीर भाव से कुछ सोचती भी जाती थी। आखिरी खेल दिखा कर जिस समय उस औरत ने तीर कमान रख दिया, मायारानी की सखियां बोल उठीं, "अच्छा अब वह खेल दिखाओ जिसमें लोगों के मन की बातें तुम बताती हो।" पर मायारानी उसी समय हाथ के इशारे से अपनी सखियों को रोक कर बोली, "अच्छा तुम्हारे तीर दूर तक भी जा सकते हैं? और दूर का निशाना भी ठीक लगेगा?"

उस औरत ने अदब से जवाब दिया, "सरकार, आखिर औरत का चोला है, बहुत जोर इन हाथों में नहीं है, फिर भी देखिए।"

सचमुच इस समय उस औरत ने गजब की फुर्ती और सफाई दिखाई। किस समय उसने रक्खे हुए तीर और कमान को उठाया, कब रोद को खींचा और कब निशाना साधा इन बातों को बहुत सी सखियां तो लक्ष्य भी न कर पाईं और दूर के पेड़ की ऊंची डाली से अकेला लटकता हुआ एक आम टहनी से अलग होकर नीचे लुढ़कता हुआ मायारानी के पैरों के पास आ गया। कई सखियों के मुंह से बरबस निकल पड़ा—"शाबाश!" पर मायारानी ने कुछ न कह अपने महल के ऊंचे कंगूरे की तरफ उंगली उठाई। सभों ने उस तरफ देखा। बहुत ऊंची निगोल के मुतक्के पर बैठी हुई एक छोटी चिड़िया चोंचसे अपने पंख खुजला रही थी। उस औरत के हाथ का तीर कमान उधर ही को घूमा और साथ ही वह चिड़िया लुण्ड मुण्ड पंख फटफटाती हुई नीचे फर्श पर गिरी और ठंढी हो गई।

और लोग चाहे इस बात को लक्ष्य न कर सके हों पर मायारानी की आंखों से एक क्षण के लिए एक विचित्र तरह की चमक निकली और उसने जोर की सांस खींची, साथ ही बोल उठी, "क्या तू मेरी नौकरी करेगी? तुझे मुंहमांगी तनख्वाह मिलेगी।" उस औरत ने अदब से छाती पर हाथ बांध कर जवाब दिया, "मैं तो चाहती थी कि किसी दर्बार की छत्रछाया में हो जाऊं जिसमें ईजत के

साथ जिन्दगी गुजर जाय, जगह जगह की धूल फांकनी न पड़े, मगर......"

कड़ी निगाह उस पर डालती हुई मुन्दर बोली, "मगर क्या?"

औरत ने जवाब दिया, "सरकार मेरी एक बुढ़िया नानी भी है, बेचारी आंखों से एकदम लाचार हो गई है। उसकी परवरिश मुझे ही करनी पड़ती है। मेरे बिना उसका एक दिन भी नहीं चल सकता। उसे अपने साथ रखने की इजाजत मिलनी चाहिए!"

मायारानी ने लापरवाही से गर्दन हिला दी, इसके बाद अपनी एक लौंडी की तरफ देख कर बोली, "इसके टिकने का इन्तजाम कर दे, रात को यह मेरे महल में ही सोया करेगी।" इतना कहते ही वह उठ खड़ी हुई और तब तेजी के साथ अपने कमरे की तरफ चल पड़ी। उसका रंग ढंग देख कर किसी को उससे कुछ कहने या पूछने का ताब न हुआ और उसकी सब सखी सहेलियों को वहीं रुक जाना पड़ा।

* * *

आधी रात का समय है, जमानिया के खास बाग और महल में सब तरफ एकदम सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं से किसी तरह की आहट आती सुनाई नहीं पड़ रही है। जहां कहीं जो भी हो, सोए हुए हैं और कोई जागता हुआ हो भी तो इस समय की गुलाबी सर्दी किसी को अपनी चादर के बाहर मुंह निकालने नहीं देती है।

ऐसे समय में अचानक मायारानी (मुन्दर) के सोने वाले कमरे का दर्वाजा खुला और कोई वहां खड़ा नजर आया जो वास्तव में स्वयं मुन्दर ही थी। बाहर के दालान में पहरा देने वाली दो सिपाही औरतें उसे देख उसके सामने हाजिर हुईं जिनसे उसने धीमी जबान से कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों 'जो हुक्म' कह दालान से बाहर न जाने किधर चली गईं। मुन्दर कुछ देर तक उसी जगह खड़ी आहट लेती रही, जब उसे विश्वास हो गया कि अब वहां एकदम सन्नाटा हो गया और कहीं कोई उसके कामों पर नजर डालने वाला नहीं है तो वह आगे बढ़ी और उस लम्बे दालान को पार कर उसके बिल्कुल अन्त में बनी हुई एक छोटी कोठरी के दर्वाजे पर पहुंच उसने हाथ से थपकी मारी। मालूम होता है कि कोठरी के भीतर जो कोई भी हो इस वक्त जाग रहा था। (शायद उसे मुन्दर का इरादा मालूम हो गया हो) क्योंकि फौरन ही दरवाजा खुल गया और किसी की सूरत नजर आई। मुन्दर ने गहरी निगाहों से देखा, वही औरत जिसने अपने तीर

के करतब दिखा कर उसे मोहित किया था इस समय उसके सामने थी। उसने अदब से सलाम किया और हाथ बांध कर पूछा, "हुक्म !" मुन्दर ने धीरे से कहा, "अपना तीर कमान ले ले और मेरे साथ आ।" उसने जवाब दिया; "बन्दी तैयार है हुजूर, पर तीर कमान तो डेरे पर ही छोड़ आई हूं, अगर मुझे मालूम होता कि उनकी जरूरत पड़ेगी तो उन्हें भी महल में लिए आती।" मुन्दर ने झुंझला कर हाथ पर मुक्का मारा और कहा, "ओफ, यह क्या किया है तूने !" उसने जवाब दिया, 'हुक्म हो तो जाकर ले आऊं ?' मुन्दर बोली, "नहीं, बाग भर में सिपाही और पहरेदार फैले होंगे जो तेरे आने जाने में रोक टोक करेंगे। अच्छा मैं तुझे अपना तीर कमान दूंगी, तू चल मेरे साथ।" सुन कर वह बहुत मुलायमियत से बोली, "लौंडी तैयार है, लेकिन अगर कोई महीन निशानेकी बात होगी तो मैं अपने ही कमान और तीरों पर भरोसा कर सकूंगी।" मायारानी कुछ देर तक इस बात पर गौर करती रही, तब बोली, "अच्छा तू कोशिश कर देखियो, काम न होगा तो कल अपने ही तीर कमान से काम लीजियो। आज से अपना सब सामान अपने साथ ही रक्खा करना।" "जो हुक्म" कह वह औरत एक क्षण के लिए कोठरी के अन्दर गई और तब फौरन ही बाहर आ मायारानी के साथ हुई जो इतना कहते ही पलट पड़ी थी और दालान के दूसरे सिरे की तरफ जा रही थी।

आगे आगे मायारानी और उसके पीछे वह औरत जिसने अपना नाम बिन्दो बताया था वहां से चल पड़ी।

कितने ही दालान और कमरे पार करती हुई मायारानी बिन्दो को लिए हुए महल के भीतरी हिस्से में पहुंची और वहां एक कोठरी के दर्वाजे पर पहुंच कर रुकी। मोटी सिकड़ी में एक विचित्र तरह का ताला बन्द था जिसे मुन्दर ने किसी तर्कीब से खोला और दर्वाजा ढकेल भीतर घुसी। अन्दर एकदम अंधेरा था पर मुन्दर ने कहीं से सामान निकाल एक मोमबत्ती बाली और तब हाथ ऊंचा करके कहा, "देख इनमें से जो तीर कमान तुझे पसन्द आवे उठा ले।"

बिन्दो ने देखा कि वह समूची कोठरी तरह तरह के हथियारों से भरी हुई थी। जमीन पर, दीवारों के साथ यहां तक कि छत से भी तरह तरह के हथियार लटक रहे थे जो सबके सब बड़े ही कीमती और उम्दा किस्म के थे। एक तरफ बहुत से तीर कमान भी सजाये हुए नजर आ रहे थे जिनमें से जांच पड़ताल कर बिन्दो ने एक कमान और कुछ तीर उठा लिए और उनकी अच्छी तरह देख भाल

करने के बाद कहा, "यही सबसे हलकी कमान है पर फिर भी मेरे लिए बहुत कड़ी है और तीर भी भारी हैं, परन्तु मैं कोशिश करूँगी, चलिए कहां चलना है ?"

मुन्दर कोठरी के बाहर हुई और दर्वाजा बन्द करके दूसरी तरफ को घूमी। एक बार फिर कितने ही कमरों कोठरियों दालानों और आगनों में से बिन्दो को चलना पड़ा और कई बार सीढ़ियां भी चढ़नी और उतरनी पड़ीं, यहां तक कि अब वह एक बिलकुल ही नई और अनजान जगह में जा पहुंची। यद्यपि मायारानी के हाथ में जलती हुई मोमबत्ती थी और बिन्दो रास्ते पर पूरा खयाल रक्खे हुए थी पर इतनी पेचीली और चक्करदार जगहों में से उसे गुजरना पड़ा था कि वह बिल्कुल ही नहीं कह सकती थी कि अब वह महल के किस हिस्से में है, या जहां है वह जगह कई मंजिल की ऊँचाई पर है या किसी तहखानें के अन्दर। मुन्दर एक बन्द आलमारी के सामने खड़ी थी जिसके पल्ले पर हाथ रख वह बिन्दो से बोली, "अब मैं मोमबत्ती गुल कर दूंगी और तुझे अंधेरे में चलना पड़ेगा। तू बहुत होशियारी के साथ मेरे पीछे पीछे चली आइयो।" बिन्दो ने सिर्फ इतना कहा, "जो हुक्म" मगर उसका कलेजा एक बार धड़क उठा।

फूंक मार कर मुन्दर ने मोमबत्ती बुझा दी और उस जगह घोर अंधकार छा गया। एक खटके की आवाज आई और अन्दाज से बिन्दो को मालूम हुआ कि अब आलमारी के पल्ले खुल गये, साथ ही मुन्दर की आवाज आई; "मेरे साथ चली आ, मगर देख होशियार, सीढ़ियां हैं।" पतली सीढ़ियों पर मायारानी ने पैर रक्खा और बिन्दो उसके पीछे पीछे चलने लगी।

इस बार का सफर मुन्दर का बिल्कुल अंधेरे में ही हुआ और उसके पीछे पीछे चलती हुई बिन्दो को इतनी दफे घूमना मुड़ना और रुकना सीढ़ियें चढ़ना और उतरना पड़ा कि उसका बचा खुचा दिशा-ज्ञान भी लुप्त हो गया और अब वह कुछ भी नहीं कह सकती थी कि वह कहां है और जमानिया महल के भी अन्दर है या बाहर किसी दूसरे ही स्थान में, क्योंकि कई बार उसे खुली जगहों को भी पार करना पड़ा जहां से आसमान और तारे दिखाई पड़ते थे और जमीन कच्ची थी। राम राम करके किसी तरह मुन्दर ने इस रास्ते को भी पार किया और एक ऐसी जगह पर पहुंच कर रुकी जो किसी बड़ी इमारत का भीतरी भाग मालूम होता था। अन्दाज से बिन्दो समझी कि मुन्दर किसी दर्वाजेको खोल रही है और वास्तव में यही बात थी। मुन्दर ने एक कोठरी का दर्वाजा खोला और खुद अन्दर जा बिन्दो को भी अन्दर करने के बाद उसे भीतर से बन्द कर लिया,

तब वह हाथ वाली रोशनी पुनः बाली।
बिन्दो ने देखा कि वह एक छोटी कोठरी के अन्दर है जिसके एक तरफ बनो
हुई कुछ सीढ़ियां ऊपर को उठ गई है। मुन्दर ने उन सीढ़ियों पर पैर रक्खा
और बिन्दो भी साथ हुई। दोनों उन सीढ़ियों को पार करके एक लम्बी चौड़ी
जगह में पहुंची जहां के सामानों को देख बिन्दो ताज्जुब करने लगी।

यह एक बहुत ही बड़ा कमरा था जिसकी पूरी लम्बाई चौड़ाई का पता
मायारानी के हाथ की रोशनी बता न सकती थी, फिर भी बिन्दो ने देखा कि
इस कमरे में एक बनावटी बाग बनाया गया है जिसमें तरह तरह के बनावटी
गुल बूटे और क्यारियां बनी हुई थीं और ताज्जुब तो यह है कि यहां के पौधों
में लगे बनावटी फूलों से तरह तरह की खुशबू भी निकल रही थी जिससे यहां
की हवा बसी हुई थी। बिन्दो ने ऊपर की तरफ निगाह की। छत किस तरह
की या कितनी ऊंची है इसे तो वह ठीक ठीक समझ न सकी पर अन्दाज से उसे
मालूम हुआ कि शायद वह गुम्बददार और शीशे की बनी हुई है।

इस बनावटी बाग के बीचोबीच में एक छोटा गोलाम्बर बना हुआ था
जिसके ऊपर एक पुतली खड़ी थी जो किसी धातु की बनी मालूम होती थी।
मायारानी ने हाथ की मोमबत्ती ऊंची कर दिखाते हुए बिन्दो से कहा, "वह क्या
चीज है देखती है?" बिन्दो ने जवाब दिया, "रोशनी काफी नहीं है इससे साफ
तो नजर नहीं आता पर एक पुतली खड़ी है जिसके हाथ में तलवार दिखाई
पड़ती है। आगे बढ़िये तो साफ नजर आवे।"

मायारानी कुछ हंस कर बोली, "आगे बढ़ने का मौका होता तो तुझे यहां तक न
लाती! यहीं से जो कुछ हो सके करना होगा। देख पुतली के हाथ मे तलवार है
है और दूसरे हाथ में एक ताली। तुझे तीर मार कर उस ताली को गिराना है।"

बिन्दो देर तक गौर से उस पुतली की तरफ देखती रही। जब निगाह जमी तो
उसने देखा कि सचमुच उस पुतली के एक हाथ मे तलवार और दूसरे मे एक बड़ी
चाभी है। बिन्दो ने मुन्दर से कहा, "जी हां, मैंने देखा, जरूर उसके दाहिने हाथ में
एक चाभी है! मगर क्या पास जाकर मैं उस चाभी को ला नहीं सकती?"

मायारानी एक बार हंसी, फिर कौतूहल के भाव से जरा एक बगल पीछे
को हट गई, मानों बिन्दो को आगे बढ़ कर कोशिश कर देखने का इशारा किया।
बिन्दो आगे बढ़ी पर दो ही चार कदम बढ़ने के बाद चमक कर रुक गई। उसने
ताज्जुब के साथ देखा कि उसके आगे बढ़ते ही कुछ खटके की सी आवाज हुई

और वह पुतली अपनी जगह पर घूमने लग गई।

धीरे धीरे पुतली के घूमने की तेजी बढ़ने लगी और शीघ्र ही यहां तक
बढ़ी कि वह एक दम फिरकी की तरह नाचने लग गई। और अब एक और
परिवर्तन उसमें हुआ। नाचते समय उसका ताली वाला हाथ तो ऊंचा हो गया
और तलवार वाला हाथ सामने को बढ़ आया जो अपने घूमने की तेजी में चक्र
का काम करता था। बिन्दो अच्छी तरह समझ गई कि इस समय जो कोई भी
पास जाकर उस पुतली के हाथ से ताली लेने का इरादा करेगा, उस तलवार से
कट कर दो टुकड़े हो जायगा। वह ठिठक कर उसी जगह खड़ी हो गई और डर
की निगाहों से पुतली की तरफ देखने लगी*।

मुन्दर हंसी, तब हाथ बढ़ा के उसने बिन्दो को पकड़ कर पीछे खींच लिया।
साथ ही पुतली के नाचने की तेजी भी कम हो गई और धीरे धीरे बिल्कुल बन्द
होकर वह पहले की तरह खड़ी हो गई। इस समय उसका तलवार वाला हाथ
नीचे को गिरा हुआ था और ताली वाला हाथ आगे को बढ़ा हुआ।

बिन्दो के मुंह से निकल गया, "पुतली है कि कोई शैतान!" मुन्दर हंस
पड़ी, फिर गम्भीर होकर बोली, "उसके हाथ वाली ताली की मुझको जरूरत है,
अगर तू उसे तीर से गिरा कर मुझे ला दे तो मैं तुझे खुश कर दूंगी।" बिन्दो ने
कोई जवाब न दिया, कुछ समय तक तो वह चुप खड़ी न जाने क्या सोचती रही
इसके बाद उसने अपनी कमान दुरुस्त की और एक तीर उस पर चढ़ाया, तब
मुन्दरसे बोली, "हुजूर तकलीफ करके अपना मोमबत्तीवाला हाथ जरा ऊंचा उठायें।"
मायारानी ने वैसा ही किया और बिन्दो ने पुतली की तरफ तीर सीधा किया।

कुछ देर निशाना साधने के बाद बिन्दो ने तीर को छोड़ा जो सनसनाता
हुआ गया और पुतली की हथेली में लगा। मुन्दर बोली, "शाबाश! एक और!"
और बिन्दो ने दूसरा तीर चलाया जो ताली की जड़ के पास लगा। तीसरा तीर
ठीक ताली के बीचोबीच में लगा और एक झन्नाटे की आवाज आई। मालूम हुआ
कि ताली कुछ हिल गई। मुन्दर बढ़ावा देती हुई बोली, "शाबाश, फिर मार!"

बिन्दो ने फिर निशाना लगाया जो खाली गया।

एक एक करके बिन्दो ने हाथ के सब तीर समाप्त कर दिए। इनमें से कई
उस पुतली पर लगे भी पर सिवाय झन्नाटे की आवाज देने के वह ताली पुतली

---

* पाठक इस पुतली का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पढ़ चुके हैं। देखिए
सन्तति सोलहवां भाग, छठवां बयान।

के हाथ से छूटी नहीं। आखिर उसने कहा, "हुजूर इस तरह से तो ताली न मिलेगी। पुतली उसे बहुत मजबूत पकड़े हुए है और मेरे तीर भी समाप्त हो गए। कोई दूसरी तरकीब सोचनी पड़ेगी।" मुन्दर बोल उठी, "हां अब तो यही नजर आता है। तेरे निशाने में चूक नहीं है पर मेरा खयाल ही गलत निकला, मैं सोचे हुई थी कि ताली...।" कहती कहती वह यकायक रुक गई, मानों उनके मुंह से कोई ऐसी बात निकल जाना चाहती थी जिसका कहना मुनासिब न होता। वह थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही, तब बोली, "अच्छा चल, कोई दूसरी तरकीब सोचूँगी।"

जिस रास्ते गई थी उसी रास्ते आगे आगे मुन्दर और पीछे पीछे बिन्दो वापस हुई और जिस समय दोनों महल में पहुंचीं रात करीब करीब समाप्त हो चुकी थी। मुन्दर ने आसमान की तरफ निगाह उठा कर देखा और कहा, "ओफ, बहुत देर हो गई! अच्छा तू जा सो रह, फजूल ही तुझे तकलीफ दी।" बिन्दो ने अदब से जवाब दिया, "लौंडी हर वक्त खिदमत के लिए हाजिर है और रहेगी, हुजूर इसका बिल्कुल खयाल न करें बल्कि अगर सरकार कहें तो उस ताली को लेने की कोई और तर्कीब सोचूं।" मुन्दर ने जवाब दिया, "खैर देखा जाएगा, लेकिन एक और इससे भी बारीक काम है, उसमें भी एक बार तेरे हाथ की सफाई देखूंगी। अच्छा इस वक्त आराम कर।" मुन्दर अपने कमरे में चली गई और बिन्दो अपनी कोठरी की तरफ घूमी।

किवाड़ खोल भीतर घुसी और दर्वाजा बन्द कर ही रही थी कि किसी ने धीमी आवाज में कहा, "लौट आई? बड़ी देर लगी!" बिन्दो ने जवाब दिया, "हां बहुत देर लग गई।" बोलने वाले ने फिर पूछा, "क्या था?" बिन्दो बोली, "बताती हूँ" और तब दर्वाजा मजबूत बन्द कर उसने रोशनी की।

चिराग की मद्धिम रोशनी में हमने देखा कि इस कोठरी में एक नहीं बल्कि दो खाटें पड़ी हुई हैं, जिनमें से एक पर जो कोठरी के सबसे पिछले हिस्से में और दीवार के साथ थी एक बूढ़ी औरत कम्बल ओढ़े बैठी हुई थी। जान पड़ता है यही बिन्दो की वह बूढ़ी और अंधी नानी थी जिसका उसने जिक्र किया था। बिन्दो जाकर उसकी खाटपर बैठ गई और दोनों आपुसमें धीरे धीरे कुछ बातें करने लगीं।

चौथा बयान

शाम का वक्त था और तिलिस्मी बाग के एक कोने में मायारानी अपनी एक सहेली के साथ इधर से उधर चहलकदमी कर रही थी।

मायारानी की इस सहेली को हमारे पाठक भी अच्छी तरह पहिचानते हैं, क्योंकि आज से पहिले भी वे इसे बहुत बार देख चुके हैं और इसके अनेक कर्तबों से भी वाकिफ हैं। इसका नाम धनपत है* और यह मायारानी की बहुत ही मुंहलगी साथिनों में से है। इसे वह रात दिन अपने साथ रखती है।

धनपत और मायारानी में आपस में धीरे धीरे कुछ बातें हो रही हैं।

धन०। तो बिन्दो की निशानेबाजी भी कुछ काम न आई?

माया०। कुछ नहीं, यद्यपि उसके कई तीर निशाने पर लगे और कई बार वह ताली कुछ हिली भी पर पुतली के हाथ से अलग न हुई।

धन०। मेरा भी यही खयाल था कि तीरंदाजी से इस मामले में काम न चलेगा।

माया०। मगर फिर और क्या तर्कीब वह ताली लेने की हो ही सकती है?

धन०। यही तो कुछ समझ में नहीं आता। यह कम्बख्त पुतली अपने पास किसी को फटकने नहीं देती। मगर यह तो कहिये, आपको निश्चय है कि वह ताली वही है जिसकी आपको जरूरत है?

माया०। हाँ मेरा तो अनुमान यही है। मैंने तुझसे कहा न कि जब मैंने बहुत दुःख पहुँचाया और तीन दिन तक एक बूंद जल उसके मुंह में न गया तो आखिर वह बोला कि वह ताली उसी पुतली के कब्जे में है जो नाचती है।

धन०। मगर मेरी रानी, मुझे खयाल है कि तूने एक बार मुझसे कहा था कि वह जड़ाऊ डिब्बे के अन्दर बन्द थी!

माया०। जरूर मैंने कहा था और मैंने उस डिब्बे को देखा भी है यद्यपि खुला हुआ कभी नहीं। वह उस चीज को मुझसे बहुत ही छिपा कर रखता था। सच तो यह है कि उसने आज तक कभी मुझ पर पूरा भरोसा नहीं किया—अपने गुप्त भेद बराबर ही मुझसे छिपाता रहा।

धन०। बेशक ऐसा ही हुआ।

माया०। इसी से तो मुझे उस पर क्रोध है!

धन०। मगर उस पुतली के हाथ में तो ताली है कोई डिब्बा नहीं?

माया०। शायद उसने वह ताली उस डिब्बे में से निकाल कर पुतली के हाथ में पकड़ा दी हो ताकि कोई उसे ले न सके।

धन०। हो सकता है। मगर वह डिब्बा फिर कहीं नजर नहीं आया?

* धनपत—यह नाम चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है और यह कौन है इसे हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं।

माया० । कहीं नहीं ।

धन० । वह चाहे तो ताली को पुतली से ले सकता है ?

माया० । जरूर, और वह कहता भी है कि मुझे उस पुतली के पास ले चलो, मैं उससे वह ताली लेकर तुम्हें दे दूंगा । वह बार बार कहता है कि अगर उसी ताली के लिए तूने मेरी यह दुर्दशा कर रक्खी है तो तू मुझसे वह ताली ले ले और मेरा पिण्ड छोड़ दे ।

धन० । तो तुम ऐसा क्यों नहीं करतीं और क्यों नहीं उसे उस पुतली के पास ले जाकर ताली पर अपना कब्जा जमातीं ?

माया० । राम राम, तू भी क्या बेवकूफी की बात कहती है ! एक बार स्वतन्त्र होकर वह फिर क्या कभी मेरे कब्जे में आवेगा ?

धन० । स्वतन्त्र क्यों ! उसके हाथ पांव बांध रक्खो, मन चाहे आंखों पर पट्टी भी बांधे रहो । तब वह भला कैसे भाग सकता है ?

माया० । (हँस कर) तब वह पुतली से ताली लेगा ही किस तरह ? जरूर कहेगा कि आँखों की पट्टी हटाओ और हाथ पांव खोलो ! (सिर हिला कर) नहीं नहीं, कोई दूसरी ही तर्कीब ताली लेने की करनी होगी ।

धन० । तुमने बड़ी गलती की कि जब मौका रहा तभी तिलिस्म का सब भेद उससे अच्छी तरह समझ नहीं लिया ।

माया० । (लम्बी सांस खींच कर) क्या बताऊं, उस समय मुझे बहुत सी बातों की खबर भी नहीं थी । फिर...

एकायक मायारानी रुक गई । उसके कानों में कुछ शोरगुल की आवाज गई थी । उसने गर्दन घुमा कर देखा । एक कूएं के ऊपर उसकी कई लौंडियां और सहेलियां इकट्ठा थीं जिनके रंग ढंग से पता लगता था कि वहां कोई दुर्घटना हुई है । मायारानी ने गौर से कुछ देर देख कर कहा, "जरूर वहां कोई बात हुई है, जाकर देख तो सही कि क्या मामला है !"

"अच्छा" कह कर धनपत उसी तरफ बढ़ी और मायारानी धीरे धीरे उधर ही को चल पड़ी । अभी कुछ कदम दूर ही थी कि धनपत घबड़ाई हुई दौड़ती नजर आई जो उसको देखते ही बोली, "मेरी रानी, बड़ा गजब हो गया ।"

मायारानी ने पूछा, "क्या ?" धनपत बोली, "वह जो नई लौंडी बिन्दो आई हुई है न, वह अपनी अंधी नानी को हवा खिलाने के लिए उसी कूएं पर लाकर बैठा गई थी । क्या जाने बुढ़िया को झांई आ गई या क्या हुआ कि वह उसी कूएं

में गिर गई और डूब गई । बिन्दो तो एकदम पागल हो गई है । बार बार वह कूएं में कूदना चाहती है । कहती है मैं जाकर नानी को पानी से निकाल लूंगी । लोग पकड़े हुए हैं, नहीं तो वह अब तक कूद पड़ती । चलो जरा उसे समझाओ नहीं तो वह कम्बख्त भी कूएं में कूद कर अपनी जान दे देगी !"

यह सुनते ही मायारानी घबराई हुई उसी तरफ को चली और कूएं पर पहुंची । देखा तो जो कुछ धनपत ने कहा था वह बिल्कुल सही था । बिन्दो को कई लौंडियाँ पकड़े हुए थीं और वह बार बार उनके हाथ से छूटने और उसी कूएं में कूदने का उद्योग कर रही थी । मायारानी को देखते ही वह झपट कर उसके पास पहुंची और दोनों हाथोंसे उसके पैर पकड़कर रोती हुई बोली, "रानी साहब-किसी तरह मेरी बूढ़ी नानी की जान बचाइये, बेचारी इसी कूएं में गिर पड़ी है।"

मायारानी ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा, "राम राम, बेचारी की यही गति बदी हुई थी, और सो भी मेरे ही यहाँ ! भगवान किसके साथ कब क्या करेंगे कोई कह नहीं सकता । खैर, बिन्दो तू अब उसका गम जाने दे और मुझे अपना बड़ा बुजुर्ग समझ । मैं वादा करती हूं कि जिन्दगी भर तुझे किसी तरह की तकलीफ होने न दूंगी ।"

बिन्दो रो कर बोली, "रानी अभी बहुत देर नहीं हुई है, अभी वह निकल आवे तो शायद बच जाय, किसी को उस कूएं में उतरने का हुक्म दीजिए, या नहीं तो फिर मुझको ही इसमें कूदने दीजिए, मैं गोता लगाना अच्छी तरह जानती हूं और पानी में घुस कर उसको खोज लूंगी ।"

मायारानी दिलासा देती हुई बोली, "तेरा खयाल गलत है बिन्दो, तू विश्वास रख कि तेरी नानी अब जीती नहीं रह गई । एक तो वह कूआं बहुत गहरा है, उसमें अथाह जल है, बीस हाथ से किसी तरह कम न होगा, दूसरे वह तिलिस्मी है। उसमें गिरा हुआ कोई आदमी आजतक बाहर नहीं हुआ न कभी उसकी लाश ही पाई गई । तू कूद कर अपनी जान से भी हाथ धोएगी । वह खयाल छोड़ दे, जो हुआ सो हुआ !"

देर तक मायारानी बिन्दो को दम दिलासा देती रही और उसकी सखियां भी बहुत तरह से उसको समझाती बुझाती रहीं । आखिर बिन्दो कुछ शान्त हुई और मायारानी ने कई लौंडियों के साथ उसको महल की तरफ भेज दिया । वह रोती और बार बार घूम कर उस कूएं की तरफ देखती हुई वहां से बिदा हुई । बाकी लौंडियां और सखियां भी अपने अपने काम में लगीं और अब पुनः

मायारानी और धनपत अकेली रह गईं।
धनपत ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा, "राम राम, बेचारी के भाग्य
में यही बदा था!" मायारानी ने गर्दन हिलायी, धनपत फिर बोली, "मगर रानी,
इस कूएं में जो गिरा क्या वह आज तक कभी निकला नहीं ? आखिर फूल कर
तो उसकी लाश ऊपर आती होगी !"
मायारानी बोली, "न जाने क्या बात है कि इसमें जो गिरा फिर कभी न
निकला, मालूम नहीं कहां चला जाता है। कभी लाश भी ऊपर नहीं आती।"
धनपत बोली, "राम राम, तब तो बड़ा खतरनाक कूआं है ! खैर, आज
तुम जाओगी नहीं ? कहती थीं न कि शाम को उसके पास जाकर फिर पूछूंगी
कि ताली मिलने की क्या तर्कीब हो सकती है ?"
मायारानी ने जवाब दिया, "हां अब जाती हूं, मगर तू बाग ही में रहियो
और सब बात का खयाल रखियो। बिन्दो पर भी निगाह रखियो, कहीं कुछ
बेवकूफी न कर बैठे।"
धनपत "बहुत खूब" कह कर एक तरफ को हट गई और मायारानी महल
की तरफ चल पड़ी।

महल में पहुंच मायारानी ने अपनी लौंडियों और सखियों से कुछ बातें कीं
और तब अपने कमरे में जा वहां से कुछ सामान लेने के बाद अकेली ही महल के
एक भीतरी भाग में पहुंची जहां इस समय सन्नाटा छाया हुआ था। एक कोठरी
के सामने खड़ी होकर उसने दर्वाजा खोला और भीतर घुसी। सामने की दीवार
में कई आलमारियां नजर आईं जिनमें से एक को उसने खोला। यह वास्तव में
एक दूसरी कोठरी में जाने का रास्ता था जिसमें पहुंच मायारानी ने पल्लेको भीतर
से बन्द कर लिया। कोठरी में एकदम अंधकार हो गया पर उसकी परवाह न कर
वह एक खास जगह पर जाकर खड़ी हो गई और कुछ करने लगी। खटके की
एक आवाज हुई और वह जमीन का टुकड़ा जिस पर मायारानी खड़ी थी नीचे
उतरने लगा*।

जब वह जमीन का टुकड़ा रुका, मायारानी उस पर से उतरी और एक तरफ
को बढ़ी जिधर कुछ उजाला था और उसके सहारे एक बाग की कैफियत दिखाई
पड़ रही थी। यह वास्तव में उस तिलिस्मी बाग का तीसरा दर्जा था और माया-

---

* यह तिलिस्मी बाग के तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता है। पाठक यहां पहिले भी तेजसिंहके साथ आ चुके हैं, देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति सातवां भाग, दूसरा बयान।

रानी तेजी के साथ चलती हुई उस नहर के किनारे पहुंची जो इस बाग को तर
रखती थी*। थोड़ी दूर तक इसके किनारे किनारे चलती रही, यहां तक कि इस
संगमर्मर के चबूतरे के पास पहुंच गई जिस पर पत्थर की मूरत बैठी हुई थी
और जहां से चौथे दर्जे में जाने का रास्ता था।

मामूली ढंग पर रास्ता खोल मायारानी बाग के चौथे दर्जे में चली गई
और सूखे कूएं के पास पहुंची। जो मोटी जंजीर उसमें लटक रही थी उसी के
सहारे उसके अन्दर उतर गई और सुरंग को पार कर एक ऐसी जगह में पहुंची
जहां अभी तक हमारे पाठक कभी नहीं आये थे।

एक बहुत बड़ा कमरा, जिसकी छत अन्दाज से कहीं ज्यादा ऊंची थी, इस
समय मायारानी के सामने था जिसके बीचोबीच छत से लटकती हुई एक मोटी
जंजीर के सहारे एक बहुत बड़ा पींजड़ा झूल रहा था। शेर या दूसरे खूंखार जान-
वरों को रखने के लिए जिस तरह मोटे मोटे छड़ वाले पींजड़े बनाये जाते हैं वैसे ही
मोटे मोटे छड़ों का बना हुआ यह पींजड़ा इतना मजबूत था कि बड़े से बड़ा और
भयानकसे भयानक जानवर भी इसमें बन्द होकर फिर छूट जाने की उम्मीद नहीं
कर सकता था, पर इस समय इस पींजड़े में कोई खूंखार जानवर नहीं बन्द था
बल्कि एक नाजुक और कम उम्र नौजवान था। पाठकों को तरद्दुद में न डाल
हम कह देते हैं कि इस पींजड़े के अन्दर इस वक्त राजा गोपालसिंह बन्द थे।

हाय, क्या हालत हो रही थी इस समय बेचारे गोपालसिंह की!! सर मूंछ और
दाढ़ी के बाल बढ़ कर जंगलियों जैसे हो गये थे, हाथ और पाँव के नाखून बढ़
आये थे, बदन पर इतनी मैल चढ़ रही थी कि वह झांवर हो रहा था। सिर्फ कुछ
कम्बल, पानी के दो घड़े, और दो बर्तन यही इनकी बिसात थी और या फिर
वे कुछ सूखी रोटियाँ जो एक तरफ किसी मिट्टी के बर्तन में पड़ी हुई थीं।

मगर तिस पर भी गोपालसिंह की हिम्मत या दिलावरी ने अभी तक उनका
साथ छोड़ा न था। जिस समय मायारानी इस जगह पहुंची और पींजड़े के पास
जाकर खड़ी हुई, गोपालसिंह ने ऐसी भयानक निगाह उस पर डाली कि वह डर
कर दो कदम पीछे हट गई लेकिन फिर हिम्मत कर आगे बढ़ी और छड़ों के पास
जाकर खड़ी हो गई। गोपालसिंह अपनी खून की तरह सुर्ख आंखों से देर तक

---

* तिलिस्मी बाग और उसके चारों दर्जों का हाल पाठक अच्छी तरह चन्द्र-कान्ता सन्तति में पढ़ चुके हैं और इन सब रास्तों का हाल भी खुलासा तौर पर उस ग्रन्थ में लिखा जा चुका है, अगर भूल गए हों तो दुबारा देख लें।

उसकी तरफ देखते रहे, तब उन्होंने नफरत से उसकी तरफ थूक दिया और पलट कर दूसरी तरफ मुंह करके बैठ गए।

मगर बेहया मुन्दर में गैरत कहां? वह हंसी और घूम कर उधर को पहुंची जिधर गोपालसिंह ने मुंह कर लिया था, तब बोली, "तुम व्यर्थ ही मुझसे गुस्सा कर रहे हो? मैं तो बराबर कह रही हूं कि तुम्हारी यह हालत मेरी किसी करनी से हरगिज नहीं हुई।"

गोपालसिंह गहरी निगाहों से उसको देखते रहे पर मुंह से कुछ न बोले। थोड़ी देर तक चुप रह कर मुन्दर पुनः बोली, "तुमको तकलीफ देने वाले या बन्द रखने वाले ऐसे लोग हैं जिनसे मैं भी डरती हूं और जिनकी कार्रवाइयों में दखल देने की हिम्मत नहीं कर सकती। सच तो यह है कि खुद मेरा दिल तुम्हारी इस हालत को देख कर रोता है और मैं उन लोगों से बराबर कहती हूं कि इनको इस हालत में डाल रखने से बेहतर है कि मेरी ही जान ले लो पर वे लोग कुछ सुनते ही नहीं और मैं उनको नाराज करते डरती हूं कि कभी कभी यहां आने जाने की जो इजाजत उन लोगों ने मुझे दे रखी है कहीं उसे भी छीन न लें और मेरा यहां तक पहुंचना भी नामुमकिन हो जाय।"

मुन्दर इतना कह कुछ देर को रुकी पर गोपालसिंह ने न तो कुछ जवाब दिया और न उनकी क्रोधपूर्ण मुद्रा में कोई अन्तर पड़ता नजर आया। वह कुछ देर तक चुप रही, इसके बाद फिर बोली, "मगर तुम भी तो जान बूझ कर तकलीफ उठा रहे हो! जिस चीज के लिए वे लोग तुमको इतना परेशान कर रहे हैं उसे देकर अपने को इस आफत से छुड़ाते क्यों नहीं! आखिर जान रहेगी तो बहुत चीजें आ जायेंगी।"

गोपालसिंह ने फिर भी कोई जवाब न दिया, पर उनकी आँखों से कैसा कुछ एक सवाल का सा भाव पैदा हुआ। मुन्दर बोली, "मैंने तो बताया, न जाने कौन सी एक तिलिस्मी ताली है जिसे वे लोग चाहते हैं। दे के भी छुट्टी करो, जब तुम्हीं न रहोगे तो ताली पास रह कर कौन काम देगी?"

ऐसा जान पड़ रहा था मानों गोपालसिंह के दिल के भीतर ही कोई द्वन्द हो रहा है, दो तरह के भाव वहां आपस में युद्ध कर रहे हैं। आखिर अपनी घृणा और द्वेषको दबा उन्होंने जवाब दिया, "मैंने बता तो दिया कि वह ताली फलानी जगह रखी हुई है, फिर भी तू क्यों नहीं मेरा पिण्ड छोड़ती और बार बार अपना काला मुंह मुझको दिखा कर शान्ति से मरने भी नहीं देती।"

मायारानी अपने गुस्से के भाव को दबा कर बोली, "उन लोगों का कहना है कि पुतली के हाथ से ताली लेना सहज काम नहीं है।" गोपालसिंह धीरे से बोले, "तो तू मुझे वहां ले चल, मैं ताली निकाल के तुझे दे दूंगा बशर्ते कि तू कसम खाये कि फिर कभी अपनी नापाक सूरत मुझे न दिखायेगी।"

माया०। (गर्दन हिला कर) मैंने यह बात उन लोगों से कही थी पर उन्हें यह मंजूर नहीं है। उनका ख्याल है कि तुम वहां तक पहुंच कर शायद कोई ऐसा काम कर डालो कि फिर उनके हाथ के ही बाहर हो जाओ।

गोपाल०। और इसी बात का क्या सबूत है कि सिर्फ उसी ताली की बदौलत मेरी जान नहीं बची हुई है? शायद ताली पा के तू ही मुझे मार डाले।

माया०। राम राम; फिर तुम वही बात कहते हो! मैं कितनी बार कह चुकी कि तुम्हारी यह हालत बनाने वाली मैं नहीं कोई दूसरा ही है और मुझसे तुम्हारी यह मुसीबत देखी नहीं जाती इसी से बार बार आती हूं कि समझा बुझा कर तुमको इस नर्क के बाहर करूं।

गोपालसिंह कुछ देर तक चुप रहे, मगर अपनी गहरी निगाह बराबर मुन्दर पर जमाये रहे, इसके बाद बोले—

गोपाल०। अच्छा एक बात तो बता, क्या तू सचमुच बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी ही है या कोई और?

माया०। मैं के बार कहूं! हजार बार तो कह चुकी कि वही हूं वही हूं वही हूं!

गोपाल०। मगर मुझे विश्वास नहीं होता।

माया०। तो तुम क्या मुझे कोई और समझते हो?

गोपाल०। हां।

माया०। (बनावटी हँसी हँस कर) जरा सुनूं तो सही कि मुझे कौन खयाल करते हो!

गोपाल०। हेलासिंह की मुन्दर!

सुनते ही मुन्दर कांप गई और उसका कलेजा धड़क उठा, क्योंकि आज के पहिले कभी यह नाम उसने गोपालसिंह के मुंह से निकलता न सुना था पर बहुत कोशिश कर उसने अपने को सम्हाले रक्खा और जोर से हंस कर कहा—

मुन्दर०। यह मुन्दर कौन बला है! मैं जानती भी नहीं कि यह किस चिड़िया का नाम है, मगर यह जरूर पूछती हूं कि तुमने यह नाम कहां सुना!

गोपाल०। किसी से सुना नहीं, यह मेरा अनुमान है !

सुन्दर०। अगर फकत अनुमान ही है तो मैं कसम खाकर कह सकती हूं कि मैंने आज तक कभी इस नाम को सुना भी नहीं और मैं सचमुच बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी ही हूं।

गोपाल०। क्या इस बात का कोई सबूत मुझे दे सकती है ?

सुन्दर०। किस बात का ? कि मैं लक्ष्मीदेवी ही हूं ? भला क्या सबूत इस जगह मेरे पास है ?

गोपाल०। तू अपने बाप से कहला दे।

सुन्दर०। (अफसोस का भाव बता कर) मैं कह तो चुकी कि मेरे वे ही दुश्मन जिनके चंगुल में मैं पड़ी हुई हूं उनके भी दुश्मन थे और उन्होंने उनको जान से मार डाला, अब वे हैं कहां जो मेरे बात की ताईद करें।

गोपाल०। अच्छा तेरी बहिनों में से कोई आकर मुझसे कह दे।

सुन्दर०। (कुछ सोच कर) हां यह हो सकता है। कमलिनी या लाडिली दोनों में से कोई या दोनों ही, यह कसम खाकर कह देंगी कि मैं उनकी बड़ी बहिन लक्ष्मीदेवी ही हूं। तब तो तुमको विश्वास हो जायगा न !!

गोपाल०। हां, तब मुझे विश्वास हो जायगा।

सुन्दर०। तो मैं ऐसा कर दूंगी पर मुश्किल तो यह है कि मैं उन्हें यहां तक ला नहीं सकती। हां एक बात हो सकती है !

गोपाल०। क्या ?

सुन्दर०। उन लोगों ने जो ताली की लालच में तुमको इस कदर तकलीफें दे रहे हैं मुझसे कसम खाकर कहा है कि अगर वह ताली उन्हें मिल जाय तो यद्यपि वे तुमको छोड़ेंगे तो नहीं पर फिर भी तुमको किसी तरह की तकलीफ नहीं देंगे और जिन्दगी भर आराम के साथ रहने का इन्तजाम करके किसी एकान्त जगह में बन्द कर देंगे जहां तुमको घूमने फिरने की भी स्वतन्त्रता रहेगी। उस जगह कभी मौका निकाल कर मैं अपनी बहिनों से तुम्हारा सामना करा दूंगी।

गोपाल०। (सर हिला कर) मगर मुझे इस बात पर यकीन ही नहीं होता। मेरा दिल कहता है कि ताली हाथ में आते ही वे लोग या तू मुझे मार डालेगी !

सुन्दर०। नहीं नहीं मैं विश्वास दिलाती हूं कि ऐसा कदापि न होगा, मैं कसम खाकर कहती हूं कि एक बार वह ताली कब्जे में आ जाने पर तुम्हारे दुश्मन जिन्दगी भर तुमको किसी प्रकार का कष्ट न देंगे।

गोपाल०। (देर तक कुछ सोचते रह कर) खैर इस तरह की जिन्दगी से तो मौत अच्छी होगी। इस जीते नर्क से तो मर जाना अच्छा। मैं तेरी कसम पर यकीन करता हूं और तुझे वह ताली देने को तैयार हूं। तू मुझको वहां ले चल, मगर एक बार फिर कह दे कि वह ताली पाकर तुम लोग मेरा पिण्ड छोड़ दोगे ?

सुन्दर०। (जिसकी आंखें इस बात को सुन कर खतरनाक तौर पर चमक उठी थीं) हां हां, मैं इस बात की कसम खाती हूं, फिर जिन्दगी भर किसी तरह की तकलीफ तुमको न होगी। (पुनः कुछ सोच कर) मगर बात तो वही है जो मैंने पहिले कहा, अर्थात् वे लोग तुमको उस जगह तक ले जाने के लिए तैयार नहीं हैं। उनको डर है कि वहां पहुंच कर तुम कहीं उनके काबू के बाहर न हो जाओ!

गोपाल०। (हंस कर) अगर ऐसा ही खयाल है तो मेरे हाथ पांव बांध देना और आंख पर भी पट्टी चढ़ा देना।

सुन्दर०। (अविश्वास के साथ) हाथ पांव बांध दूं और आंखों पर भी पट्टी बांध दूं ? मगर तब कैसे वहां जाकर वह चाभी ला सकोगे ?

गोपाल०। इस हालत में मुझे वहां तक ले चलना तुम लोगों का काम होगा, मैं इतना ही कह सकता हूं कि उस कमरे के दर्वाजे तक पहुंच जाऊंगा तो यदि मेरी आंख बन्द भी रहेगी तो भी वह चीज तुम्हारे हवाले कर दे सकूंगा।

सुन्दर०। (जिसका कलेजा इस बात को सुन उछलने लगा) लेकिन अगर यही बात है तो जरूर तुमको कोई ऐसी तर्कीब मालूम है जिसकी बदौलत तुम उस नाचने वाली पुतली के हाथ से वह चाभी ले सकते हो। तब क्यों नहीं मुझे वह तर्कीब बता देते ? आंखों पर पट्टी और हाथ पांव बंधवा कर वहां तक जाने की तकलीफ भी बच जायगी और.........

गोपाल०। (सिर हिला कर) ऐसा नहीं हो सकता।

सुन्दर०। मगर मैं पूछती हूं कि क्यों ?

गोपाल०। हाय हाय, किस बेवकूफ से पाला पड़ा है ! अरे बाबा सौ की सीधी यह कि चाहे सब कुछ हो गया है और मैं जानवरों की तरह पींजड़े में बन्द हूं फिर भी तिलिस्म का राजा हूं, मेरी सिर्फ मौजूदगी से बहुत से काम ऐसे हो सकते हैं जो और किसी तरह नहीं हो सकते। अगर मैं वहां हाथ पांव बंधा और आंखों पर पट्टी बांधे हुए भी मौजूद रहूंगा तो वह पुतली कुछ बाधा न डालेगी और चुपचाप उस ताली को तुम लोगों के हवाले कर देगी। फिर तुम लोग जानो और तुम्हारा ईमान जाने, अपना काम हो जाने पर मुझे जीता छोड़ना या मार डालना !

मुन्दर० । (अपने उछलते हुए कलेजे को जोर से दबा कर) क्या तुम सही कहते हो ?

गोपाल० । हां बिल्कुल सही ।

मुन्दर० । वादा करते हो कि धोखा नहीं दोगे और भागने की कोशिश नहीं करोगे ?

गोपाल० । तू कसम खाती है कि ताली पा के भी मुझे जिन्दा रहने देगी ?

मुन्दर० । हां मैं कसम खाती हूं !

गोपाल० । तो मैं वादा करती हूं, मगर फिर एक बात और समझ ले ।

मुन्दर० । वह क्या ?

गोपाल० । वह ताली तिलिस्मी है, यदि वह तुझे या तेरे साथियों को मिल भी जाय तो भी तुम लोग उसको अपने पास रख नहीं सकते ।

मुन्दर० । ऐसा नहीं हो सकता, तुम्हें उन लोगों की ताकत का हाल नहीं मालूम है जो वह ताली चाहते हैं ।

गोपाल० । खैर जो कुछ भी हो मैंने इसलिए खबर दे दी कि अगर वह ताली मिल के भी निकल गई तो फिर तू कहेगी कि मैंने ही कुछ कर दिया ।

मुन्दर० । मैं हर्गिज न कहूंगी, और वादा करती हूं कि अगर ऐसा हो भी गया जिसकी कोई उम्मीद नहीं है, तो भी तुम्हें कोई दोष न दूंगी ।

गोपाल० । कसम खाती है !

मुन्दर० । हां मैं कसम खाती हूं, तुम बस एक बार वह ताली मेरे हाथ में आ जाने दो !

गोपाल० । खैर तब ठीक है तू मुझे वहां ले चल, चाहे जिस हालत में भी, मैं वह ताली तुझे दिला दूंगा ।

मुन्दर का कलेजा पुरसों उछलने लगा । गोपालसिंह इतने सहज में वह ताली दे देने पर राजी हो जायगा यह उसे सुन कर भी विश्वास न होता था । मगर अब उसे निश्चय हो गया कि उसका काम फतह हो गया और तिलिस्म की दौलत उसके हाथ लगी तथा वह सचमुच तिलिस्म की रानी हो गई । वह कुछ देर तक न जाने क्या क्या सोचती रही, इसके बाद बोली, "अच्छा कब तुम यह काम करोगे ?"

गोपाल० । जब तेरी इच्छा ।

मुन्दर० । आज ही !

गोपाल० । आज ही ।

मुन्दर० । अच्छा तब ठीक है, तुम होशियार रहना, मैं जाकर उन लोगों से यह बात कहती हूं और अगर उन्होंने मंजूर किया तो आज ही रात को तुमको वहां तक ले चलने का बन्दोबस्त किया जायगा । मगर याद रखना तुम्हारी आंखों पर पट्टी चढ़ी रहेगी और पांव रस्सी से मजबूत बंधे होंगे ।

गोपाल० । हां ठीक है, मैं इस हालत में भी काम कर लूंगा ।

"अच्छा तो बस ठीक है, मैं जाती हूं ।" कह कर खुशी से फूलते हुए अपने कलेजे को दोनों हाथों से दबाये मुन्दर वहां से जाने के लिए घूमी, पर फिर पलट कर बोली, "यहां किसी चीज की जरूरत है, कोई सामान चाहिए ?"

गोपाल० । फकत एक चीज ।

मुन्दर० । (खुशी खुशी) क्या चीज ? जो कुछ कहो वह हाजिर हो जायगी ।

गोपाल० । बस एक पुड़िया जहर, जिसे मैं अपने पास रक्खूं और अगर वह तिलिस्मी ताली देने पर भी तुम लोगों की सूरत मुझको देखनी पड़े तो उसे खाकर अपनी मुसीबतों का खातमा कर डालूं !

इसके जवाब में मुन्दर ने बुदबुदा कर क्या कहा गोपालसिंह सुन न सके । मुन्दर चली गई और उस जगह सन्नाटा हो गया ।

पाठक शायद समझते होंगे कि मुन्दर और गोपालसिंह में जो कुछ बातें हुईं वे केवल उन्हीं तक रह गईं और किसी गैर के कानों तक नहीं गईं, मगर सो बात नहीं है, एक नहीं बल्कि दो आदमी उस जगह मौजूद थे जो केवल इन बातों को सुन ही नहीं रहे थे बल्कि जो कुछ यहां पर हो रहा था उसे अच्छी तरह देख भी रहे थे । इस बहुत बड़े कमरे के चारों तरफ कई दर्वाजे और खिड़कियां बनी थीं और साथ ही बहुत कुछ सजावट का सामान भी यहां मौजूद था जिनमें एक बहुत बड़ी तस्वीर भी थी जो एक तरफ की दीवार के साथ लगी हुई थी और जिसमें शिकार का दृश्य बना हुआ था । बर्फ से ढंके हुए पथरीले मैदान में भालुओं का शिकार हो रहा था । एक बहुत बड़ा भालू अपना खूंखार जबड़ा खोले और भयानक पंजे फैलाये खड़ा था और कई शिकारी जिनके साथ कुत्ते भी थे उसका मुकाबला कर रहे थे । इसी भालू की बालों से ढकी आंखों की जगह इस समय खाली थी और उसके पीछे की तरफ से दो आदमी उन्हीं छेदों की राह इस तरफ का सब हाल देख सुन रहे थे और साथ साथ कभी कभी बहुत धीरे धीरे आपस में कुछ बातें भी करते जाते थे । इस जगह इतना हम और कह देना चाहते हैं कि इन दोनों ही का बदन काले कपड़ों से ढंका हुआ था और चेहरों पर नकाब

पड़ी हुई थी।

जब मायारानी की बातें समाप्त हुईं और वह पींजड़े के पास से हटी तो एक ने दूसरे से पूछा, "क्या आप ही ने राजा साहब को ऐसा करने की सलाह दी है?" दूसरे ने जवाब दिया, "हां।" पहिले ने कहा, "मगर ताली मिलते ही तो राजा साहब की जान पर आ बनेगी।" दूसरा हंस कर बोला, "एक तो वह ताली सो है ही नहीं जो कम्बख्त मुन्दर समझती है, दूसरे वह काम होने के पहिले ही गोपालसिंह को मैं छुड़ा लूंगा बशर्ते कि तुम्हारा गौतम उस जगह तक पहुंचा हुआ हो जहां के लिए मैंने कहा है!"

पहिले ने जवाब दिया, "वह मौजूद मिलेगा, वह सब काम आपके इच्छानुसार पूरा हो चुका है, मगर मेरी समझ में नहीं आता कि इतना झमेला किस लिए किया जा रहा है, गोपालसिंह तो सामने हैं, क्या आप उन्हें छुड़ा नहीं सकते!" दूसरे ने कहा, "नहीं, यह पींजड़ा तिलिस्मी है, कोई न तो इसके पास ही जा सकता है और न इसको छू ही सकता है। इसमें बहुत तेज बिजली की ताकत भरी हुई है जो किसी को भी पास पहुंचने या छूने की इजाजत नहीं देती।" पहिले ने पूछा, "मगर गोपालसिंह पर इसका असर नहीं होता!" दूसरे ने कहा, "नहीं, पींजड़े के अन्दर वाले पर असर नहीं होता। और इस बिजली के असर को दूर करने की तर्कीब इस समय केवल मुन्दर ही के हाथ में है, मैं भी इस विषय में कुछ कर नहीं सकता, पर एक बार पींजड़े के बाहर हो जाने पर गोपालसिंह को बेशक निकाल ले जा सकता हूं। मगर यह काम भी मैं ऐसा सफाई से करना चाहता हूं कि किसी को कानोंकान पता न लगे और कम्बख्त मुन्दर यही समझती रहे कि उसका पति बराबर उसके चंगुल में है। अच्छा अब बातें बन्द करो, मुन्दर गई अब हमें अपना काम पूरा कर रखना चाहिए, न जाने कब वह लौट आवे।"

दोनों आदमी पीछे हटे और एक ने कोई खटका दबाया जिसके साथ ही भालू के आंखों की पुतलियां अपने ठिकाने आकर बैठ गईं।

* * *

आधी रात से कुछ ज्यादा बीत चुकी होगी। चारो तरफ घनघोर अंधेरा और सन्नाटा छाया हुआ है और कहीं से एक झींगुर के, बोलने की भी आवाज नहीं आ रही है। ऐसे समय में हम अपने पाठकों को पुनः जमानियां तिलिस्म के उस भाग में ले चलते हैं जहां उस दिन वे मायारानी और बिन्दो के साथ आए थे और

नाचने वाली पुतली का तमाशा देखा था।

* * *

किसी जगह से आते तीन चार आदमी अभी अभी उस बड़े कमरे के नीचे आकर रुके हैं जिसके अन्दर वह बनावटी बाग तथा नाचने वाली पुतली है मगर इन आने वालों का रंग ढंग बड़ा ही विचित्र और डरावना है। इनमें जो सबसे आगे हाथ में मोमबत्ती लिये हुए आ रहा है उसका तो सिर से पैर तक सब भाग काले कपड़ों से इस तरह ढंका हुआ है कि एक नाखून तक बाहर नजर नहीं आता और यह जानना भी मुश्किल है कि वह औरत है या मर्द, और दूसरे दो जो उसके पीछे पीछे एक बोझ उठाये हुए चले आ रहे हैं वे भी अपना तमाम बदन काले कपड़ों से ढांके हुए और चेहरा भी नकाब से छिपाए हुए हैं। इनका बोझ एक कुर्सी है जिस पर कोई आदमी बैठा हुआ है और आगे आगे चलने वाले के हाथ की रोशनी में हम बखूबी देख सकते हैं कि वे राजा गोपालसिंह हैं। मगर क्या हालत हो रही है इस समय बेचारे गोपालसिंह की! उनकी आंखों पर मोटी पट्टी बंधी हुई है और हाथ पांव कुर्सी के साथ इस तरह बंधे हैं कि वे कोशिश करके भी हिल तक नहीं सकते।

जिस समय ये लोग छोटी कोठरी में पहुंचे जहां से बड़े कमरे में जाने के लिए सीढ़ियां ऊपर को उठ गई थीं तो गोपालसिंह की कुर्सी जमीन पर रख दी गई और तीनों आदमी उनके तीन तरफ खड़े हो गये। कुछ देर तक कोई कुछ न बोला, इसके बाद स्वयं गोपालसिंह ने ही कहा, "क्या बात है, क्या वहां पहुंच गए?" जो दो आदमी उनकी कुर्सी उठाए हुए थे उनमें से एक ने जवाब दिया, आवाज के ढंग से ही मालूम होता था कि वह आवाज बदल कर बोल रहा है—"जी हां, आपके सामने ही वे सीढ़ियां हैं जो बड़े कमरे में पहुंचती हैं। अब हम लोग क्या करें?" गोपालसिंह ने जवाब दिया, "कुछ करने की जरूरत नहीं, आप लोग जाकर वह ताली ले लें, पुतली कुछ उज्र न करेगी। मगर पहिले एक काम करें। सीढ़ियों के ऊपर जाकर जो दर्वाजा पड़ता है उसके भीतर की तरफ दर्वाजे के दोनों बगल, दो संगमर्मर की खूंटियां बनी हुई हैं। ये खूंटियां, दोनों एक साथ, दबाई जानी चाहिये। जब तक ये खूंटियां दबी रहेंगी, पुतली स्थिर रहेगी। मगर दोनों खूंटियां एक साथ ही दबनी चाहिएं और तब तक दबी रहनी चाहिएं जब तक पुतली से जो काम लेना है वह पूरा नहीं हो जाता। अगर काम पूरा नहीं हुआ रहा और कोई भी खूंटी बिना दबी रह गई तो जो कोई पुतली के पास रहेगा उसका सिर कट कर गिर पड़ेगा।"

तीनों आदमियों ने, एक तो वह जो मोमबत्ती हाथ में लिए आगे आगे था, और दूसरे दो वे जो गोपालसिंह को उठाए हुए थे—आपस में एक दूसरे की तरफ देखा और कुछ देर तक कुछ सोचते रहे, तब मोमबत्ती वाले आदमी के एक इशारे पर बाकी के दोनों कुर्सी वहीं छोड़ पीछे हटे। इस कोठरी में जाने का जो दर्वाजा था उसे बन्द करके भीतर भारी सांकल चढ़ा दी और कहीं से निकाल कर एक मजबूत ताला भी उसमें बन्द कर दिया। इसके बाद मोमबत्ती की रोशनी में एक बार अच्छी तरह उस छोटी कोठरी के चारो तरफ देखा माना इस बात का डर हो कि यहां कोई छिपा हुआ होगा, पर कहीं कोई डर की बात हो ही क्या सकती थी, अस्तु उन तीनों ने आपस में इशारा करके एक दूसरे को इतमीनान करा दिया कि कोई डर की बात नहीं है और तब तीनों सीढ़ों की तरफ बढ़े।

आगे आगे मोमबत्ती हाथ में लिए वह आदमी और पीछे पीछे बाकी के वे दोनों सीढ़ियों के ऊपर चढ़े। बड़ा दर्वाजा खोला गया और तीनो उस बनावटी बाग में पहुंचे। घुसते ही मोमबत्ती वाले ने हाथ ऊंचा किया और बड़े कमरे में चारो तरफ निगाह फेरी। कहीं कोई डर की बात नजर न आई जिससे उसने सन्तोष की सांस खींची और दर्वाजे के बगल की तरफ घूमा। सचमुच ही इस बड़े दर्वाजे के दोनो तरफ, कोई चार चार हाथ की दूरी पर, दो संगमर्मर की खूंटियां दीवार के साथ जड़ी हुई दिखाई पड़ रही थी। वह आदमी एक खूंटी के पास गया और हाथ से उसे नीचे की तरफ दबाया, वह सहज ही में झुक गई। तब दूसरी के पास गया और उस पर हाथ रक्खा, वह भी नीचे को झुक गई। उसने एक लम्बी सांस खींची और तब दबी आवाज में कहा, "यह बात तो उसकी ठीक मालूम होती है! अच्छा तुम दोनो आदमी एक एक खूंटी को दबाओ तो मैं आगे बढ़ कर देखूं कि पुतली क्या करती है।"

दोनों आदमी दर्वाजे के दो तरफ हो गए और साथ ही दोनों खूंटियां नीचे को दबाईं। तब वह मोमबत्ती वाला आदमी आगे बढ़ा, मगर डरता और झिझकता हुआ। पर ताज्जुब की बात थी कि वह उस पुतली के पास तक चला गया और पुतली ने जुम्बिश न खाई।

खुशी के मारे उस आदमी का कलेजा उछल पड़ा और नजदीक ही था कि वह उस छोटे चबूतरे पर चढ़ कर पुतली के हाथ से ताली ले ले कि यकायक वह डर कर रुक गया। कहीं से कोई आवाज आई थी। वह भय से कई कदम पीछे हट गया। कोई खतरे की बात तो नजर न आई मगर हां कहीं से किसी के बोलने

की आवाज जरूर आ रही थी। गौर किया तो मालूम हुआ कि उस पुतली के ही मुंह से वह आवाज निकल रही थी।

तीनों धड़कते कलेजों से सुनने लगे, पुतली कह रही थी—

"हैं, यह क्या—क्या वह शुभ घड़ी आ गई जिसके लिए मैं यहां बैठाई गई हूं? क्या तिलिस्म तोड़ने वाला महात्मा यहां आ गया? बेशक ऐसा ही है, नहीं तो क्यों मैं अपना नाच भूल जाती और क्यों मेरे पैर उस जमीन में चिपक जाते जिस पर मैं हजारों बार नाच चुकी हूं! ठीक है, मुझे खुशी है कि मैं अपना फर्ज अदा कर पाई और मुझे इस कैद से छुट्टी मिल गई। अच्छा तब आओ, जो कोई भी होवो बहादुर आगे बढ़ो। यह ताली लेकर तिलिस्म खोलो और उस बेइन्तहा दौलत के मालिक बनो जो तुम्हारे ही लिए इसके बनाने वाले यहां रख गए हैं।"

मोमबत्ती वाले आदमी का कलेजा पुरसों उछल पड़ा और उसने खुशी खुशी आगे बढ़ कर चढ़ने की नीयत से उस चबूतरे पर अपना पैर रक्खा जिस पर वह पुतली खड़ी थी। मगर उसी समय पुतली फिर बोली, "मगर अकेले मत आओ, कम से कम दो आदमी मेरे पास आओ।"

यह सुन कर वह आदमी रुक गया और कुछ सोच कर उसने इशारे से उन दो आदमियों में से एक को अपने पास बुलाया जो दोनों खूंटियों को दबाए खड़े थे। उसने खूंटी छोड़ दी और आगे बढ़ा, मगर उसी समय एक हंसी की आवाज गूंज गई और वह पुतली अपनी जगह पर जोर से नाच उठी। उसका तलवार वाला हाथ उठा और इस तेजी से घूमा कि अगर वह मोमबत्ती वाला आदमी फुर्ती से जमीन पर बैठ न जाता तो जरूर कट कर दो टुकड़े हो जाता।

पुतली पहिले की तरह तेजी से नाचने लगी और ये तीनों आदमी डर के साथ उसकी तरफ देखने लगे। मोमबत्ती लिये हुए आदमी पीछे पलट पड़ा जिससे पुतली का घूमना बन्द हो गया और तीनों आपस में कुछ सलाह करने लगे। एक ने कहा, "खूंटी को छोड़ देना ही गलती हुई।" दूसरा बोला, "अगर फुर्ती न की जाती तो जरूर सिर कट जाता।" तीसरा बोला, "पुनः खूंटी दबाओ और आगे बढ़ो, देखो क्या होता है।"

फिर पहिले की तरह दो आदमियों ने दोनों खूंटियां दबाईं और तीसरा पुतली के पास गया। पुतली ने जुम्बिश न खाई। वह बेखटके पुतली के पास तक चला गया और वह चुपचाप खड़ी रही मगर जैसे ही ऊपर चढ़ने की नीयत से उसने चबूतरे पर पैर रक्खा वह पुतली पुनः बोल उठी, "हैं यह क्या, क्या वह

शुभ घड़ी आ गई....." इत्यादि वे ही बातें जो पहिली बार उस पुतली के मुंह
से निकली थीं वह पुनः बोल गई।

वह मोमबत्ती वाला आदमी हँसा और बोला, "पुतली, मैंने तेरी चालाकी
पहिचान ली, जरूर तेरे मुंह में ये ही बातें भरी गई हैं जिन्हें तू बार बार दोह-
राती रहेगी, मगर इस बार मैं तेरे धोखे में नहीं पड़ने का!" पीछे की तरफ घूम
उसने उन दोनों आदमियों से कहा, "खूंटी को मजबूती से दबाए रहना, छोड़ना
नहीं!" और चबूतरे पर चढ़ वह ताली पुतली के हाथ से ले ली, पुतली ने कुछ
उज्र न किया और वह तेजी से चल कर वापस अपने साथियों के पास पहुंच
गया। तीनों खुशी खुशी उस अद्भुत ताली को देखने लगे।

मगर है, यह क्या, यह डरावनी आवाज कैसी?

एक भयानक आवाज जो किसी दैत्य की गरज मालूम होती थी यकायक
उस कहरे घर में गूंज उठी जिसने इन तीनों आदमियों का कलेजा दहला दिया।
सब लोग ताज्जुब से इधर उधर देखने लगे मगर कहीं कोई नहीं, मोमबत्ती वाले
ने हाथ ऊंचा करके सब तरफ देखा मगर वहां था ही कौन जो नजर आता।
आखिर एक ने कहा, "चलो कुछ होगा, अपना काम तो बन ही गया, वापस
लौटो और...!"

बोलने वाले की बात उसके मुंह में ही रह गई, उसका कलेजा उछल पड़ा।
एक डरावनी हंसी उस बड़े कमरे में गूंज उठी और तब यकायक ही एक तेज
आवाज हुई जैसे कोई बड़ा पटाका छूटा हो। आग की एक लपट कमरे के
बीचोबीच नजर आई जो पल पल में बढ़ने लगी। तीनों आदमी डरते और कांपते
हुए उस लपट को देखने लगे।

आग की तेजी बढ़ने लगी और तब उसके अन्दर से उसी भयानक तिलिस्मी
भूत की डरावनी सूरत पैदा हुई जिसे हमारे पाठक बार बार देख चुके हैं।

इस भयंकर आसेब को यकायक अपने सामने पैदा होते हुए देख इन तीनों
की डर के मारे अजीब हालत हो गई। किसी के मुंह से कोई आवाज न निकली
बल्कि उछलते हुए कलेजों के साथ तीनों दुष्ट अपनी अपनी जान की खैर मनाने लगे।

वह डरावनी सूरत इनकी तरफ बढ़ी और भयानक स्वर में एक बार जोर
से हंसी, तब खौफनाक आवाज में उसके मुंह से निकला, "हाः हाः हाः, क्या
मजे में ताली ले ली और चले तिलिस्मी खजाना निकालने! बाप का माल समझ
लिया? यह न सोचा कि तिलिस्म बनाने वाले क्या इतने बड़े बेवकूफ होंगे कि

तुम्हारे जैसे कमीनों से अपनी चीज की हिफाजत न कर सकेंगे! लाओ दो वह
ताली मुझे और सीधे से इस कमरे के बाहर निकल जाओ, नहीं एक एक को
कच्चा ही खा जाऊंगा!!"

तिलिस्मी शैतान आगे बढ़ा और उसका हाथ जिसमें केवल हड्डियां ही नजर
आ रही थीं इनकी तरफ उठा। डर के मारे मोमबत्ती वाले आदमी के हाथ से
ताली जमीन पर गिर पड़ी जिसे उस आसेब ने उठा लिया और तब पीछे हट
गया। जिस जगह वह खड़ा था वहां से एक उछाल उसने मारी और सीधा उस
चबूतरे पर पुतली के पास जा पहुंचा, ताज्जुब की बात थी कि उस पुतली ने एक
बार जुम्बिश भी न खाई, भूत ने वह ताली पुनः उसके हाथ में पकड़ा दी और
तब नीचे कूद कर उन खूंटियों के पास पहुंचा। उसने अपनी हथेली रख कर
मजबूत धक्का एक खूंटी को दिया, वह दीवार के अन्दर घुस गई, दूसरी खूंटी
के पास पहुंचा और उसको भी उसी तरह धक्का दिया जिससे वह भी दीवार में
घुस कर गायब हो गई। तब पीछे हट कर डरावनी नजरों से इन लोगों की
तरफ देख कर वह बोला, "बस सीधे से जहां से आए हो वहीं चले जाओ और
फिर कभी यहां आने का नाम मत लेना, नहीं जीता न छोड़ूंगा। बस चलो,
निकलो यहां से और खैरियत मनाओ कि तुम लोगों को जीता छोड़े जाता हूं। याद
रक्खो कि मैं तिलिस्मी भूत हूं और तुम्हारे जैसे बेईमानों से तिलिस्म की हिफाजत
करने के लिए ही तिलिस्म बनाने वाले मुझे यहां मुकर्रर कर गए हैं!"

आग की तेज लपट उठी और वह शैतान गायब हो गया!

डरते और कांपते हुए तीनों आदमी कुछ देर तक एक दूसरे की तरफ देखते
रहे तब पीछे की तरफ भागे।

सीढ़ियों पर उनकी आहट पा गोपालसिंह ने पूछा, "मिल गई वह ताली?"
पर जवाब देने की किसको ताब थी! दो ने उनकी कुर्सी उठाई और तीसरे ने
ताला हटा कोठरी का दर्वाजा खोला, तब तीनों डरते और कांपते उस जगह से
बाहर निकल गए। वहां फिर पहिले की तरह सन्नाटा हो गया।

पाँचवां बयान

अपने छोटे कमरे में पलंगड़ी पर पड़ी देवीरानी कुछ सोच रही हैं। उनकी
आँखें बन्द हैं और वे बिल्कुल चुपचाप पड़ी हुई हैं, पर उनके पैताने बैठी उनके
पाँव दबाती हुई मैना भली भांति जानती है कि वे नींद में गाफिल नहीं हैं बल्कि

किसी बहुत ही गम्भीर चिन्ता में डूबी हुई हैं क्योंकि अभी कुछ ही देर पहिले तक वे मैना से बातें कर रही थीं और उससे तरह तरह के सवाल पूछ रही थीं, तथा उसी की एक बात सुन कर यकायक चुप हो इस भाव से पड़ गई हैं। उनकी यह अवस्था देख मैना की भी हिम्मत नहीं पड़ती है कि कुछ बोले या कहे और वह पैताने बैठी चुपचाप केवल पैर दबाती जा रही है।

बहुत देर इसी तरह गुजर गई, अब बूआजी की सांसें लम्बी और गहरी हो जाने से मैना को अनुमान हुआ कि शायद सचमुच ही वे नींद में गाफिल हो रही हैं, फिर भी उसकी हिम्मत न हुई कि कुछ पूछे या कह कर यह जानने की कोशिश करे कि सचमुच वे सो गईं या अभी जाग ही रही हैं। उनका पैर दबाना बन्द करने की भी उसकी हिम्मत न हुई और वह उसी तरह बैठी पांव दबाती रही।

पर अन्त में मैना को विश्वास करना पड़ा कि देवीरानी गाफिल सो गईं। उसने कुछ देर के लिए पैरों पर से हाथ उठा लिया और गहरी निगाह बूआजी के चेहरे पर डाली। उन्हें कुछ जुम्बिश खाते न देखा तो बहुत ही धीरे से बोली, "सो गईं" तब आहिस्ते से उठ खड़ी हुई। जरा देर खड़ी रह कर उनकी तरफ देखती रही, जब विश्वास हो गया कि वे सचमुच नींद में गाफिल हो गई हैं तब पलंगड़ी के पास से हटी और दर्वाजे के पास आई। कुछ देर वहां खड़ी रह कर भी देखती रही, और तब आहिस्ते से दर्वाजा खोल कोठरी के बाहर निकल गई, पल्ले पुनः वैसे ही भिड़का दिये।

इस बाहरी कमरे में भी इस वक्त एक दम सन्नाटा और निराला था और इसी के एक कोने में मैना के सोने की जगह थी। उसने अपना बिछावन ठीक किया और चाहा कि उस पर पड़ जाय, पर फिर न जाने क्या सोच कर वहां से हटी और एक खिड़की के सामने जाकर खड़ी हो गई जहां से बाहर दूर दूर तक का दृश्य नजर आ सकता था, मगर इस समय रात की अंधियारी ने सब कुछ अपनी काली चादर के अन्दर छिपा रक्खा था। मैना देर तक वहां खड़ी रही और धीरे धीरे उसकी निगाह जमने लगी। आकाश में यद्यपि चन्द्रदेव के दर्शन तो नहीं हो रहे थे पर तो भी तारे पूरी तरह छिटके हुए थे जिनकी हलकी रोशनी में दूर तक के पहाड़ी मैदान और जंगलों का दृश्य बड़ा मनोहर दिखाई पड़ रहा था। ठंढी हवा सिहरावन जान पड़ती थी और मन करता था कि खिड़की के सामने से हट जाय, फिर भी न जाने क्या सोचती हुई मैना उसी जगह खड़ी रही, हां एक चादर जरूर उसने अपने बदन पर डाल ली।

यकायक दूर आसमान में मैना को कुछ दिखाई पड़ा जिसके साथ ही वह चमक गई और खिड़की से कुछ बाहर को झुक गौर से देखने लगी। आतिश-बाजी की तरह की कोई चीज, फुलझड़ी या ऐसी कुछ छूटी थी, जिसकी रोशनी कुछ देर तक फैली और फिर बुझ गयी। मैना और भी ज्यादे गौर से उस तरफ देखने लगी।

थोड़ी देर बाद दो आकाशबान एक साथ छूटते नजर आए जिनमें एक का रंग लाल और एक का हरा था। खूब ऊंचे आकाश में पहुंच कर ये बान फूटे और उनमें से रंग बिरंगे सितारे छिटक कर गिरते नजर आये, साथ ही मैना के मुंह से निकला—"आ पहुंचे, अब मुझे भी तैयार हो जाना चाहिए, मगर पहिले जवाबी इशारा कर दूं।"

मैना एक आलमारी के पास पहुंची और उसमेंसे कुछ सामान निकाल कर पुनः खिड़की के पास लौटी। कोने में जलते हुए शमादान को उठा कर खिड़की के पास किया और उसकी लौ में हाथ वाली चीज की बत्ती जलाकर झट बाहर की तरफ फेंक दिया, साथ ही दो लम्बी लपटें वहां से उठीं जिसमें से एक का रंग लाल और दूसरी का हरा था। लपटें बहुत तेजी से बढ़ती हुई ऊंचे आस-मान तक पहुच गईं और उनमें से वैसे ही सितारे निकल पड़े जैसे अभी अभी उसने अपने सामने फैलते देखे थे, इसके बाद फिर सब तरफ सन्नाटा और अंधेरा हो गया। मैना ने खिड़की के पल्ले बन्द कर दिये और पीछे हटी। दीया ठिकाने रख वह एक बार देवीरानी वाले कमरे के दर्वाजे के पास जाकर खड़ी हुई और कुछ देर तक आहट लेती रही, जब शंका की कोई बात मालूम न हुई तो वहां से हटी और इस कमरे का दर्वाजा खोल बाहर निकल गई। अपने पीछे दर्वाजा उसी तरह भिड़का दिया।

काले लबादे से अपना समूचा बदन ढांके एक आदमी न जाने कब से इसी जगह एक मोटे खम्भे की आड़ में छिपा खड़ा था। मैना को कमरे के बाहर निक-लता देख उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और धीरे से एक बार चुटकी बजाई। मैना चुटकी की आवाज सुनते ही उस तरफ घूमी और उस आदमी के पास जा खड़ी हुई जिसने उसको देखते ही पूछा, "सब ठीक है?" मैनाने जवाब दिया, "हां, बूआजी गहरी नींद में गाफिल हैं और हमलोग बेखटके अपना काम कर सकते हैं। मगर जल्दी करना चाहिए, वे लोग आ रहे हैं।" जवाबमें उस आदमी ने कहा, "हां, मैंने भी उनका इशारा और तुम्हारा जवाब देखा, पर कोई हर्ज नहीं, इधर

भी सब तैयार ही है।" उसने मैना का हाथ पकड़ लिया और दोनों आदमी अन्धकार के पर्दे में किसी तरफ को निकल गए।

मगर दोनों में से कोई भी देख न सका कि जिस दर्वाजे से निकल कर अभी अभी मैना बाहर आई है वहाँ, कमरे के भीतर की तरफ, कोई आकर खड़ा हुआ है और दर्वाजे की फांक में से उसने न केवल इन दोनों को देख ही लिया बल्कि इनकी बातें भी बखूबी सुन ली हैं।

यह और कोई नहीं स्वयं देवीरानी थीं। मैना के उस आदमी के साथ चले जाने के बाद भी वे कुछ सायत तक उसी तरह खड़ी रहीं, तब धीरे से बोलीं, "बेशक मेरा ख्याल ठीक है और यह कम्बख्त कदापि मेरी मैना नहीं बल्कि कोई और ही है। इसमें भी कोई शक नहीं कि इसकी नीयत बुरी है। मुझे होशियार हो जाना और अपने बचाव का बन्दोबस्त कर डालना चाहिए।"

देवीरानी पीछे हटीं और दर्वाजा बन्द करके वापस लौटती हुई पुनः अपने कमरे में पहुंच गईं जहां कुछ ही देर पहिले मैना उन्हें नींद में गाफिल समझकर छोड़ गई थी। उन्होंने इस कमरे का दर्वाजा भीतर से पक्का बन्द कर लिया और चिराग के पास पहुंच उसकी रोशनी तेज की, तब एक आलमारी के पास पहुंचीं जिसमें यद्यपि ताला लगा हुआ तो न था, फिर भी पल्ले मजबूती से बन्द थे। इसे खोला और भीतर घुस कर पुनः बन्द कर लिया। इस आलमारी के अन्दर टांड़ या खाने वगैरह बिल्कुल न थे और यह किसी भी तरह के सामान से एकदम खाली थी। कोई तर्कीब देवीरानी ने ऐसी की कि इस अलमारी की बगली दीवार का एक तख्ता पीछे को झूल गया और एक पतला सा रास्ता दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर एकदम अंधेरा था, मगर देवीरानी ने कोई फिक्र न की और अंधेरे में ही टटोलती हुई इस रास्ते के अन्दर चली गईं।

लगभग आधी घड़ी तक देवीरानी उस अलमारी के अन्दर रहीं तब बाहर निकलीं, कमरे के दर्वाजे की सांकल जो बन्द कर दी थी खोल दी, चिराग गुल कर दिया, और पलंगड़ी पर जाकर सो रहीं। आलमारी का पल्ला कुछ देर तक खुला रहा तब धीरे धीरे बन्द हो गया, कमरे में एक दम सन्नाटा और अंधेरा छा गया।

मगर ऐसा बहुत थोड़ी देर रहा। मुश्किल से देवीरानी ने दो एक करवटें ली थीं कि इस कमरे के दर्वाजे के बाहर कुछ आहट हुई और किसी ने पल्लों को जरा सा खोला, भीतर की आहट ली, और सब कुल साबिक दस्तूर पा अपनी

बगल के किसी आदमी से दबी जुबान में कहा, "सब ठीक है, बूआजी नींद में गाफिल हैं, मगर चिराग बुझ गया है। आप यहीं रहें, पहिले मैं जाकर चिराग बाल आऊं और जरा आहट भी लेती आऊँ।"

यह बोलने वाली मैना थी जिसने दर्वाजा खोला और कमरे के अन्दर घुसी। सब से पहिले चिराग के पास गई और उसे बाला, तब पलंगड़ी की तरफ घूमी और गौर से देर तक देखती रही। देवीरानी गहरी नींद में डूबी हुई थीं और उनके नथुनों से हल्की घुर्राटे की आवाज निकल रही थी।

मैना दर्वाजे के पास लौटी और बोली, "सब ठीक है, बूआजी गहरी नींद में हैं मगर जल्दी कीजिए, वे लोग न जाने कब आ पहुंचें।"

कह कर मैना एक बगल हट गई और साथ ही पल्ले को पूरी तरह खोल एक आदमी इस कमरे में घुस आया जिसका तमाम बदन काले कपड़ों से ढंका हुआ था। वह सीधा बूआजी की पलंगड़ी के पास पहुंचा, कुछ सायत तक देखता रहा तब कोई चीज निकाल कर उनकी नाक के पास किया। इसमें शक नहीं कि वह तेज बेहोशी की दवा थी जिसने बड़ी तेजी से असर किया, बूआजी का सर दो एक दफे इधर से उधर को हिला मगर वे अपनी आंखें न खोल सकीं और कुछ ही सायत बाद लम्बी सांसों ने बता दिया कि वे गहरी बेहोशी में डूब गई हैं।

काले कपड़े वाला आदमी जरा देर उसी तरह रुका रहा। जब उसने समझ लिया कि अब कोई डर नहीं है, उसने पीछे घूम कर चुटकी बजाई। उसी की तरह काले कपड़ों में लिपटे दो आदमी भीतर आए जिनकी तरफ देख उस पहिले आदमी ने कुछ इशारा किया। वे दोनों सीधे बूआजी के पलंग के पास पहुंचे, एक ने सिरहाने और दूसरे ने पैताने से पकड़ा और देवीरानी को उठाये फुर्ती के साथ कमरे के बाहर निकल गए।

उस आदमी ने पुनः चुटकी बजाई और एक नई शक्ल दर्वाजे पर आ खड़ी हुई। यह क्या हमारी आखें गलती कर रही हैं या किसी तरह का धोखा है? नहीं जरूर किसी तरह का धोखा ही है, क्योंकि यह आने वाली सूरत शक्ल चाल ढाल और पौशाक सब तरह से ठीक देवीरानी ही बनी हुई है।

यह नकली देवीरानी कमरे के अन्दर आ गई और उस आदमी का इशारा पाकर उसी पलंगड़ी पर जा लेटी। उस आदमी ने आगे बढ़ कर उसके कपड़े ठीक किए, चादर जो बूआजी ओढ़े हुए थीं उसे उढ़ाई और तब कान के पास मुंह करके धीरे से कहा, सब तरह से होशियार रहना। तुम्हें जो कुछ करना

है मैं अच्छी तरह से समझा चुका हूं, डरना नहीं और मुझे हर वक्त अपने पास मौजूद समझना।"

नकली बूआजी ने गर्दन हिलाई और तब चुपचाप नींद में गाफिल की तरह पड़ गई। वह आदमी पीछे हटा, मैना से उसने कुछ बातें कीं और तब दोनों इस कमरे के बाहर हुए, जिसका दरवाजा पुनः पहिले ही की तरह भिड़का दिया गया। मैना बाहर वाले अपने बिस्तर पर जा पड़ी और वह आदमी जरा देर बातें करने के बाद कमरे के बाहर निकल गया। सब तरफ सन्नाटा हो गया।

मगर पहिले की ही तरह इस बार का भी सन्नाटा कुछ ही देर के लिए था। मुश्किल से एक दो घड़ी बीती होगी कि वही आलमारी जिसके अन्दर देवीरानी घुसी और फिर निकली थीं पुनः खुली और चिराग की मद्धिम रोशनी ने एक नकाबपोश को उसके अन्दर खड़ा दिखलाया। यह नकाबपोश कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा, तब आलमारी से बाहर निकल आया और दबे पांव देवीरानी की पलंगड़ी के पास पहुंचा, कुछ देर खड़ा रहा, जब समझ गया कि वे गहरी नींद में गाफिल हैं तो वहां से हटा और कमरे का दर्वाजा खोल बाहर वाले कमरे में झांका। इस कमरे में एक दम अंधेरा था, पर खुली खिडकी की राह तारों की रोशनी जो कुछ भीतर आ रही थी उसने एक बगल बिछावन पर पड़ी मैना की सूरत दिखाई। देखते ही वह कुछ चौंक गया, पर फिर आहिस्ता आहिस्ता चलता हुआ मैना के पास पहुंचा और क्षण भर खड़ा रहा। जब समझ गया कि वह भी गहरी नींद में गाफिल है तो हटा और उसके सदर दर्वाजे के पास पहुंचा। देखा कि वह भीतर से बन्द है और सांकल लगी हुई है। सांकल हटा दर्वाजा खोला और कुछ देर बाहर की तरफ झांक इधर उधर की आहट लेता रहा, जब विश्वास हो गया कि सब कुछ साबिक दस्तूर है और कहीं कोई चलता फिरता नजर नहीं आता तो पीछे हट दर्वाजा बन्द कर दिया और सिकड़ी चढ़ा दी; तब मैना के पास पहुंचा और उसके माथे पर हाथ रख कर दबाया।

मैना कुछ चकपकाई, पर नींद की पूरी झोंक में थी, केवल करवट बदल कर रह गई। नकाबपोश ने फिर सिर पर हाथ फेरा और धीमे स्वर में पुकारा—"मैना, मैना!" दो ही आवाज के बाद मैना की आंखें खुल गईं और वह चौंक कर बोल उठी, "कौन?" नकाबपोश ने जवाब दिया, "मैं हूं शेरसिंह, उठो और बताओ, सब कुछ ठीक है तो?"

"अहा आप हैं, आ गए!" कहती हुई मैना उठ कर बैठ गई। तब बोली,

"जी हां सब कुछ ठीक है, मगर आपने बड़ी देर लगा दी!" शेरसिंह ने जवाब दिया, "हां मुझे देर लग गई, कुछ ऐसा ही मामला आ पड़ा था। मगर तुमने मेरा इशारा तो देख लिया था?" मैना ने जवाब दिया, "जी हां, मैंने देखा था और जवाब भी दिया था, फिर भी उस बात को काफी देर हो गई होगी। मैंने कोशिश की कि जागती रहूं पर न जाने कब कम्बख्त नींद ने धर दबाया और मैं गाफिल सो गई।" शेरसिंह बोले, "खैर उठ जाओ और बूआजी को जगाओ, मुझे उनसे कुछ जरूरी बात करनी है।"

मैना खड़ी होकर बोली, "ठीक है, अभी जगाती हूं। वे आप ही के बारे में बात करती करती सो गई हैं। मगर यह तो कहिए आप यहां आये कैसे, मैं तो दर्वाजा बन्द करके सोई थी!"

शेरसिंह हंस कर बोले, "हां और वह अब भी बन्द है, खैर तुम चलो बूआजी को जगाओ।"

दोनों आदमी भीतर बूआजी वाले कमरे में पहुंचे। मैना पलंगड़ी के पैताने बैठ गई और धीरे धीरे बूआजी का पैर दबाने लगी। थोड़ी देर बाद उन्होंने आंखें खोल दीं और पूछा, "कौन है, मैना?" मैना बोली, "जी हां मैं ही हूं, जरा उठियेगा? देखिए सरदार साहब आए हैं और कुछ जरूरी बात करना चाहते हैं!"

"कौन है! शेरसिंह, तुम आ गए?" कहती हुई देवीरानी उठ कर बैठ गईं। मैना ने चिराग की रोशनी तेज कर दी और शेरसिंह ने आगे बढ़ कर बूआजी के पैर छूए जिन्होंने सिर पर हाथ फेर कर कहा, "बड़ी देर कर दी तुमने शेरसिंह, आओ, और कहो क्या खबर है?"

शेरसिंह ने पास बैठते हुए कहा, "सब ठीक है, आपकी कृपा से काम पूरा पूरा ठीक उतरा और मैं सीधा वहीं से चला आ रहा हूं। जो कुछ जैसे जैसे आपने कहा था वैसे ही किया गया और पूरा भी हुआ। अब आगे आप जैसे जो कुछ कहें वैसे ही किया जाय।"

बूआजी ने कुछ सोचते हुए कहा, "जो काम तुम करने गए थे वह हुआ?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "जी हां एक दम पूरा पूरा। आप का खयाल बिल्कुल ठीक था और हम लोगों की कारंवाई भी बिलकुल सही उतरी। मैंने मैना के जरिये सब हाल आपको कहला भेजा था और उसने आपसे कहा ही होगा।"

देवी०। हां, उसने सब कुछ मुझे कह दिया है और मैं तभी से यह सोच रही हूं कि आगे अब क्या करना मुनासिब है, पर कुछ ठीक निर्णय नहीं कर पाई

हूं। तुमने कोई राय अगर कायम की हो तो बताओ।

शेर०। मैं तो बिल्कुल आपके आज्ञानुसार चल रहा हूं, और जो कुछ जैसे जैसे आपने कहा वैसे ही करता चला आ रहा हूं, आगे कैसे क्या करना होगा सो मैंने कुछ सोचा नहीं और न कुछ सोचना चाहता ही हूं। आपकी बुद्धि मुझसे बहुत तेज साबित हुई है अस्तु आगे भी अब जो कुछ करना हो आप ही बताइये।

देवी०। (माथे पर हाथ फेरते हुए) अच्छा मैं इस मामले पर गौर करूंगी और जो कुछ मुनासिब होगा बताऊंगी, मगर इस समय मेरी राय है कि ये बातें सुबह पर के लिए छोड़ दी जांय। तुम थके मांदे चले आ रहे हो, डेरे पर जाओ और आराम करो, सुबह जैसा होगा तय कर लिया जायगा।

शेरसिंह ने कुछ कहना चाहा पर न जाने क्या बात सोच कर रुक गए, कुछ देर चुप रहे, तब धीरे धीरे बोले, "अगर आपकी यही मर्जी है और आप समझती हैं कि जल्दी की कोई बात नहीं है तो मैं वैसा ही करूंगा। कहिए तो इस वक्त जाऊं और सवेरे हाजिर होकर जैसा कुछ हुक्म हो सुन लूं।"

देवी०। हां मेरी राय में यही मुनासिब होगा, ऐसी कोई खास जल्दी की तो बात है भी नहीं!

शेर०। (कुछ रुक कर) जी नहीं, बिल्कुल नहीं, जल्दी किस बात की है! अच्छा तो फिर हुक्म हो तो मैं जाऊं। बहुत थक भी गया हूं, और आप भी कच्ची नींद से जागी हैं।

देवी०। हां तुम इस वक्त जाओ मगर सुबह जल्दी आना, उसी वक्त तुमसे खुलासा हाल सुनूंगी।

शेरसिंह उठ खड़े हुए, देवीरानी को सलाम किया और बाहर निकले, मैना से दो बातें की और तब उससे बिदा हो महल के बाहर निकल अपने डेरे की तरफ चले।

धीरे धीरे चलते हुए शेरसिंह अपने डेरे पर रुके। नौकर को आवाज दी जिसने फौरन ही उठ कर दर्वाजा खोला, ये अपने कमरे में पहुंचे और कपड़े बदल हाथ मुंह धो सीधे पलंग पर जा पड़े। नौकर के पूछने पर कह दिया, "नहीं मैं इस वक्त कुछ भोजन नहीं करूंगा। तुम भी जाओ सो रहो, इस वक्त और कोई काम नहीं है।" लाचार नौकर चला गया और शेरसिंह चुपचाप अपने पलंग पर पड़े तरह तरह की बातें सोचने लगे।

"यह बात आखिर क्या है! यहां की बिल्कुल हवा ही घूम गयी सी जान

पड़ती है। मैना का रंग ढंग बदला हुआ है, और बूआजी की तो कुछ हालत ही समझ में नहीं आती। मैना पूछती है--मैं कमरे के अन्दर कैसे आ गया? बूआजी कहती हैं--जाओ इस वक्त सो रहो सुबह बातें होंगी। अबकी उनका सख्त हुक्म था कि चाहे वे किसी हालत में हों लौटते ही मैं उनसे मिलूं और राजा साहब का पूरा पूरा हाल सुनाऊं। दोनों में से कोई भी नहीं पूछता कि गोपालसिंह का क्या हुआ, या वे कहां हैं, कैसे हैं, और कैद से छूटे कि नहीं, जब कि दोनों ही जानती हैं कि ......!

"यह तो कहो अच्छा ही हुआ कि मैं गोपालसिंह को भीतर तहखाने में ही छोड़ आया और सीधा वहां तक नहीं ले गया। क्या जाने, जैसा कि मेरा सन्देह है, वहां अगर कोई धोखा है तो उनका यकायक इन लोगों के सामने आ जाना किसी तरह अच्छा न होता। मुझे बहुत होशियार हो जाना और बहुत समझ बूझ कर काम करना चाहिए, जरूर यहां कुछ दाल में काला है।

"क्या कहीं ऐसा तो नहीं कि दिग्विजयसिंह कोई चालाकी कर गए हों? एक अरसे से मुझे उनके रंग ढंग बुरे नजर आ रहे थे। खुद बूआजी भी बराबर कहती रहती थीं कि वह धोखा दे तो ताज्जुब नहीं, मगर मेरे सावधान करने पर हंस कर टाल जाती थीं और कहती थीं कि मैं अपनी फिक्र आप कर लूंगी, तुम बचे रहना! तब कहीं ऐसा तो नहीं है कि राजा साहब ही कुछ कर्तूत कर गये हों और बेचारी सीधी सादी बूआजी उनके चंगुल से अपने को बचा न पाई हों। ऐसा होना कुछ असम्भव नहीं।

"मैंने भी अच्छा ही किया कि राजा साहब का कुछ भी जिक्र नहीं छेड़ा, यह सोच कर कि पहली नींद की झोंक में शायद उनके दिमाग से पिछली बातें निकल गई हों। मेरी इच्छा हुई थी कि कुछ कहूं पर रुक गया सो बहुत अच्छा हुआ। अगर बूआजी ही होतीं तो जरूर कुछ कहतीं, मगर उन्होंने गोपालसिंह के बारे में कुछ भी जिक्र न उठाया! कहां तो उनके बारे में इतनी चिन्ता तरद्दुद दूरदर्शिता, और कहां यह चुप्पी! यह बात तो कुछ मेरी समझ में नहीं आती।

"नहीं नहीं, जरूर कहीं पर कोई गड़बड़ी है और मुझे जल्दी से जल्दी सही बात का पता लगा डालना चाहिए क्योंकि अगर, जैसा कि मुझे नजर आता है, कुछ दाल में काला है और दिग्विजयसिंह का इसमें कुछ हाथ है तो जरूर उन्होंने मेरे लिए भी कोई न कोई जाल फैला रक्खा होगा और ताज्जुब नहीं कि मैं भी उसकी लपेट में आ जाऊं। उस हालत में सब कुछ किया कराया और सोचा

बिचारा धरा रह जायगा और तब ताज्जुब नहीं कि बेचारे गोपालसिंह भी पुनः शैतानों के चंगुल में पड़ जांय। ऐसा होना कोई नामुमकिन नहीं है। तब फिर क्या करूँ? यह थोड़ी सी रात जो बाकी है बर्बाद नहीं जाने देना चाहिए, बल्कि बेहतर तो यह होगा कि सबके पहिले राजा गोपालसिंह को ही सावधान कर दिया जाय। हाँ बस यही ठीक है, मुझे इस समय पहिले उन्हीं को खबरदार कर देना चाहिए।

"ओह क्या सोचा था और क्या हो गया!" कहते हुए शेरसिंह ने बेचैनी के साथ एक करवट ली और उठ कर बैठ गये। कुछ देर तक अपने बिगड़े खयालों को दुरुस्त करते रहे, तब पलंगड़ी के नीचे उतरे, खूंटी से टंगे अपने कपड़ों को उतार कर पहिना और हर्बे लगाए, एक आलमारी खोली और उसमें से कुछ निकाल कमर में लगाया, तब बिना नौकर चाकर किसी से कुछ कहे चुप-चाप चोर-दर्वाजा खोला और अंधेरे में छिपते हुए किसी तरफ को निकल गये।

इसके दो घड़ी के बाद हम शेरसिंह को रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने के अन्दर वाली उस बारहदरी में पहुंचते हुए देखते हैं जिसके बीचोबीच चाँदी के सिंहासन पर काले पत्थर की बनी पिशाच की मूर्ति रक्खी थी*। वे यहां किस राह से आये यह तो हम नहीं कह सकते पर इसमें कोई शक नहीं कि उनकी सूरत से घबराहट और परेशानी झलक रही है और वे बदहवासी की सी हालत में इधर उधर घूम कर किसी की तलाश कर रहे हैं।

आस पास के कमरे कोठरियों और दालानों में घूम घूम कर शेरसिंह अपने हाथ की लालटेन की मदद से सब तरफ देख भाल कर रहे हैं। थोड़ी थोड़ी देर के बाद वे उस बड़ी बारहदरी में (जहां पिशाच की मूरत थी) लौटते हैं और वहां किसी को खोजने पर न पाकर पुनः किसी तरफ को निकल जाते हैं।

इसी तरह घूमते फिरते और तलाश करते हुए शेरसिंह ने उस बड़े तहखाने का कोना कोना खोज मारा मगर जिसकी तलाश थी वह कहीं नजर न आया। आखिर लाचार और उदास होकर वे उसी मूरत के सामने सिंहासन के पास फर्श पर बैठ गये और माथे पर हाथ रख कुछ सोचने लगे। आप ही आप धीरे

* रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में खुलासे तौर पर लिखा जा चुका है और यह पिशाच की मूरत वही है जिसके सामने किशोरी की बलि दी जा रही थी जब आनन्दसिंह बचाने के लिए पहुंचे थे। देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरे भाग का अन्त।

धीरे उनके मुंह से तरह तरह की बातें निकलने लगीं--

"जो डर था वही हुआ! राजा गोपालसिंह इस जगह नहीं हैं जहां मैं उन्हें छोड़ गया था और जहां से कहीं हिलने की सख्त मनाही कर गया था। जरूर जिसने देवीरानी और मैना के ऊपर हाथ साफ किया वही उनको भी पकड़ ले गया। इस बात में अब कोई शक नहीं हो सकता क्योंकि एक तो उनको इस तहखाने का कोई हाल नहीं मालूम था कि अपनी मर्जी से किसी तरफ को निकल जाते, दूसरे मैंने उनको ..."

यकायक शेरसिंह चमक उठे। उनके कानों में कोई आवाज गई थी। वे घबड़ा कर इधर उधर देखने लगे। फिर वैसी ही आवाज हुई और तब साफ साफ मालूम हुआ मानों उनके पास ही कहीं कोई हँसा हो। शेरसिंह ने खंजर कमर से निकाल लिया और लालटेन हाथ में लिए उठ खड़े हुए। मगर उस दालान में चारो तरफ अच्छी तरह देखभाल कर डालने पर भी कहीं किसी की सूरत नजर न आई। आखिर लाचार होकर वे पुन: उसी जगह लौट आये और लाल-टेन जमीन पर रख कर एक हाथ से सिर खुजलाते हुए बोले, "क्या मेरे कानों का भ्रम था या सचमुच कोई हँसा!"

यह क्या! यह कौन बोल उठा, "नहीं यह तुम्हारे कानों का भ्रम नहीं!"

शेरसिंह चौंक कर इधर उधर देखने लगे, मगर कहीं कोई होता तब तो दिखलाई पड़ता! आखिर उनसे रहा न गया और वे कह पड़े, "यह कौन बोला?"

इस बार सुन कर भी शेरसिंह को विश्वास न हुआ। उनके सामने वाली पिशाच की मूर्ति के मुंह से आवाज आई, "मैं!"

शेरसिंह दो कदम मूर्ति की तरफ बढ़ गये, तब लालटेन ऊँची कर गौर से उसको देखते हुए बोले, "क्या यह मूर्ति बोल रही है!"

मूर्ति के मुंह से जवाब निकला, "हाँ मैं ही बोला हूं।"

यह क्या बात है! आज तक कभी किसी ने भी तो इस मूरत को बोलते नहीं सुना। पत्थर की निर्जीव मूरत बोल ही कैसे सकती है! तब क्या यह कोई तिलिस्मी खेल है? अपना दिल कड़ा कर शेरसिंह ने मूरत की तरफ गर्दन उठाई और कहा, "तुम कौन हो?"

मूरत०। मैं इस तहखाने का पहरेदार हूं।

शेर०। तो क्या तुममें बोलने की भी ताकत है?

मूरत०। सिर्फ बोलने की ही नहीं बल्कि और भी कई काम कर सकने की

मुझमें ताकत और कुदरत है। इस समूचे तहखाने में कहां क्या होता है यह देखते रहना और अगर कोई गैर या दुश्मन आ जाय तो उसे पकड़ लेना मेरा काम है।

शेर०। तो क्या तुम चल फिर सकते हो ?

मूरत०। हां अगर जरूरत पड़े तो। मगर बहुत से काम तो मेरे इशारे मात्र से हो जाते हैं और मुझे अपनी जगह से हिलने की भी जरूरत नहीं पड़ती।

शेर०। (सिर हिला कर) मगर मुझे विश्वास नहीं होता। मेरी समझ से तो तुम कोई चालाक या ऐयार हो जो किसी तरह से इस मूरत के अन्दर पहुंच गए हो और वहां से बोल रहे हो, क्योंकि ताज्जुब नहीं कि यह बड़ी मूरत भीतर से पोली हो।

मूरत०। (जोर से हँस कर) तुम्हारे जो मन में आवे समझा करो मगर उससे मेरी हुकूमत में फर्क नहीं पड़ सकता और न मेरे कर्तब में। मैं यहां की हिफाजत के लिए बैठाया गया हूं और वही काम बराबर करता रहता हूं।

शेर०। अगर कोई गैर या दुश्मन आ जाय तो तुम क्या करोगे ?

मूरत०। (हँस कर) वही करूंगा जो मैंने उस नौजवान के साथ किया जो कुछ देर हुआ यहां आ पहुंचा था।

शेर०। (जिनका कलेजा यह सुन धड़क उठा) वह कौन था और तुमने उसके साथ क्या किया ?

मूरत०। वह कौन था इसे बताने की जरूरत नहीं क्योंकि तुम उसे बखूबी जानते हो, पर उसके साथ मैंने क्या किया यह मैं बता सकता हूं। मैंने उसे तिलिस्म में बन्द कर दिया जहां से अब वह जिन्दगी भर नहीं निकल सकता।

शेर०। (सिर हिला कर) नहीं ऐसा होना नामुमकिन है, यह किसी तरह नहीं हो सकता !

मूरत०। (जोर से हँस कर) यह तुम्हारा गलत ख्याल है। मेरे आगे किसी का जोर नहीं चल सकता। यह पूरा तहखाना मेरी हुकूमत के अन्दर है और यहां मैं जिसके साथ जो चाहूं कर सकता हूं।

शेर०। मगर मुझे विश्वास नहीं होता, ऐसा कभी हो नहीं सकता।

मूरत०। (पुनः हँस कर) शायद ऐसा तुम उस चीज के भरोसे पर कह रहे हो जिसे किसी समय यहां छिपा कर रख गये थे। पर अब वह चीज भी तुम्हारे कब्जे में न रही, मैंने उसे ले लिया और उसके असली मालिक के पास पहुंचा

दिया, जिसने अपना काम शुरू भी कर दिया होगा।

शेरसिंह के मुंह से घबराहट की आवाज निकल गई और उनकी बेचैन निगाहें पीछे की तरफ घूम गईं। वह मूरत फिर बोली, "मेरी बात का विश्वास न होता हो तो खोज कर देख लो।"

"बेशक मैं ऐसा ही करूंगा।" कहते हुए शेरसिंह उस पिशाच की मूरत के पास से हटे और बारहदरी की दाहिने तरफ वाली दीवार के पास पहुंचे। यहां दीवार के बीचोबीच में एक बड़ा सा ताख (आला) बना हुआ था, उस पर एक जड़ाऊ गुलदस्ता जिसमें बनावटी फूलों का गुच्छा भी था रक्खा हुआ था। ताज्जुब की बात थी कि यह फूलों का गुच्छा एकदम बनावटी था फिर भी इन फूलों में से एक विचित्र खुशबू निकल कर सब तरफ फैल रही थी।

हाथ बढ़ा कर शेरसिंह ने गुलदस्ते के एक फूल को पकड़ लिया और उसको कुछ खास तरह से घुमाया। इसके साथ ही उस ताख के एक बगल का पत्थर पीछे हट गया और वहां एक छोटी आलमारी की तरह छिपी जगह नजर आने लगी। हाथ की लालटेन ऊँची कर शेरसिंह ने उस जगह को अच्छी तरह से देखा और कहीं जब कुछ नजर न आया तो हाथ अन्दर डाल कर भली भांति टटोला मगर कहीं कुछ न मिला, हां एक कागज का टुकड़ा अन्दर पड़ा हुआ जरूर हाथ लगा जिसे इन्होंने निकाल लिया और लालटेन की रोशनी में पढ़ा, सिर्फ इतना लिखा हुआ था :—

"अगर तुम तिलिस्मी किताब की खोज में हो तो समझ लो कि वह अब तुमको हरगिज नहीं मिल सकती।"

शेरसिंह के मुंह से एक चीख निकल गई और वे बरबस बोल उठे— "देवीरानी गईं, मैना गई, गोपालसिंह गए; और वह तिलिस्मी किताब भी गई ! मेरा करा धरा चौपट हो गया और समूची मेहनत पर पानी पड़ गया ! हाय, अब मैं कहां जाऊं और क्या करूं !!"

उस पिशाच की मूरत के मुंह से एक डरावनी हंसी की आवाज निकली और तब सन्नाटा हो गया। शेरसिंह उसी जगह सिर हाथ रख के बैठ गए और उदासी के साथ तरह तरह की बातें सोचने लगे।

छठवां बयान

अजायबघर के बीचोबीच वाले बड़े कमरे में हम इस समय दारोगा साहब को ऊँची मसनद पर कई तकियों के सहारे बैठे कुछ सोचते हुए पाते हैं।

दारोगा से कुछ दूर हट कर एक कमसिन औरत बैठी हुई चुपचाप दारोगा का मुंह देख रही है। पाठक इस औरत को अच्छी तरह पहिचानते हैं क्योंकि यह मायारानी की बड़ी मुंहलगी सखी या लौंडी धनपति है जिससे वे भली भांति परिचित हैं। इसी धनपति से बात करते हुए इसकी किसी बात पर दारोगा जवाब न देकर चुप हो गया है और गम्भीर भाव से कुछ सोचने लगा है। धनपति भी उसको इस प्रकार देख चुप हो गई है और मन ही मन स्वयम् भी कुछ सोचने लगी है। इन दोनों के सिवाय यहां कोई और आदमी नजर नहीं आता और न बाहर ही कहीं से किसी के होने की आहट लगती है।

आखिर कुछ देर के बाद दारोगा ने सिर उठाया और धनपति से कहा, "तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझको इन बातों की खबर कर दी और यद्यपि इस समय मैं कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा हूं कि हम लोगों को क्या करना चाहिए पर इसमें शक नहीं कि मामला कुछ बेढब है और जरूर कोई बाहरी आदमी तिलिस्मी बाग में पहुंच गया है।"

धनपति०। बेशक यही बात है क्योंकि आज तक कभी इस तरह की कोई घटना हम लोगों के देखने में न आई थी।

दारोगा०। तुम्हारा शक किसी के ऊपर नहीं जाता?

धनपति०। यों तो कोई न कोई नया आदमी आता ही जाता रहता है, पर जो दो नये आदमी महल में इधर आ गये हैं उन दोनों ही के बारे में आपको इत्तिला मिल चुकी है। मगर उनमें से किसी का तिलिस्मी मामलों में दखल हो ऐसा तो सोचा भी नहीं जा सकता।

दारोगा०। तुम्हारा इशारा शायद उस औरत की तरफ है जिसकी तीरन्दाजी की तुम एक दिन तारीफ कर रही थीं?

धन०। जी हां, और या फिर वह जिसे कमलिनीजी ने अपनी लौंडी बना कर रखा है और जिसका नाम तारा है*। रात के समय महल के अन्दर रहने वाले ये ही दो नये व्यक्ति हैं पर इनसे और उस घटना से कोई सरोकार हो ऐसा कम से कम मैं तो किसी तरह नहीं सोच सकती, क्योंकि औरत अपने काम में ये दोनों चाहे जितना भी होशियार हों पर दिल की बड़ी ही डरपोक और बुझी हुई तबीयत वाली हैं और मैं दोनों ही को अच्छी तरह जांच कर देख चुकी हूं। इनमें से

---

* यह नाम भी पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में पढ़ आये हैं और यह कौन है इसे बखूबी जानते हैं।

बिन्दो की तो जब से उसकी नानी कूएं में डूब कर मर गई है, बुरी ही बुरी हालत हो रही है और वह इस कदर गमगीन हो बैठी है कि अपनी कोठरी के बाहर तक पैर नहीं निकालती, और दूसरी तारा भी एकदम से बुजदिल है।

दारोगा०। शायद उसी के बारे में तुमने कहा था कि वह कोई भले घर की औरत है, अपने मुसीबत के दिन काटने के लिए यहां आ बैठी है।

धन०। जी हां, और कमलिनीजी ने उसे अपनी सखी बना लिया है, वह हरदम उन्हीं के साथ रहती भी है।

दारोगा०। और इसी सबब से मैं उससे होशियार रहना चाहता हूं।

धन०। क्या आपको छोटी रानी की तरफ से कोई...!

दारोगा०। मुझे जरूर कमलिनी की तरफ से अन्देशा है। यद्यपि उस समय मैं इस बात को नहीं समझ सका था पर अब ठीक देख रहा हूं कि मुन्दर को अपनी इन बहिनों कमलिनी और लाडिली को अपने पास महल में रखने की इजाजत देकर मैंने गलती की। मैंने सोचा था कि मुन्दर इनके साथ रह कर अपनी कमियों को दूर कर लेगी पर सो तो न हुआ उलटे अगर लाडिली नहीं तो कम से कम कमलिनी जरूर कुछ न कुछ समझ गई और आगे चल कर गड़बड़ी पैदा करेगी। वह बहुत ही चलाक और धूर्त औरत है।

धन०। अगर आपका खयाल ही ठीक है और सचमुच ही इनकी तरफ से कोई खतरा है तो आपको इन्हें हटाते कितनी देर लग सकती है!

दारोगा०। हां सो ठीक है, पर अभी उसकी जरूरत नजर नहीं आती, मैं सिर्फ तुमको उसकी तरफ से होशियार कर देना चाहता हूं।

धन०। मैं काफी होशियार हूं और आपने इस सम्बन्ध में जो कुछ बातें कही थीं मुझे अच्छी तरह याद है। अच्छा अब अगर आपकी इजाजत हो तो मैं जाऊं, महल में...

दारोगा०। जरा देर रुक जाओ और मनोरमा आ जाय तब जाओ, शायद कोई काम निकल पड़े।

"मैं भी आ पहुंची।" यह आवाज बाहर से आई और कमरे का एक दर्वाजा जो केवल भिड़का हुआ था खोल कर मनोरमा भीतर आती हुई नजर पड़ी। धनपति उसे देखते ही बोल उठी, "लीजिए ये भी आ ही गई। (मनोरमा की तरफ देख कर) आपको महल में बहुत देर लग गई।"

"हां, एक काम में फंस गई थी।" कह कर मनोरमा ने छिपी निगाहों से

दारोगा की तरफ देख कोई गुप्त इशारा किया जिसे समझ दारोगा बोला, "आओ और यहां बैठ कर उधर का हाल चाल मुझे सुनाओ, मगर पहिले यह कहो कि तुम्हें (धनपति की तरफ देख कर) इससे कोई काम है या मैं इसे जाने दूं! तुम्हारे ही खयाल से मैं अब तक इसे रोके हुआ था।"

मनोरमा ने जवाब दिया, "अच्छा किया जो आप इसे रोके रहे, मुझे इससे एक बहुत ही जरूरी बात कहनी है।"

धनपति को एक तरफ ले जाकर मनोरमा ने बहुत धीरे धीरे उससे कुछ बातें कीं और तब कहा, "जो कुछ मैंने कहा उस पर खूब ध्यान रखना और जरा भी गफलत मत करना, नहीं तो बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा।" धनपति बोली, "आप विश्वास रखिए मैं सब तरफ से चौकन्नी रहूंगी!" मनोरमा ने उसे जाने का इशारा किया और दोनों को सलाम कर वह कमरे के बाहर हो गई।

दरवाजा बन्द कर मनोरमा दारोगाके पास पहुंची और कमर से कुछ निकालती हुई बोली, "लाइए कुछ इनाम दीजिए तो आपको एक खुशखबरी सुनाऊं।" दारोगा उत्कंठा से उसकी तरफ देखता हुआ बोला, "इनाम में मैंने अपने ही को दिया, कहो क्या बात है।" मनोरमा नखरे के साथ बोली, "आपको तो पहिले ही खरीद चुकी हूं, अब आपकी कीमत ही क्या है? कुछ और दीजिए तो बात भी है!"

कहते कहते मनोरमा ने कमर से एक चीठी निकाल कर दारोगा की तरफ बढ़ाई और तब उसके बगल में सटकर बैठती हुई बोली, "लीजिये पढ़िये, तिलिस्मी किताब जिसके लिए आप व्याकुल थे अब हमलोगोंके हाथमें आनाही चाहती है?"

दारोगा साहब ने यह सुनते ही चमककर वह कागज ले लिया और गौर से पढ़ने लगे, एक बार पढ़ कर दुबारा फिर पढ़ा और तब खुशी भरी निगाहों से मनोरमा को देखते हुए बोले, "मानता हूं तुमको, तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा यह काम नहीं कर सकता था। मगर एक बात तो बताओ।"

मनोरमा०। कहिये?

दारोगा०। जरूर ही वह आदमी जिसकी यह चीठी है तुम्हारा ही कोई ऐयार होगा?

मनो०। जी हां।

दारोगा०। तो उसे ऐसी जगह जाने का खयाल क्योंकर पैदा हुआ!

मनो०। बस यही तो बात है।

दारोगा०। क्या तुमने उसे कुछ बताया था!

मनो०। मन तो नहीं करता कि आपसे कहूं पर खैर बताए देती हूं। देखिये आप बार बार मुझसे कहते थे कि दलीपशाह का यह काम नहीं है और न वह किताब उसके पास है, अगर होती तो जिस कदर तकलीफें मैंने उसे दी हैं उनसे घबड़ा कर वह जरूर बतला देता कि वह चीज कहां है, और मैं बराबर आपसे कहती थी कि उसी कम्बख्त का यह काम है और वह चीज अभी तक उसके कब्जे में है, और आखिर मेरा ही खयाल ठीक निकला। उसी पाजी ने वह...

कह कर मनोरमा दारोगा की तरफ झुक गई और दोनों में बहुत धीरे धीरे बातें होने लगीं जिन्हें हम भी सुन न सके।

इस बड़े कमरे के बाहर अन्धकार में छिपे हुए दो आदमी जाने कब से खड़े भीतर का हाल चाल देख रहे हैं। ये अब तक कहां थे या किस तरह इस जगह पर आ पहुंचे यह तो हम नहीं बता सकते परन्तु इसमें शक नहीं कि यह लोग देर से इस जगह मौजूद हैं और यहां जो कुछ हुआ या हो रहा है उसे अच्छी तरह देख सुन रहे हैं, साथ ही बातें भी करते जाते हैं।

एक०। (भीतर देख कर) यही वह मनोरमा है, तुमने कम्बख्त की बातें सुनीं?

दूसरा०। हां, मैं इसे मायारानी के महल में देख चुका हूं, और वह दूसरा धनपति था जो अभी बाहर गया।

पहिला०। और तुम्हारा खयाल है कि वह औरत नहीं बल्कि मर्द है?

दूसरा०। खयाल नहीं यकीन है, और उसके बारे में एक बात आप भी न जानते होंगे। वह कम्बख्त खास इस मनोरमा का ही भांजा है। अपने मतलब के लिए इसी ने उसे औरत बना कर महल में डाल रक्खा है।

पहिला०। अच्छा! मगर तब क्या इस दारोगा को यह बात नहीं मालूम है?

दूसरा०। मेरा खयाल तो यही है कि इसे सब कुछ मालूम है और यह जान बूझ कर ऊपर से ऐसा बना हुआ है मानों कुछ भी जानता नहीं। पर सही बात जो कुछ भी हो, यह भी एक ही छटा हुआ है।

पहिला०। ठीक है, ऐसा होना कोई ताज्जुब नहीं। देखो उसी गोपालसिंह वाले मामले में! सब लोग, यहां तक कि कम्बख्त मुन्दर तक, यही समझते रहे कि और चाहे जो कुछ भी हो पर दारोगा इस मामले में बिल्कुल बेकसूर है, पर यह हरामजादा भीतर भीतर सब कुछ जानता हुआ भी लोगों की निगाहों में मूढ़ बना बैठा रहा।

दूसरा० । बड़ा भारी शैतान है । खैर अब देर करने की जरूरत नहीं, हमें अपना काम शुरू कर देना चाहिये !

दोनों आदमी दर्वाजे के पास से हटे और बगल के अन्धकार में जाकर कहीं लुप्त हो गए ।

मनोरमा से बातें करते करते दारोगा यकायक चौंका और बोल उठा, "हैं, यह क्या बात है !" मनोरमा इधर उधर देख कर बोली, "क्या बात?" दारोगा बोला, "कुछ आवाज नहीं सुन रही हो !" मनोरमा ने भी उधर ध्यान दिया और गौर करके कहा, "हाँ किसी तरह की आहट तो जरूर आ रही है, मगर क्या हो सकता है ?"

दोनों कुछ देर तक गौर करते रहे, यद्यपि कुछ ठीक ठीक तो समझ में न आया पर इतना मालूम हुआ कि नीचे कहीं से कुछ आवाज आ रही है । मनोरमा बोली "हम लोगों के सिवाय और कोई तो आज यहां है नहीं?" दारोगा बोला, "सिर्फ कुछ पहरेदार ! मगर उन्हें इमारत के अन्दर आने की इजाजत नहीं है ।" मनोरमा ने कहा, "कौन ठिकाना किसी काम से आए हों और कुछ कर रहे हों ?"

दारोगा उठ कर कमरे के बाहर निकल गया और मनोरमा भी यद्यपि बाहर तो नहीं निकली मगर उठ कर उसी जगह कमरे में इधर से उधर घूमने और आहट लेने लगी । दारोगा थोड़ी देर बाद लौट आया और बोला, "इमारत के अन्दर कोई नहीं है सब तरफ सन्नाटा है और मैं अपने आदमियों को भी देख आया, वे अपने अपने ठिकाने पर हैं ।" मनोरमा ने जवाब दिया, "पर फिर भी वह आवाज आ रही है और मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि वह जो कुछ या जैसी भी हो इस आलमारी के अन्दर से आ रही है ।"

मनोरमा ने बगल की दीवार में बनी कई आलमारियों में से एक की तरफ उंगली उठाई और दारोगा उसके पास जाकर खड़ा हो गया । बाकी आलमारियों की तरह इसके भी पल्ले इस समय बन्द थे, पर पास आने पर दारोगा को भी ऐसा जान पड़ा मानों उसके अन्दरसे कुछ आवाज निकल रही हो । उसके मुंहसे निकला, "हैं, यहआलमारी तो..." और वह उसके और भी पास जा पहुंचा । किसी खटके पर हाथ रख उसने इस आलमारी के दोनों पल्लों को खोला और भीतर की तरफ देखा । आलमारी किसी तरह के साज सामान से एकदम खाली थी, यहा तक कि

इसमें सामान रखने के लिये टांड़ या खाने तक भी बने हुए न थे और इसे एक ही निगाह देख कर मनोरमा बोल उठी, 'इसमें तो कुछ भी नहीं है" मगर कहते कहते वह रुक गई । आहट जिस चीज की भी हो आलमारी खुलने से और भी साफ हो गयी थी ।

दारोगा इस आलमारी के पास पहुंचा और न जाने क्या किया कि इसके पीछे की तरफ दीवार में एक रास्ता निकल आया और पतली पतली सीढ़ियाँ नजर पड़ीं । दारोगा आलमारी के अन्दर घुसा और पीछे पीछे मनोरमा भी चली । दारोगा की इच्छा तो हुई कि मनोरमा को मना कर दे पर फिर न जाने क्या सोच वह कुछ न बोला और चुपचाप उन सीढ़ियों की राह नीचे उतरने लगा । सीढ़ियों पर घना अन्धकार था और उन्हें तय करनेके बाद जिस स्थान पर ये दोनों पहुंचे वहाँ भी ऐसा अंधेरा था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था पर दारोगा ने इस बात का कोई खयाल न किया और आगे बढ़ने लगा । मनोरमा भी उसके कन्धे पर हाथ रक्खे हुए बराबर उसके साथ ही थी । वह आवाज जिसकी आहट ऊपर से लगी थी अब और साफ हो गई थी मगर वह किस चीज की आवाज है या कहां पर हो रही है इसका अभी तक कोई पता न लग रहा था ।

अंधेरे ही में अन्दाज से चलता हुआ दारोगा काफी दूर तक निकल गया । इस बीच में उसे कई ड्योढ़ियां पार करनी और दर्वाजे लांघने पड़े तथा एकाध बार सीढ़ियां भी चढ़नी और उतरनी पड़ीं और इस बीच मनोरमा भी बराबर उसके साथ रही । अन्त में जहां पहुंच कर दारोगा रुका वह एक दर्वाजा था जो यद्यपि भिड़का हुआ था पर पूरी तरह पर नहीं, और उसकी सन्ध में से आती हुई रोशनी की एक लकीर सामने की जमीन और बगल की दीवार पर पड़ती हुई बता रही थी कि उसके दूसरी तरफ रोशनी हो रही है । दबे पांव चलते हुए दारोगा और मनोरमा इस दर्वाजे के पास आकर खड़े हो गये और दरार के राह दूसरी तरफ देखने लगे । अन्दाज से यह भी मालूम हुआ कि यह आवाज, जिस किसी तरह की भी वह रही हो, इसी दर्वाजे के दूसरी तरफ से आ रही है ।

अगर हमारे पाठक भी इन दोनों की तरह दर्वाजे के दूसरी तरफ देखें तो हमें विश्वास है कि उस जगह को जरूर पहिचान जायेंगे, क्योंकि आज के पहिले भी वे एक दो बार यहां आ चुके हैं । दर्वाजे के दूसरी तरफ और उसके ठीक सामने ही यद्यपि कुछ दूरी पर अजायबघर का वही महराबदार बड़ा फाटक था जिसके आगे जंजीर के सहारे पुतली लटका करती थी* लेकिन इस समय बड़ा फर्क इतना ही

* देखिए भूतनाथ आठवां भाग नौवां बयान, या ग्यारहवां भाग ग्यारहवां बयान।

था कि वह फाटक खुला हुआ था और पुतली नजर न आ रही थी। एक तरह की भारी आवाज जो किसी कल पुर्जे के चलने की सी मालूम होती थी इसी फाटक के अन्दर से आती सुनाई पड़ रही थी।

किसी तरह की तेज रोशनी से सामने की जगह भरी हुई थी जिसकी मदद से मनोरमा बड़े गौर और ताज्जुब के साथ दारोगा की पीठ पर से झांकती हुई अपने सामने का दृश्य देखने लगी। आखिर उससे न रहा गया और उसने दारोगा से पूछा, "यह कौन जगह है और वह सामने वाला फाटक किधर जाने का रास्ता है ?" दारोगा धीरे से बोला, "वह फाटक 'चक्रव्यूह' के तिलिस्म के अन्दर जाने का रास्ता है और यह जगह वही है जिसके नाम पर यह इमारत अजायबघर कहलाती है।"

दारोगा की बात सुन मनोरमा ताज्जुब और कौतूहल के साथ कुछ और भी आगे को झुक कर देखने लगी। उसकी निगाहें सामने वाले फाटक को पार कर उसके अन्दर का कुछ हाल देखने की कोशिश कर रही थीं। फाटक के अन्दर भी यद्यपि रोशनी हो रही थी पर इतनी तेज न थी कि जिस जगह मनोरमा खड़ी थी वहाँ से देखने वाला कोई आदमी भीतर की हालत ठीक ठीक देख सके फिर भी मनोरमा को ऐसा जान पड़ा कि फाटक के दूसरी तरफ और उससे कुछ पीछे हट कर कोई काले रंग की बड़ी सी चीज रक्खी है। जब निगाह कुछ जमी तो जान पड़ा कि वह कोई बड़ी मूरत है और उसके सामने की तरफ जमीन पर कुछ हो रहा है। कुछ देर और गौर करने पर पता लगा कि कोई गोल चमकदार चीज है जो तेजी से घूम रही है और वह आवाज भी इसी चीज के घूमने से पैदा हो रही है।

मनोरमा से रहा न गया। वह बोल उठी, "क्या हम लोग और आगे बढ़ कर देख नहीं सकते ?" दारोगा बोला, "उस फाटक तक हमलोग जा सकते हैं मगर मैं सोच रहा हूं कि आखिर यह रास्ता खुल क्योंकर गया और यह किसका काम हो सकता है ?" मनोरमा बोली; "कोई नजर तो आता नहीं, अगर कोई होगा भी तो उसकी जांच की जानी चाहिए। यह स्थान आपका है और बिना आपकी इजाजत लिए किसी को अन्दर आने या कोई कार्रवाई करने का अख्तियार नहीं है। क्या आपके पास कोई हथियार नहीं है? अगर नहीं तो मेरे पास एक जहरीली छूरी मौजूद है, उसे हाथ में लीजिए और आगे बढ़िये।"

दारोगा ने जवाब दिया, "नहीं मेरे पास हथियार है और मुझे किसी दुमन

का कोई डर भी नहीं है, मगर मैं आगे बढ़ते इसलिए डरता हूं कि उस फाटक के अन्दर के हिस्से का तिलिस्म से सम्बन्ध है और बहुत ही भयानक है। मैं एक बार उसके अन्दर जा चुका और बहुत बड़ी मुसीबत उठा चुका हूं।"

दारोगा की आंखों के सामने वह दृश्य घूम गया जब वह वहां जाकर सर्यू से कुछ दरियाफ्त करना चाहता था और भयानक तिलिस्मी शैतान उसके सामने प्रकट हुआ था*। मगर मनोरमा का कौतूहल पल पल पर बढ़ता ही जाता था और सच तो यह है कि वह थी भी बड़ी ही हिम्मतवर और कलेजे की मजबूत औरत। आखिर उसकी जिद से लाचार होकर दारोगा ने अपने सामने वाले दर्वाजे को हाथ से ढकेल कर पूरा खोल दिया और दोनों आदमी आगे बढ़े।

धीरे धीरे चलते हुए दोनों उस बड़े फाटक के पास पहुंचे और गौर से उसके अन्दर की कैफियत देखने लगे। मनोरमा ने देखा कि उसके सामने यानी फाटक के दूसरी तरफ काफी बड़ी जगह है जिसके बीचोबीच काले पत्थर की एक बहुत ही विशाल मूरत बैठाई हुई है। इस मूरत के सामने संगमर्मर की करीब दो हाथ ऊँची एक गोल चौकी है जिसके बीचोबीच कोई सुनहरी चीज जिसका घेरा आठ दस हाथ से किसी तरह कम न होगा बहुत तेजी के साथ घूम रही है जिससे एक गूंजने वाली आवाज सब तरफ फैल रही है।

केवल इतना ही नहीं, इस विचित्र जगह में और भी कई चीजें थीं जिन्होंने मनोरमा का ध्यान आकर्षित किया। छत की तरफ निगाह जाते ही मनोरमा ने देखा कि वहां कड़ियों के साथ जंजीर के सहारे बहुत तरह की चीजें लटक रही हैं। पचासों कड़ियों में से प्रायः हर एक के साथ ही कोई न कोई चीज लटक रही थी और अन्दाज से मनोरमा को मालूम हुआ कि ये किसी तरह के पुतले हैं जिनमें बहुत से तो आदमियों की शकल के और कितने ही जानवरों की तरह मालूम पड़ते थे। ऊपर छत की तरफ अंधेरा होने से साफ साफ कुछ पहिचान में तो न आया पर मनोरमा को ऐसा जान पड़ा कि इनमें से कुछ पुतले पुतलियां हिल डुल रही हैं और कभी कभी कोई एक अपनी जगह से ऊपर उठ कर गायब भी हो जाती है।

यकायक किसी तरह की नई आवाज ने इन दोनों को चौंका दिया और ये गौर से इधर उधर देखने लगे। मालूम हुआ कि उस सामने वाली मूरत के पेट में किसी तरह की हरकत पैदा हो रही है, साथ ही उसका एक हाथ हिला और

---

* देखिये भूतनाथ सोलहवां भाग तीसरा बयान।

अपनी जगह से हट कर पेट पर गया। मानों कोई आदमी पेट पर हाथ फेर रहा हो, कुछ कुछ तरह से वह हाथ दो तीन दफे घूमा।

मनोरमा के दिल में कुछ डर पैदा हुआ। भला पत्थर की मूरत पेट पर हाथ किस तरह फेर सकती है! यही सब सोचती हुई वह पूछने के लिए दारोगा की तरफ घूमी ही थी कि उस मूरत के होंठ भी हिलते देख रुक गई। देखते देखते वह डरावना मुंह खुला और मूरत ने एक बार जम्हाई ली, तब भयानक स्वर में कहा, "भूख लगी है।"

मूरत के दोनों हाथ सीधे हुए और आगे को बढ़े। मनोरमा को ऐसा जान पड़ा मानों वे लम्बे होते जा रहे हैं। देखते देखते सामने की संगममर्र वाली चौकी जिस पर कोई सुनहरी चीज घूम रही थी, उन हाथों ने पार कर ली, बीच का मैदान भी पार किया, और अब फाटक की तरफ बढ़े। मनोरमा को ऐसा जान पड़ा कि वे हाथ मानों उसी को पकड़ने के लिए बढ़ रहे हैं। वह डर कर दो कदम पीछे हट गई बल्कि दारोगा को भी उसने हाथ से पकड़ कर पीछे खींच लिया।

बढ़ते बढ़ते वे हाथ फाटक तक आ पहुंचे थे पर अब इन दोनों के पीछे हट जाने से उनका बढ़ाव जैसे कुछ रुक सा गया तथा मनोरमा यह देख दारोगा को लिए कुछ और पीछे हट गई और अब उसने देखा कि वे दोनों हाथ भी पीछे की तरफ हट रहे हैं, यहाँ तक कि कुछ ही देर में पुनः अपने ठिकाने पहुंच फिर जैसे के तैसे हो गए जिस प्रकार कि पहिले थे। मूरत ने फिर एक जम्हाई ली, तब उसके पेट की हलचल भी बन्द हो गई और वह पहिले की तरह चुपचाप बैठी एक पत्थर की मूरत नजर आने लगी।

मनोरमा डरी हुई आवाज से बोली, "मालूम होता है वे हाथ हमीं लोगों को पकड़ने के लिए बढ़ रहे थे।" दारोगा बोला, "जो कुछ भी हो! मगर मैं एक बार इस जगह के भीतर जा चुका हूं, उस समय भी यह मूरत तो इसी तरह पर थी परन्तु इसके बदन में किसी तरह की हरकत नहीं देखने में आई थी।" मनोरमा ने पूछा, "और वह गोल चीज जो उस चौकी पर घूम रही है?" दारोगा बोला, "वह बहुत बड़ा सुनहरा चक्र है, पर वह भी उस वक्त चुपचाप शान्त पड़ा था। आज न जाने क्यों ये विचित्र बातें यहाँ नजर आ रही हैं।"

मनोरमा बोली, "आप एक बार इस फाटक के अन्दर जा चुके हैं! तो क्या मुझे भी ले जा सकते हैं?" दारोगा बोला, "नहीं यह मेरी हिम्मत के बाहर है। उस समय तिलिस्मी किताब मेरे साथ थी और उसी के बल पर मैंने इतनी हिम्मत

कर डाली थी, मगर उस दफे भी जरा ही से समय में ऐसी ऐसी डरावनी चीजें मेरे देखने में आईं और इतनी बड़ी मुसीबत में मुझे पड़ना पड़ा जिससे मैंने कसम खा ली कि जिन्दगी भर कभी उधर जाने का नाम न लूंगा।" मनोरमा ने कहा, "अच्छा आगे बढ़िए। देखिए फिर वैसा ही होता है कि नहीं?"

मनोरमा ने आगे बढ़ने को कदम उठाया मगर दारोगा ने उसे रोका बल्कि दो कदम और पीछे को खींच लिया, क्योंकि उसके कान में कोई नई आवाज गई थी। उसी समय उस फाटक के अन्दर वाली रोशनी, जैसी और तो कुछ भी बढ़ रही हो, गुल हो गई और तब आहट से जान पड़ा कि वह चक्र जो घूम रहा था अब रुक रहा है। कुछ ही देर में उसका घूमना फिरना बिलकुल बन्द हो गया, वह गूंजने वाली आवाज जो सब तरफ फैल रही थी जाती रही और सब तरफ सन्नाटा हो गया।

मगर इतना ही नहीं, जरा देर बाद एक तरफ से घड़ घड़ की आवाज हुई और सामने वाला फाटक बन्द हो गया। मनोरमा ने देखा कि लोहे का एक मोटा तख्ता जमीन के अन्दर से निकला और ऊपर तक पहुंच कर अड़ गया, साथ ही जंजीर से बंधी हुई एक पुतली ऊपर से नीचे को झूल आई और बीचोबीच में लटकती हुई घूमने लगी। इस समय वह पुतली बहुत तेजी के साथ घूम या नाच रही थी, पर धीरे धीरे उसके घूमने की तेजी कम होने लगी और कुछ ही देर बाद वह खड़ी हो गई। दारोगा की निगाह उसकी तरफ गई और साथ ही वह घबड़ा कर बोल उठा, "हैं, यह क्या!"

उसके चेहरे से घबराहट और परेशानी टपकती देख मनोरमा बोल उठी, "क्या बात है!" दारोगा ने जवाब दिया, "तिलिस्म की ताली इस समय इसके हाथ में नहीं है!" मनोरमा ने पूछा, "ताली कैसी?" दारोगा बोला, "यह पुतली जो तुम फाटक के सामने लटकती देख रही हो मामूली नहीं है बल्कि बहुत बड़े भेद का खजाना है और उसके हाथ में हीरे की एक चाभी* तथा तिलिस्मी किताब रहा करती थी जिसे अब मैं नहीं देखता।"

मनोरमा०। (ताज्जुब से) हीरे की चाभी और तिलिस्मी किताब।

दारोगा०। जब जब मैं यहाँ आया मैंने उन चीजों को इसके हाथ में देखा पर इस समय उनको गायब पा रहा हूं!

मनो०। तो क्या किसी ने उन चीजों को इससे ले लिया?

---

* देखिये भूतनाथ आठवां भाग नौवां बयान।

दारोगा० । अगर ऐसा नहीं हुआ तो क्या हुआ !

मनो० । अगर ऐसा ही था तो आप ही ने उन चीजों को क्यों नहीं अपने कब्जे में किया ? अगर मैं भूलती नहीं हूं तो आपने मुझसे कहा था कि तिलिस्म खोलने के लिए तिलिस्मी किताब और हीरे की चाभी की दरकार पड़ेगी ।

दारोगा० । ठीक है, पर तिलिस्मी मामले ऐसे नहीं होते कि जो कोई चाहे उनके साथ अपनी मनमानी करता रहे । यह पुतली उन चीजों को अपने पास रखती थी पर किसी की मजाल न थी कि उनको हाथ लगाता ।

मनो० । आप कह रहे हैं इसलिए मुझे मान लेना पड़ता है, पर मेरी समझ में नहीं आता कि आंख के सामने ऐसी अनमोल चीजें इस मामूली तौर पर मौजूद रहें और फिर भी उन पर कब्जा न किया जा सके !

मनोरमा की बात सुन दारोगा हंस पड़ा और बोला, "न तो इस पुतली को तुम मामूली समझो और न इस जगह को । इस इमारत का ऊपरी हिस्सा चाहे जैसा मामूली या साधारण नजर आता हो पर यह तहखाना तिलिस्मी है और वह पुतली भी । वह तो कहो कि मैं साथ में हूं जो तुम यहां तक आ और इस जगह को देख सकी हो नहीं तो किसी ऐरे गैरे की मजाल नहीं जो यहां तक पहुंच या उस पुतली को हाथ भी लगा सके ।

मनोरमा० । (ताज्जुब से) हाथ भी लगा सके !

दारोगा० । हां, जो कोई भी ऐरा गैरा उनको हाथ लगावेगा बेहोश होकर गिर पड़ेगा, मगर इस समय मैं इस बात का इम्तिहान लेने की इजाजत तुमको नहीं दे सकता क्योंकि अभी अभी जो कुछ देखा है वह जरूर कोई तिलिस्मी कार्रवाई है और आगे चल कर भी न जाने क्या कुछ हो, अस्तु पीछे लौटो ।

मनोरमा० । (जिसके ढंग से मालूम होता था कि वह बहुत मन मार के यह बात कह रही है) खैर आप कहते हैं तो मैं माने लेती हूं लेकिन अगर ऐसा ही है तो आपको यह भी सोचना चाहिये कि ये अजीब बातें अचानक ही क्यों होने लग पड़ीं । यह चाहे तिलिस्म हो या जो कुछ भी हो, आप से आप तो कहीं कोई नई बात पैदा नहीं हो सकती । आप खुद भी कई बार यहां आ चुके हैं, क्या कभी ऐसा होते देखा था ।

दारोगा० । (सिर हिला कर) कभी नहीं और इस समय इन्हें देख कर मेरा यही खयाल होता है कि या तो कोई बाहरी आदमी यहां आया और उसने कुछ किया और या फिर ......

मनोरमा० । और या फिर ?

दारोगा० । (कुछ कहते कहते रुक कर) अच्छा ऊपर चल कर ठिकाने से बैठो तो मैं अपने मन की बात कहूं ।

दारोगा ने कोई तर्कीब ऐसी की कि उस स्थान की रोशनी बुझ गई और वहां घोर अन्धकार छा गया । अंधेरे ही में अन्दाज से टटोलता और याद से काम लेता हुआ दारोगा पीछे लौटा और मनोरमा उसके साथ हुई । दोनों पुनः अपने स्थान पर आ पहुंचे । गद्दी पर बैठने के पहले दारोगा ने एक बार बाहर निकल कर सब तरफ अच्छी तरह देखा भाला पर सब कुछ माफिक दस्तूर था और कहीं कोई शक की बात नजर न आती थी अस्तु वह लौटा और कमरे का दर्वाजा बन्द करता हुआ मनोरमा के पास आकर बैठ गया ।

सातवां बयान

आधी रात के गहरे सन्नाटे में एक नकाबपोश काले कपड़ों से अपने तमाम बदन को ढांके हुए दारोगा के शैतान की आंत जैसे मकान में चारो तरफ घूम फिर रहा है ।

न जाने कब से वह ऐसा कर रहा है । इस बीच में उसने कितने कमरे कोठरियां तहखाने और बालाखाने छान मारे हैं और कितने ही बार उस कई मंजिलों वाले मकान के ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आ जा चुका है । यह किस चीज के फिराक में है या किस की खोज में है यह तो हम नहीं कह सकते मगर इस समय अब यह जहां आकर रुका है वह एक बहुत ही छोटा सा मगर मजबूत दर्वाजा है जिसमें ऊपर और नीचे दोनों ही तरफ सिकड़ियां लगी हुई और दोनों ही में मजबूत ताले बन्द हैं । देखने में तो यह किसी खिड़की या आलमारी का पल्ला जान पड़ता है पर इसमें लगे दोहरे तालों ने इस नकाबपोश का ध्यान आकर्षित किया है और वह इसके पास रुक कर कुछ सोचने लगा है ।

आखिर इस आदमी ने अपने कपड़ों के अन्दर से कई टेढ़ी मेढ़ी सलाइयां निकालीं और उनकी मदद से ताले खोलने का उद्योग करने लगा । कुछ ही देर में उसने दोनों तालों को खोल कर अलग कर दिया और सांकल हटा उस छोटे दर्वाजे के पल्ले खोले । अन्दर एक कोठरी दिखी जिसकी छत बहुत ही नीची थी मगर यहां कोई आदमी या किसी चीज पर उसकी निगाह न पड़ी । यह छोटी कोठरी सब तरह से एकदम खाली थी ।

इधर उधर गौर करने पर जिधर से यह आदमी इस कोठरी में घुसा था उसके बगल वाली दीवार में एक आलमारी नजर आई। यह उसके पास पहुंचा। इसने इस ताले को भी खोला और अब मालूम हुआ कि वह कोई आलमारी नहीं बल्कि एक दूसरी छोटी कोठरी में जाने का दर्वाजा था। नकाबपोश इस कोठरी में घुसा मगर घुसने के पहिले इसने अपने पास वाली चोर लालटेन की रोशनी तेज कर ली क्योंकि इस जगह इतना गहरा अंधेरा था कि जिसकी हद नहीं। आलमारी बन्द थी और पल्लों में ताला लगा हुआ था।

छोटी कोठरी पहली निगाह में तो एकदम खाली नजर आई, पर फिर जब निगाह जमी और लालटेन वाला हाथ ऊँचा किया तो एक तरफ कोने में कुछ नजर आया और उस तरफ बढ़ने पर पुआल के ढेर पर एक औरत पड़ी दिखाई दी। क्या जाने नींद या बेहोशी के आलम में यह एकदम गाफिल पड़ी हुई थी पर इसकी सूरत देखते ही नकाबपोश एकदम चिहुंक पड़ा और पास पहुंच हाथ से हिला हिला कर इसे जगाने की कोशिश करने लगा। आखिर उसने आंखें खोलीं और किसी अजनबी नकाबपोश को अपने ऊपर झुका देख डर कर उठ बैठी। नकाबपोश दिलासा देता हुआ बोला, "डरो मत, मैं हूं—सुखपाल !"

एक लम्बी सांस लेकर वह औरत बोली, "सरदार साहब, आप आ गए ! मैंने तो समझा था कि यही कोठरी मेरी कब्र बनेगी, पर जान पड़ता है अभी कुछ जिन्दगी बाकी है। देखिए कैसी भयानक जगह है, कहीं से जरा भी रोशनी आने की राह नहीं है और ये जो दो चार सूराख हवा आने के लिये बने हैं ये भी ऐसे हैं कि......"

"मैंने सब कुछ देख लिया, पर पहिले इशारा बता कि तू कौन है। तब मैं आगे बात करूंगा" कहते हुए नकाबपोश ने हाथ का सहारा देकर उस औरत को पुआल के ढेर पर से उठाया और खड़ा किया। वह लड़खड़ा कर गिरने लगी पर इसने बगल में हाथ देकर सम्हाला। कुछ चैतन्य होकर वह औरत बोली, "मैं वही हूं जिसे आपने भेष बदल कर जमानिया के महल में भेजा था और जिसके लिये इशारा मुकर्रर किया था——शची देवी। मैं नहीं जानती थी कि ......"

वह नकाबपोश तड़प कर बोला, "और मैना, तू जीती है, मेरे लिए इतना ही बहुत है ! इस वक्त शिकवे शिकायत का मौका नहीं है। यह बड़े खतरे की जगह है। पहिले यहां से बाहर हो लें फिर जो कुछ तुम कहोगी सब सुनूंगा और अपनी कहूंगा। अच्छा यह बताओ कि तुम चलने लायक हो या मैं तुम्हें उठा लूं ? एक लम्बा पेचीला और तरद्दुद से भरा रास्ता हम लोगों को पार करना है।"

"थोड़ा सहारा देंगे तो मैं चली चलूंगी" कह कर मैना ने उस नकाबपोश के कंधे पर हाथ रख दिया और वह उसे सहारा देता हुआ इस कोठरी के बाहर निकाल ले आया। पाठकों को तरद्दुद में न डाल हम बताए देते हैं कि यह नकाबपोश शेरसिंह हैं जो मैना की खोज में ही दारोगा के मकान में घूम रहे हैं।

बाहर निकल शेरसिंह ने उस कोठरी का दर्वाजा बन्द कर दिया और ताले को भी पुनः ज्यों का त्यों लगा दिया, तब मैना को बाहर वाले दालान में निकाल ले आए। उस छोटे पल्ले का दोहरा ताला बन्द किया और वहां से भी निकल घुमाते फिराते एकदम बाहरी हिस्से की तरफ ले गए जहां की एक खिड़की खुली हुई थी और उसकी राह ताजी हवा आ रही थी। शेरसिंह बोले, "यह खिड़की बहुत ऊँची नहीं है और बाहर मेरा एक शागिर्द मौजूद है।" उनका मतलब समझ मैना बोली, "कोई डर की बात नहीं, थोड़ी मदद कर दीजिये, मैं उतर जाऊँगी।" शेरसिंह ने खिड़की में से झांक कर नीचे देखा और दो बार चुटकी बजाई। जवाब में नीचे से कुछ इशारा मिला जिस पर उन्होने मैना को सहारा देकर नीचे उतार दिया और तब आप भी उतर गए।

नीचे शेरसिंह की ही तरह के काले कपड़े पहिने और नकाब से मुंह छिपाए एक आदमी दीवार के साथ चिपका खड़ा था। शेरसिंह ने उससे कुछ बातें कीं और तब अपने कपड़ों के अन्दर से कुछ निकाल कर उसको दिया। वह आदमी इनको सलाम कर उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गया, कमन्द खींच ली और खिड़की बन्द कर ली। उस जगह फिर सन्नाटा हो गया।

मैना को लिए हुए शेरसिंह आगे बढ़े और कुछ दूर जाकर एक गली में घुस गए जो आगे जाकर सड़क पर निकलती थी। यहां एक झाड़ की जगह में दो घोड़े लिए एक आदमी मौजूद था। शेरसिंह ने सहारा दे मैना को एक घोड़े पर चढ़ाया और दूसरे पर खुद सवार हुए। उस आदमी से जो घोड़े लिए था कुछ बातें कीं और तब तेजी से रवाना हो गये।

यद्यपि शेरसिंह चाहते थे कि दारोगा के मकान और अपने बीच में जल्दी से जल्दी लम्बा फासला डाल दें पर उन्हें यह भी खयाल था कि कैद की सख्तियों की मारी मैना ज्यादा दूर न जा सकेगी, अस्तु शहर के बाहर निकल थोड़ी दूर जा वे एक मुनासिब जगह देख रुक गए और मैना से बोले, "अगर तुम्हें घोड़े पर तकलीफ हो रही हो तो इस जगह दूसरी सवारी का भी कुछ बन्दोबस्त हो

सकता है !" पर मैना ने जवाब दिया, "नहीं कैद से छूट कर मेरी हिम्मत बहुत बढ़ गई है और मैं जहां आप कहें वहां चलने को तैयार हूं, मगर बहुत तेज नहीं चल सकती। लेकिन आप अब मुनासिब समझिए तो बताइए कि मेरे पीछे क्या क्या हो गया ?"

शेरसिंह अपना घोड़ा मैना के घोड़े के एकदम पास ले आए और दोनों साधारण चाल से जाने लगे। धीरे धीरे आपुस में बातें होने लगीं।

शेर०। सब गड़बड़ हो गया मैना, बड़ी चालाकी खेली गई और मेरे समूचे किए कराए पर पानी फिर गया !"

मैना०। सो क्या ?

शेर०। महल में से देवीरानी गायब हो गईं।

मैना०। हैं, बूआजी गायब हो गईं ! मगर सो कैसे ? तब वहां हड़कम मच गया होगा ?

शेर०। सो कुछ भी नहीं, क्योंकि इस मामले में बहुत गहरी ऐयारी की गई है। एक औरत नकली देवीरानी बनी वहां मौजूद है और एक दूसरी मैना भी वहां डटी हुई है।

मैना०। हैं, नकली देवीरानी और नकली मैं !

शेर०। सिर्फ इतना ही नहीं; कोई एक ऐयारा नकली बिन्दो बनी हुई जमानिया महल में भी मौजूद है !

मैना०। मगर ऐसा कैसे हो सकता है !

शेर०। तभी तो कहता हूं कि सब तरफ बड़ी गहरी चालाकी की गई है।

मैना०। और इस बात का पता नहीं लगा कि यह किसका काम है ?

शेर०। कुछ नहीं।

मैना०। जब आप जान गए कि महल में जो देवीरानी है वह नकली है या वह मैना भी कोई ऐयार है, तो आपने कम से कम भण्डाफोड़ तो कर ही दिया होगा ?

शेर०। नहीं, मैंने उन दोनों को वैसे ही रहने देना ज्यादा पसन्द किया।

मैना०। (कुछ सोच कर) ठीक है, मैं आपका मतलब समझ गई, जब तक यह न मालूम हो जाय कि वे दोनों ऐयार कौन हैं और किसकी यह कार्रवाई है तब तक उन्हें यही समझने देना मुनासिब है कि उनका भेद छिपा हुआ है।

शेर०। हां यह बात भी है पर मुख्य कारण कुछ दूसरा ही है, और रहा उन

दोनों की पहिचान जो नकली सूरत बदल के जभी हुई हैं सो यह तो कोई मुश्किल काम न था और मैं बिना ज्यादा कोशिश किये ही उन्हें पहिचान भी गया।

मैना०। कौन हैं वे दोनों ?

शेर०। देवीरानी बनी हुई तो लीला लौंडी है, और कम्बख्त नन्हों मैना बनी है!

मैना०। हैं, नन्हों और लीला ! तब तो यह काम हमारे राजा साहब का है !

शेर०। हो सकता है पर यह भी मुमकिन है कि उनको भी कम्बख्तों ने धोखा दिया हो।

मैना०। तब दारोगा होगा, बल्कि दोनों ही ने मिलजुल कर यह कार्रवाई की हो तो ताज्जुब नहीं क्योंकि दोनों का पेट एक है। खैर जो कुछ भी हो, अब मैं छूट गई हूं तो बहुत जल्द सभी बातों का ठीक ठीक पता लगा लूंगी। मगर फिर बिन्दो कौन बनी हुई है और क्यों ? जिस किसी की भी यह कार्रवाई हो उसे यह तो मालूम ही होगा कि जब एक मैना, नकली या असली, रोहतासगढ़ में मौजूद है तो फिर मैना बिन्दो बनी कैसे जमानिया में रह सकती है।

शेर०। हां और यही बस एक उम्मीद की जगह है, इसी से मैं समझता हूं कि ये दोनों काम किसी एक व्यक्ति के नहीं हैं।

मैना०। यानी जिसने बिन्दो को पकड़ा है वह यह नहीं जानता कि मैना और बिन्दो एक ही हैं ?

शेर०। बेशक कुछ ऐसी ही बात है और इस बारे में मेरी समझ में यह आता है कि दारोगा को केवल कुछ शक मात्र हो गया और उसने सावधानी के ख्याल से मुन्दर के असली मतलब का पता लगाने के लिए तुमको गिरफ्तार करके एक नकली बिन्दो महल में दाखिल कर दिया है। (कुछ रुक कर) क्या तुम्हें पकड लेने के बाद दारोगा ने तुम्हारी सूरत धोकर भी देखी कि तुम वास्तव में कौन हो ?

मैना०। अनजान में या नींद की हालत में या मुझको बेहोश करके देख लिया हो तो मैं नहीं कह सकती, पर मेरी समझ में तो ऐसा नहीं हुआ। आप गौर करके देखिये, क्या मेरी सूरत में कोई फर्क पड़ गया या वही शक्ल है जो आपने अपने हाथ से मेरी बना दी थी ?

शेर०। (पास हो गौर से मैना की सूरत देख कर) नहीं, मैं तो सूरत में कोई फर्क नहीं पाता और न इसी बात का कोई निशान पाता हूं कि तुम्हारी सूरत धोई या पुनः ठीक की गई है, बिल्कुल वही शक्ल है जो मैंने रंगी थी और फिर

यह रंग भी ऐसा कच्चा नहीं है कि जो चाहे सहज में धोकर साफ कर ले सके।

मैना० । (चौंक कर) हाँ देखिए मेरी बेवकूफी, असल बात तो मैंने पूछी ही नहीं ! राजा गोपालसिंह ? वे अब कहाँ और किस हालत में हैं ?

शेर० । (सिर झुका कर) मैं इसी सवाल के डर में था । अफसोस कि मैं कुछ नहीं जानता कि वे अब कहां और किस हालत में हैं ।

मैना० । हैं, यह कैसी बात, क्या आप उनको कम्बख्त सुन्दर की कैद से छुड़ा न सके और उनको कहीं और बन्द कर दिया गया ? मगर उस दिन जब कि सुन्दर मुझको ..

शेर० । मैंने उन्हें छुड़ा लिया और उनकी जगह (गमगीन हसी हंस कर) अब तुम्हारी वही नानी जिसको तुमने कूएं के रास्ते मेरे पास भेज दिया था उस पिंजड़े में बन्द है, बेचारे गोपालसिंह....

मैना० । जी हां, गोपालसिंह ?

शेर० । मैं उन्हें छुड़ा कर सीधा बूआजी से मिलाने के लिए ले चला क्योंकि उनकी यही आज्ञा थी । रोहतासगढ़ महल में पहुंच कर उन्हें नीचे तहखाने में छोड़ा और आप ऊपर यह देखने के लिए पहुँचा कि बूआजी किस हालत में हैं, ताकि उन्हें सावधान कर दूं तब गोपालसिंह को उनके पास ले चलूं या शायद वे खुद ही उनके पास जाना चाहें तो वैसा ही करूं । जब उनके कमरे में पहुँचा तो देखा कि वे गाफिल नींद में पड़ी हैं और बाहर तुम यानी मैना सोई है....

मैना० । मैं भला वहां कैसे रह सकती थी, मैं तो कम्बख्त दारोगा का कैदखाना आबाद कर रही थी ।

शेर० । ठीक है, मगर यह बात तो उस वक्त मुझको मालूम न थी, फिर एक बात और, मैंने तुमसे कहा था कि सम्भव हो तो अपनी नानी के मरने के बहाने से कुछ समय की छुट्टी ले लेना और बूआजी के पास एक बार हो आना ।

मैना० । ठीक है, आपने कहा था और साथ ही यह भी कहा था कि अगर इसी बीच मैं अपना काम ठीक ठीक पूरा कर सका और आने का मौका लगा तो आधी रात के समय रंगीन फुलझड़ी का इशारा करूंगा तथा तुम सब कुछ अगर ठीक रहे तो जवाब में वैसा ही इशारा करना ।

शेर० । बेशक मैंने कहा था और थोड़ी देर के लिए जो मैं शक में पड़ा रह गया वह बस इसी कारण कि मैंने रंगीन फुलझड़ी छोड़ी और जवाब भी पाया ।

मैना० । जवाब भी पाया ! मगर यह कैसे हो सकता है ?

शेर० । इस तरह कि किसी ने छिप कर हमारी बातें सुन ली हों ।

मैना० । क्या ऐसा हो सकता है ? लेकिन अगर किसी ने सुन ही लिया तो वह यह भी जान गया होगा कि बिन्दो ही मैना है, खैर तब ?

शेर० । मैंने बूआजी से बातें कीं, और मैना से भी, और कुछ ही देर में समझ गया कि वे दोनों ही नकली हैं । उस समय उस जगह कुछ शक जाहिर करना या दोनों को यह समझने का मौका देना कि मैं उनका भेद जान गया हूं मुनासिब न जाना, अस्तु उनसे तो कुछ न बोला, पर जब तहखाने में लौटा तो वहां गोपालसिंह को कहीं न पाया ।

मैना० । कहीं न पाया ! मगर तिलिस्मी तहखाने में से.....?

शेर० । (सिर झुका कर) कोई उन्हें पकड़ ले गया था, और साथ ही तिलिस्मी किताब भी, जिसे मैं बड़ी हिफाजत की जगह पर छोड़ गया था इस खयाल से कि बूआजी जैसा कुछ कहेंगी वैसा ही किया जायगा, वहां पर मौजूद न थी, कहीं गायब हो गयी थी ।

मैना० । हाय हाय, तिलिस्मी किताब भी गई, वही जिसे आप भूतनाथ से...

शेर० । हां वही जिसे मैं भूतनाथ के कब्जे से निकाल ले आया था और जो सोने के जड़ाऊ उल्लू के पेट में बन्द थी* ।

मैना० । भगवान, यह क्या गजब हो गया, यह आप क्या कह रहे हैं !

शेर० । मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं, और जितना बड़ा गजब हो गया उसको भी पूरा ही समझ रहा हूं ।

मैना० । हाय हाय, सब किया कराया धूल में मिल गया, महीनों की मेहनत ही बर्बाद हो गई !

शेर० । कुछ कहने की बात है ! मगर इतने ही पर बस नहीं है, इससे बढ़ के भी कुछ हो गया ।

मैना० । अब और क्या ?

शेर० । जिस किसी की भी यह कारंवाई रही हो, जिसने भी गोपालसिंह को गिरफ्तार कर लिया और तिलिस्मी किताब कब्जे में कर ली हो, उसने आगे की कारंवाई शुरू कर दी और अब तिलिस्म तोड़ने की नीयत से उसके अन्दर जा घुसा है ।

मैना० । नहीं नहीं, यह भला कैसे हो सकता है ! तिलिस्म में कोई घुस भले

---

* देखिए भूतनाथ इक्कीसवां भाग, ग्यारहवां बयान ।

ही जाय, मगर उसको तोड़ने की कार्रवाई करना सम्भव नहीं ।

शेर० । और यही बात है जिसका कोई जवाब मेरे पास नहीं है क्योंकि मैं भी इस बात को अच्छी तरह समझता हूं कि कोई भले ही तिलिस्म में घुस जाय और भले ही तिलिस्मी किताबों पर भी कब्जा कर ले, पर तिलिस्म तोड़ वही सकता है जिसके नाम पर वह बांधा गया है ।

मैना० । तब फिर आप कैसे कहते हैं कि तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई शुरु हो गई !

शेर०। जो देखता हूं वही कहता हूं मैना और क्या कहूं ? बात यह हुई कि जब मैंने गोपालसिंह को गायब पाया और तिलिस्मी किताब भी खो बैठा तो पहिला काम मैंने यह किया कि इस बात को जांचूं कि वह नकली देवीरानी और नकली मैना कौन बना हुआ है ! मुझे यह भी शक था कि जिसने इतनी गहरी कार्रवाइयां कर डाली हैं वह जरूर मेरी तरफ से भी गाफिल न होगा, इसलिए शेरसिंह की सूरत को तिलांजुली दे दी और रोहतासगढ़ रियासत का एक दूसरा ऐयार बन बैठा । थोड़ी मेहनत में ही जान गया कि बूआजी लीला है और मैना कम्बख्त नन्हों !

मैना० । इनमें किसी को भी पकड़ कर और मारपीट कर .....

शेर० । उससे अच्छा मैंने यह समझा कि दोनों को वैसे ही छोड़ दूं और पहिले तुम्हारा पता लगाऊं । उनको पकड़ लेना या कहीं बन्द कर देना कोई मुश्किल नहीं, मुश्किल यह जानना है कि उनके पीछे किसका हाथ है और इस समय गोपालसिंह या बूआजी कहां या किस हालत में हैं और इस काम में तुम्हारी मदद की जरूरत थी ।

मैना० । मुझे आपने खोज ही लिया और मैं सब तरह से तैयार भी हूं, मगर क्या आपको उन दोनों की कुछ खबर लगी ?

शेर० । मुझे सिर्फ इतना पता है कि दारोगा साहब ने किसी को बहुत ही गुप्त रीति से अजायबघर पहुंचाया और वहीं बन्द किया है ।

मैना० । तो आपके लिए उस व्यक्ति को खोज लेना कोई मुश्किल नहीं है, अजायबघर का कोई भेद आपसे छिपा हुआ नहीं है और न उसमें कोई ऐसी जगह है जहां आप न पहुंच सकते हों ।

शेर० । ठीक है, इसीलिए मेरा इरादा है कि एक बार अजायबघर में खोज कर देखूं और पता लगाऊं कि वह व्यक्ति कौन है जो वहां बन्द किया गया है, शायद कुछ भेद मालूम हो जाय ।

मैना० । बेशक मालूम होगा, और आप जरूर खोज लगाइये, अगर मेरे रहने से कोई तरद्दुद न हो तो मैं भी आपके साथ चलने को तैयार हूं ।

शेर० । तरद्दुद नहीं मुझको मदद मिलेगी, मगर तुम कैद की तकलीफ से...

मैना० । नहीं नहीं, उसकी फिक्र न कीजिए और इसी वक्त चलिए । बेचारी बूआजी !

मैना की आंखों में आंसू भर आये पर वह अपने को सम्हाल कर बोली—

मैना० । बेचारी बूढ़ी असहाय और सूधी बूआजी को कम्बख्त न जाने क्या क्या तकलीफ दे रहे होंगे ! उनकी तबीयत भी आज कल ठीक नहीं रहती थी, वह तो कहिए उनमें हिम्मत इतनी है कि उसी के बल पर..... (रुक कर) अच्छा आप चल किधर रहे हैं ?

शेर० । मेरा इरादा तो रोहतासगढ़ की तरफ जाने का था ।

मैना० । और अजायबघर यहां से किस तरफ और कितनी दूर होगा ?

शेर० । पूरब तरफ, और बहुत दूर भी नहीं, क्योंकि हम लोग अभी जमानिया से ज्यादा दूर नहीं आये हैं ।

मैना० । तब फिर चलिए उधर ही चलें । मुझे बेचारी देवीरानी के लिए बड़ी चिन्ता लग रही है । हाय ऐसी सीधी औरत दुष्टों के मारे शान्ति से रहने नहीं पाती !

शेर० । तुम अपनी ताकत पर विचार कर लो और अगर उधर ही को चलना है तो बाईं तरफ को घूमो ।

दोनों आदमी अजायबघर की तरफ रवाना हुए ।

अजायबघर से कुछ इधर ही शेरसिंह ने अपना घोड़ा रोका और मैना से कहा, "दारोगा आज यहीं आया हुआ है, वह अपने मकान में नहीं था इसी से मुझे मौका मिला कि वहां तुमको ढूंढ़ सकूं ।" मैना बोली, "लेकिन उस हालत में आप कैसे अजायबघर में किसी को ढूंढ़ सकेंगे ?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "जहां तक मुझको खबर लगी है वह आदमी अन्दर ड्योढ़ी में पहुंचा दिया गया है और ड्योढ़ी में जाने के लिए बाहर ही बाहर रास्ते हैं । अगर तुम यहां रुक जाओ तो मैं आगे बढ़ कर टोह ले लूं कि कैसा मौका है ।"

एक मुनासिब जगह देख दोनों आदमी रुक गये । शेरसिंह ने अपना घोड़ा उसी जगह छोड़ा और पैदल ही आगे बढ़ गये, मगर मैना अपने घोड़े पर ही सवार रही ।

थोड़ी देर बाद लौट आकर शेरसिंह ने कहा, "दारोगा यहीं है, कम्बख्त मनोरमा भी आई हुई है और शायद धनपत भी मौजूद है। अवश्य इन लोगों में कुछ गुप्त सलाह हो रही होगी ! अगर हमलोग इनकी बात सुन सके तो जरूर कुछ पता लगेगा, मगर मुश्किल यह है कि दारोगा के कुछ सिपाही भी यहां मौजूद हैं और इमारत के चारो तरफ होशियारी के साथ पहरा दे रहे हैं।"

मैना बोली, "तब हम लोग वहां कैसे पहुंच सकेंगे ?" शेरसिंह ने जरा देर कुछ सोचा, तब बोले, "कोई हर्ज नहीं—मैं ऐसे रास्ते से वहां जा सकता हूं कि किसी को कानों कान खबर न लगे, तुम घोड़े से उतरो और चुपचाप कदम दबाये मेरे पीछे पीछे चली आओ।"

पाठक, ये दोनों शेरसिंह और मैना ही वे दो आदमी थे जिन्होंने छिप कर दारोगा धनपत और मनोरमा की बातें सुनी थीं और तब इमारत के अन्दर ही कहीं गायब हो गये थे, मगर हम नहीं कह सकते कि अजायबघर के अन्दर चक्रव्यूह के फाटक पर पहुंच जो कुछ तमाशा दारोगा और मनोरमा ने देखा वह भी इन्हीं शेरसिंह की कारंवाई थी या किसी दूसरे की।

जब अजायबघर का फाटक बन्द हो गया और मनोरमा तथा दारोगा वहां से लौट गये तो शेरसिंह और मैना उस जगह के बाहर निकले जहां अभी तक छिपे हुए थे। शेरसिंह ने कोई तर्कीब ऐसी कर दी कि वह रास्ता जिसकी राह दारोगा पीछे लौट गया था पुनः खुल न सके, इसके बाद कुछ किया जिससे सब तरफ पुनः रोशनी हो गई, शेरसिंह आगे बढ़े और उस पुतली के पास जा खड़े हुए जो फाटक के सामने लटक रही थी।

मैना ने कांप कर कहा, "बड़ी भयानक जगह है !"

शेरसिंह ने जवाब दिया, "इसमें क्या शक है, भयानक भी और डरावनी तथा खतरनाक भी ! तिलिस्मों में जमानिया के जैसा भयानक तिलिस्म कोई दूसरा नहीं और उसके अन्तर्गत चक्रव्यूह के जैसा फैलाव किसी दूसरे का नहीं। लुटिया पहाड़ी की शिवगढ़ी, रोहतासगढ़ का तिलिस्मी तहखाना, खास बाग का चौथा दर्जा, इन्द्रदेव की तिलिस्मी घाटियां, यह सब इसी की शाखें हैं, और यह अजायबघर तो केन्द्र ही है, मगर फिर यह भी है कि इसके जैसी दौलत भी किसी और तिलिस्म में नहीं है और न इसकी टक्कर की सैर और तमाशे की जगहें कहीं और मिलेंगी। इसमें अगर तुम जा सको तो देखोगी कि दो एक ही नहीं कितनी ही जगहें ऐसी हैं कि स्वर्ग भी उनके आगे मात हो जाय ! दुनिया की सब मुसीबतें भूल

के आदमी उन जगहों में बेखौफ अपनी जिन्दगी गुजार सकता है !"

मैना अफसोस से बोली, "मगर अब काहे वे जगहें देखने को मिलेंगी ! बेचारी बूआजी गायब हो गई, आपका कहना है कि कोई दूसरा ही आदमी तिलिस्म के अन्दर घुस कर उसको तोड़ डालने की तरकीब कर रहा है, फिर भला कैसे मेरे जैसो की पहुंच वहां तक हो सकेगी ?"

शेरसिंह ने हंस कर जवाब दिया, "अभी से ऐसी नाउम्मीद मत हो जाओ मैना, अभी कुछ दिन और अपनी हिम्मत तथा मेरी तर्कीब पर भरोसा करो और इस वक्त जिस काम के लिए आई हो उसको पूरा करो। पीछे हटो और उन कोठरियों को देखो।"

हमारे पाठक आज के पहिले भी कितनी ही बार अजायबघर के अन्दर आ जा चुके हैं और उस स्थान से भी अच्छी तरह वाकिफ हैं जिसका ड्योढ़ी के नाम से पुकारा जाता है, अस्तु उनको जरूर मालूम होगा कि इस जगह दोनों तरफ लोहे के जंगलेदार दरवाजे आमने सामने दूर तक लगे हुए हैं और बीच में सुरंग की तरह का एक रास्ता है। पाठकों को यह भी मालूम है कि इन दर्वाजों में से कुछ तो इस जगह के बाहर होने और अन्य स्थानों में जाने के रास्ते हैं मगर कुछ ऐसे भी हैं जिनसे कैदखाने का काम लिया जा सकता है, क्योंकि वे छोटी तंग और अंधेरी कोठरियों की हिफाजत करते हैं। मैना और शेरसिंह ने इन्हीं कोठरियों में अच्छी तरह देखना और तलाश करना शुरू किया और इस काम के लिये जहां जरूरत पड़ती थी शेरसिंह अपने तिलिस्मी खन्जर से भी मदद लेते जाते थे।

यकायक एक कोठरी के जंगलेदार दर्वाजे के पास पहुंच कर ये दोनों चमके और रुक गये। भीतर के पथरीले फर्श पर कोई गाफिल नींद में बदहोश पड़ा हुआ था जिस पर मैना की निगाह पड़ी और उसने शेरसिंह का हाथ पकड़ लिया। शेरसिंह ने खंजर वाला हाथ ऊंचा किया जिसकी तेज रोशनी इस छोटी कोठरी के कोने कोने में फैल गयी और अब साफ मालूम हो गया कि देवीरानी कोठरी में बन्द जमीन पर सो रही है।

मैना के मुंह से निकल गया, "हाय बूआजी, आपकी और यह दशा !"

शेरसिंह अब सब्र न कर सके। उन्होंने तिलिस्मी खंजर का एक हाथ मार वह जंजीर काट डाली जिसमें मोटा ताला बन्द था और तब दर्वाजा खोल कोठरी के अन्दर घुस गये। मैना ने आगे बढ़ बूआजी का सिर उठा कर गोद में ले लिया और उनके चेहरे को अपने आंसुओं से भिगोती हुई बोली, "हाय बूआजी, दुश्मनों

ने आपकी क्या गत कर रक्खी है, आपका शरीर और पथरीले फर्श पर पड़ा
रहे, एक चटाई तक नहीं !"

बूआजी में गर्दन घुमाई और धीमे स्वर में पूछा, "कौन ?" मैना बोली,
"आपकी लौंडी, मैना। आंखें खोलिये, देखिये सरदार साहब भी हैं।"

बूआजी ने उठने की चेष्टा की। मैना ने सहारा देकर बैठाया और वे इन
दोनों को देखती हुई बोलीं, "आ गये शेरसिंह ? मैं सोचा करती थी कि तुम्हें
फिक्र जरूर होगी और बिना मेरा पता लगाये न रहोगे।"

शेरसिंह ने आगे बढ़ कर देवीरानी के पैर छूए और कहा, "कम्बख्तों ने
बड़ी तकलीफ में आपको रक्खा बूआजी–मगर आपने कैसे बर्दाश्त किया मुझे यही
ताज्जुब है !"

देवीरानी बोलीं, "जब वक्त आ पड़ता है तो सभी कुछ सहना पड़ता है ?
तुम अपनी सुनाओ, कैसे मेरा पता तुमको लगा और इस वक्त बाहर की दुनिया
में क्या हो रहा है !"

शेर०। मुझे अपने एक शागिर्द से खबर लगी कि दारोगा ने किसी आदमी
को बड़ी गुप्त रीति से ले जाकर इस अजायबघर में बन्द किया है अस्तु मैं
अन्दाज से ही आपका अनुमान लगाता यहां तक आ पहुंचा। मगर आप बताइये
कि किस तरह दुश्मनों के फेर में पड़ गईं और वह कौन आदमी है जिसकी
इतनी बड़ी हिम्मत हो गई कि आपके खिलाफ उसने हाथ उठाया ?

देवी०। मैं क्या बताऊं शेरसिंह, मैं तो अपने बिछावन पर गाफिल नींद में
पड़ी थी और जब जागी तो अपने को यहां पर पड़े पाया। किसी की तब से आज
तक मैंने शक्ल नहीं देखी, यद्यपि कभी कभी कोई आता जाता जरूर है क्योंकि एक
कोने की तरफ बता कर) खाने पीने का सामान अकसर बदला जाता है और
कभी कभी नींद से उठ कर देखती हूं कि कोठरी की सफाई भी कर दी गई है।
ऐसी कम्बख्त जगह है कि दिन और रात तक का पता नहीं लगता। यह भी नहीं
कह सकती कि कितने दिन मुझको यहां बन्द रहते बीत गये या यह जगह कहां
पर है, अब तुम कहते हो तो जान पड़ा कि यह अजायबघर का कोई हिस्सा है।
खैर बाहर की कुछ खबर सुनाओ। हमारे राजा साहब कैसे हैं या क्या कर रहे हैं !

शेर०। मैं सब कुछ बताऊंगा, पर क्या यह अच्छा न होगा कि पहिले आप
इस जगह के बाहर हो जायें ! यह फिर भी दुश्मन के कब्जे की जगह है और न
जाने कब कौन यहां आ पड़े ! फिर यह स्थान आप जानती ही हैं कि तिलिस्मी

है और अब—जब तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई जारी हो चुकी है, यहां कब क्या
कुछ हो जाय कोई कह नहीं सकता।

बूआ०। (चौंक कर) यह क्या कहा तुमने ! तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई
शुरू हो गई, इसका क्या मतलब ?

शेर०। जी हां, किसी ने तिलिस्मी मामलों में दखल देना शुरू कर दिया है
और इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि अजायबघर के फाटक की हिफाजत करने
वाली पुतली के हाथ से तिलिस्मी किताब और हीरे वाली चाभी ले ली गई है।

बूआ०। हीरे वाली चाभी और तिलिस्मी किताब किसी ने ले ली ? यह
क्या कह रहे हो तुम शेरसिंह !

शेर०। जी हाँ बूआजी, मैं बहुत ठीक कह रहा हूं। और अभी अभी यहाँ
कुछ तिलिस्मी तमाशा भी हम लोगों के देखने में आ चुका है। मगर मेरी प्रार्थना
है कि अब आप और देरी न करें। इस समय जल्दी से जल्दी यहाँ से निकल
चलना ही मुनासिब है।

बूआजी ने कहा, "तुम ठीक कहते हो, चलो मैं तैयार हूं।"

मैना और शेरसिंह ने सहारा देकर बूआजी को उठाया और तीनों आदमी
इस कोठरी के बाहर निकले।

आठवां बयान

यद्यपि पौ फट चुकी है फिर भी पूरी तरह पर चांदना होने में अभी कुछ
विलम्ब है। प्रभात के साथ साथ अपनी मनोरम तानों से सुनने वालों की
तबीयत खुश करने वाली चिड़ियों की आवाज अभी उठी नहीं है और घने पेड़ों
की आड़ में अन्धकार को अभी तक छिपे रहने का मौका मिला हुआ है। यही
सबब है कि उस नौजवान को जो पेड़ों की इस घनी झुरमुट के बीच में से होता
हुआ जा रहा है रास्ता खोजने में दिक्कत हो रही है और उसे थोड़ी थोड़ी देर
पर रुक रुक कर आहट लेते हुए जाना पड़ रहा है।

मगर नहीं, हमारा खयाल गलत है। यह नौजवान इस जंगल को पार करके
किसी जगह जाने के इरादे से नहीं घूम रहा है बल्कि जरूर किसी चीज की तलाश
में है, क्योंकि वह घूम घूम कर बार बार किसी एक खास जगह पर आकर रुक
जाता है, गौर से कुछ देख भाल करता है और तब पुनः चलना शुरू कर देता है।
मगर किस तरह की या कैसी चीज की उसे तलाश है सो कुछ पता नहीं लग रहा

है। आइये हम लोग भी थोड़ी देर तक इसी के पीछे पीछे चलें। शायद तब कुछ जान सकें कि यह कौन है और किस इरादे से इस जंगल बियाबान में ऐसे वक्त में घूम रहा है।

आखिर एक जगह पहुंच कर वह नौजवान रुक गया और अपने चारो तरफ अच्छी तरह देख माल करने बाद आप ही आप उसके मुंह से धीरे से निकल गया—"अगर यह भी वह जगह नहीं है तो फिर आज रात की भी सारी मेहनत बर्बाद ही मानना पड़ेगा क्योंकि सूरज उगने में अब ज्यादा देरी नहीं है, खैर नाप करके तो देख लूं।"

जिस जगह यह नौजवान रुका था वहां और जगहों की बनिस्बत कुछ खुलासगी थी और एक छोटे मैदान में तीन पेड़ इस तरह पर लगे हुए थे कि उनसे एक त्रिकोण सा बन गया था। नौजवान नें कदम कदम चल कर इन तीनों पेड़ों का आपुस का फासला नापा और तब एक पेड़ से बाकी दोनों पेड़ों के मध्य की जगह के बीच का अन्तर नाप कुछ प्रसन्नता के साथ कहा, "स्थान तो यही जान पड़ता है। अब यहां रह कर सूर्य उगने की राह देखनी चाहिए, देखें भाग्य क्या दिखाता है!"

सूर्यदेव के उगने में ज्यादा देरी न थी और कुछ ही समय बाद पूरब के आकाश को फोड़ता हुआ उनका लाल गोला आसमान पर उठा। नौजवान कुछ देर राह देखता रहा। जब किरणें इस लायक हुईं कि चीजों की छाया पड़ सकें, तो वह फिर अपनी जगह से हटा। तीनों पेड़ों की तीन लम्बी छायाएँ दूर तक फैल गई थीं पर जिस कोण से सूर्यदेव उदय हो रहे थे वह कुछ ऐसा था कि दूर जाकर दो पेड़ों की छाया आपुस में सट जाती थी और तीसरे पेड़ की छाया अलग पड़ जाती थी। नौजवान ने कुछ सोचा विचारा, तब कदम नाप नाप कर चलता हुआ दोनों छायाओं के बीच की एक जगह पर पहुंचा और पास से एक औजार निकाल कर जमीन खोदना शुरू किया।

लगभग हाथ भर का गड़हा हो जाने पर नौजवान के हाथ का औजार किसी चीज से टकराया और नौजवान के मुंह से खुशी की आवाज निकल पड़ी। उसने अधिक सावधानी से खोदना शुरू किया और कुछ ही देर में पत्थर की एक सिल्ली को देखा जिसके बीचोबीच में उठाने के लिए लोहे की कड़ी बनी थी। कड़ी पकड़ कर सिल्ली उठाई और गड़हे के बाहर निकाल कर एक बगल रख दी, तब गौर से उस जगह के अन्दर देखना शुरू किया। साफ साफ तो मालूम न हुआ पर बीचोबीच गढ़े में किसी धातु का बना हुआ एक बड़ा सा मुट्ठा जरूर दिखाई

पड़ा जिसे दोनों हाथों से पकड़ कर उसने किसी खास ढंग से घुमाना शुरू किया।

यकायक एक खटके की आवाज आई और उस छोटे गढ़े के बगल की दीवार में एक पतला तंग रास्ता नजर आने लगा। नौजवान के चेहरे पर प्रसन्नता दौड़ गई। उसने अपना सामान सम्हाला और एक बार इधर उधर देखने के बाद उसी गढ़े में उतर गया। बगल की तरफ पतली पतली सीढ़ियां नजर आईं जिन पर उसने पैर रखा।

एक दम अन्धकार में अन्दाज से टटोलता और चलता हुआ नौजवान देर तक बढ़ता चला गया, यहां तक कि वह सुरंग समाप्त हो गई और एक छोटी कोठरी मिली जिसमें चारों तरफ बने हुए सूराखों की राह काफी चांदनी आ रहा था। इस कोठरीके बीचोबीच पत्थरकी एक चौकी रक्खी हुई थी। नौजवान उस पर जा बैठा और उसके पावों को किसी तर्कीब से ऐंठने या घुमाने लगा। कुछ देर बाद एक तरह की आवाज हुई। पावों पर से हाथ हटा नौजवान सम्हल कर बैठ गया और इसके साथ ही उसे लिये हुए वह चौकी तेजी के साथ जमीन के अन्दर घुस गई।

थोड़ी देर के लिए इस नौजवान का साथ छोड़ हम अपने पाठकों को एक दूसरी जगह ले चलते और दूसरा दृश्य दिखाते हैं।

आश्चर्य नहीं कि हमारे बहुत से पाठक इस जगह को देखते ही पहिचान लें, क्योंकि उनके सामने ही वह संगमर्मर वाली ऊंची बारहदरी है जिसका हाल हम कई जगह लिख आये हैं, जिसकी दरों के साथ जंजीरों से बंधी लाशें लटका करती थीं या जहां पर पहुंच के भूतनाथ ने वह अजीबो-गरीब तमाशा देखा था* जिसने उसके होश ठिकाने कर दिये थे। जिन पाठकों को उस स्थान की याद है उन्हें यह भी ख्याल होगा कि वहां पर एक छोटा सा बाग है जिसको करीब करीब चारो ही तरफ से तरह तरह की इमारतों ने घेरा हुआ है और इन्हीं में से एक चौमंजिली इमारत के सिरे पर वह बारहदरी पड़ती है जिसका हमने ऊपर जिक्र किया है—अस्तु।

उस बारहदरी के ठीक सामने पड़ने वाले एक बड़े कमरे में हम अपने पाठकों को ले चल रहे हैं। सूर्योदय हो गया है और सूर्य की पहली किरणों ने खुली हुई खिड़कियों की राह कमरे के अन्दर घुस कर उन लोगों को जगाना शुरू कर दिया है जो इन खिड़कियों के सामने सोए हुए हैं और इस समय ठंडी हवा के झोंके खाकर सगबगाने लगे हैं। ये लोग गिनती में तीन हैं और तीनों ही पाठकों

---

* देखिये भूतनाथ दसवां भाग, चौथा बयान।

के अच्छी तरह जाने पहिचाने लोग हैं अर्थात् ये शेरसिंह बूआजी और मैना हैं।

सबसे पहिले शेरसिंह की आंखें खुलीं और वे एक अंगड़ाई लेकर उठ बैठे। उनकी आहट पाकर बूआजी भी जाग गईं और उनकी एक आवाज पर मैना चकपकाती हुई उठ बैठी। शेरसिंह ने बूआजी से पूछा, "आपकी तबीयत अब कैसी है!" उन्होंने जवाब दिया, "बिल्कुल ठीक है––मगर अब तुम्हारा इरादा क्या और किधर चलने का है सो बताओ?"

शेरसिंह बोले, "मन में तो मेरे यही आता है कि आपको चुपके से ले जाकर आपकी जगह पर बैठा दूं और उस ऐयारा को जो आपकी सूरत बनी वहां डटी हुई है इस ढंग से गायब कर दूं कि किसी को कानों कान पता न लगे, ऐसा करने से सब बातें साफ हो जांयगी कि किसका यह काम है और इसे करने वाले का इरादा क्या है क्योंकि वह जरूर ही आपसे मिलने आवेगा और दो बातों में ही आप पर सब कुछ प्रकट हो जायगा, लेकिन......"

बूआजी०। लेकिन क्या?

शेर०। इधर तिलिस्म में भी आपकी मौजूदगी जरूरी है। आपसे मैंने कहा कि कोई आदमी इसके अन्दर घुस आया है और यहाँ की कारंवाइयों में दखल देने लगा है। मुमकिन है उसका इरादा तिलिस्म तोड़ यहां की दौलत निकाल लेने का हो। मगर यहां तिलिस्म में जो कुछ भी है वह राजा गोपालसिंह की अमानत है और वह किसी दूसरे के हाथ में न जाना चाहिए।

मैना०। लेकिन क्या यह मुमकिन है कि राजा गोपालसिंह के बदले कोई गैर आदमी इस तिलिस्म में घुस आवे और तिलिस्म तोड़ यहाँ की दौलत निकाल ले जाय? क्या तिलिस्म बनाने वाले इस बात का इन्तजाम नहीं कर गये होंगे?

बूआजी०। (शेरसिंह से) एक तो तुम्हारी इस बात पर मुझे बिल्कुल यकीन नहीं आ रहा है कि कोई गैर आदमी तिलिस्म में घुस आया और यहाँ की कारंवाई में दखल देने लगा है, क्योंकि ऐसा होना तिलिस्मी कायदों के बिल्कुल खिलाफ है, दूसरे क्षण भर के लिये अगर मान भी लिया जाय कि ऐसा हो ही रहा है, तो मैं औरत की जात, इस सम्बन्ध में कर ही क्या सकती हूं! मुझे तिलिस्म के असली भेदों की जानकारी तो कुछ भी नहीं, मेरी बनिस्बत तुम बहुत ज्यादा हाल तिलिस्म का जानते हो क्योंकि अभी अभी एक तिलिस्म तुड़वा चुके हो और तिलिस्मी किताब भी तुम्हारे पास है। मेरी बनिस्बत तो तुम्हीं कुछ करने की ज्यादा कूवत रखते हो।

शेर०। आपका कहना ठीक है और अब तक मैं यही समझता भी था, पर अब जो कुछ हुआ या हो रहा है वह मेरी अक्ल के बाहर की बातें हैं। जो कुछ होना चाहिये या यों कहिये कि जो मेरी किताब में लिखा है उसके बिल्कुल विपरीत बातें हो रही हैं और उसका एक सबूत देखिये वह आपके सामने है।

शेरसिंह ने सामने की तरफ उंगली उठाई और खिड़की के बाहर उस छोटे बाग के दूसरी तरफ ठीक सामने ही नजर आती हुई उस ऊंची संगमर्मर की बारहदरी की तरफ बताते हुए कहा, "वह बारहदरी देखती हैं! उसकी दरी के साथ लटकती शकलें भी देखती हैं? मेरी किताब में लिखा हुआ है कि यह सिर्फ एक तमाशा लोगों के मनबहलाव के लिए यहां बनाया गया है। इन मूरतों की शकलें तरह तरह की बनाई जा सकती हैं, इनके मुंह से तरह तरह की आवाजें और बातें निकलवाई जा सकती हैं, और इनसे तरह तरह के काम लिए जा सकते हैं। मगर इस वक्त क्या हो रहा है देखती हैं! देखिये एक एक करके ये मूरतें गायब होती जा रही हैं। अब तक तीन मूरतें गायब हो चुकी हैं, और चौथी वह देखिये ऊपर को उठी, अब यह भी कहीं लोप हो जायगी!"

बूआजी और मैना ने देखा कि सचमुच ही बारहदरी की कड़ियों के सहारे लटकती हुई एक मूरत इस तरह पर ऊपर को उठी मानों किसी ने ऊपर से उसकी जंजीर को खैंचा हो और तब ऊपर ही कहीं लोप हो गई। कुछ देर बाद बगल की एक मूरत उसी तरह पर उठी और गायब हो गई। इन लोगों के देखते देखते बारहदरी में दिखाई पड़ने वाली सब मूरतें गायब हो गईं और मेहराब खाली नजर आने लगे।

शेरसिंह ने बूआजी से कहा, "तिलिस्मी कार्रवाई जारी है इसका सबूत आपने देख लिया। अगर मेरा ख्याल गलत नहीं है तो इस कार्रवाई का करने वाला भी कोई न कोई यहां जरूर मौजूद होगा और बहुत जल्द हम लोग उसको भी देखेंगे। अब सोचना यही है कि इस वक्त हम लोगों का कर्तव्य क्या है और इसी बात में मैं आपकी सलाह और आज्ञा चाहता हूं। हम लोगों के देखते देखते कोई गैर आदमी तिलिस्म में घुस आये और यहां की कार्रवाइयों में दस्तन्दाजी करे, यह बात बात कम से कम मुझे तो अच्छी नहीं लग रही है।"

बूआजी०। तो तुम क्या करना चाहते हो!

शेर०। मैं चाहता हूं कि वह जो कोई भी हो और जिस नियत से भी यहां घुसा हो, मैं उसे गिरफ्तार करूं और उसकी अच्छी तरह जांच करूं।

बूआजी०। (हँस कर) तो ऐसा ही करो, तुम्हें रोकता ही कौन है! आनी

तरफ से मैं तुम्हें सिर्फ इतना ही कह सकती हूं कि मुझसे इस मामले में किसी तरह के मदद की उम्मीद न रक्खो क्योंकि इस तिलिस्म का अन्दरूनी हाल मैं कुछ भी नहीं जानती।

शेर०। मैं सिर्फ इतनी मदद आपकी चाहता हूं कि अगर अपना इरादा पूरा करने की झोंक में मैं किसी तरद्दुद में पड़ जाऊं और आपके पास शीघ्र लौट न सकूं तो आप घबड़ाए नहीं और मैना को लिए हुए किसी हिफाजत की जगह में जा बैठें, तब तक रोहतासगढ़ में जाने की कोशिश न करें जब तक मैं साथ न रहूं बल्कि यहीं कहीं तिलिस्म के अन्दर ही रहें। मैं स्वयं आपको खोज लूंगा।

बूआजी०। मगर इस तिलिस्म में मैं जाऊंगी ही कहाँ या क्या करूंगी? मुझे यहाँ का हाल ही क्या मालूम है! हां यह कर सकती हूं कि जब तक तुम न लौटो यहीं बैठी रहूं।

शेर०। (कुछ रुक कर) आपने मुझसे कहा था कि आप वृद्ध महाराज के साथ कई बार इन तिलिस्मों की अच्छी तरह सैर कर चुकी हैं... मगर खैर जाने दीजिए, आप यहीं बैठी रहिये, मैं जाता हूं। अगर मेरा खयाल ठीक है तो वही नौजवान इन सब झमेलों की जड़ है और अब वह कोई दूसरी कारंवाई करने की धुन में है। मैं इसी वक्त उसकी खबर लेता हूं।

शेरसिंह ने उंगली से एक तरफ दिखाया और अब बूआजी और मैना की निगाह भी उस नौजवान पर पड़ी जो नीचे बाग में एक चबूतरे के सामने खड़ा कुछ कर रहा था। शेरसिंह फुर्ती से उठ खड़े हुए और मैना से यह कहते हुए कि—'बूआजी का खयाल रखना और इस जगह के बाहर न जाना जब तक कि मैं लौट कर न आऊं' उस कमरे के बाहर निकल गए। बूआजी और मैना कौतूहल के साथ नीचे झांकती हुई इस बात की राह देखने लगीं कि अब क्या होता है।

कुछ ही देर बाद हम शेरसिंह को नीचे के बाग में पहुंच उस नौजवान की तरफ बढ़ते हुए पाते हैं। इस समय उनका ठाठ तिलिस्मी है, यानी वही है जिसके द्वारा वे तिलिस्मी भूत बनते थे अर्थात् वह तिलिस्मी कवच उनके बदन पर है और तिलिस्मी हथियार पास में और इसी सबब से हम नहीं कह सकते कि बूआजी और मैना भी ऊपर से उनको देख सकती हैं या नहीं, क्योंकि इस समय वे साधारण मनुष्य की दृष्टि से एक दम लोप हैं*। जिस नौजवान की तरफ ये जा रहे हैं

* इस तिलस्मी कवच का हाल पाठक 'भूतनाथ' में पढ़ चुके हैं। इसको पहिनने वाला जब चाहे मनुष्य की दृष्टि से लोप हो सकता था। देखिये भूतनाथ बीसवां भाग, आठवां बयान।

वह एक चबूतरे के सामने खड़ा होकर कुछ कर रहा है और शेरसिंह भी कदम दबाये उसी तरफ को बढ़ रहे हैं।

जान पड़ता है कि वह नौजवान जो कुछ भी करना चाहता था वह काम पूरा हो गया, क्योंकि वह उस चबूतरे के पास से कुछ हट कर खड़ा हो गया और उसी समय एक गड़गड़ाहट की आवाज के साथ वह चबूतरा जमीन में घुस गया और उसकी जगह एक गड़हा दिखाई पड़ने लगा जिसकी शक्ल कुछ कूएं की तरह पर थी। नौजवान ने आगे बढ़ कर अपने पैरों से कुछ किया, कूएं के भीतर से एक आवाज आई और तब एक सुनहला सिंहासन उसके अन्दर से निकलता दिखाई पड़ा जो किस सहारे से उठ रहा है इसका पता नहीं लगता था। सिंहासन गढ़े की सतह पर पहुंच कर रुक गया और नौजवान ने—शायद उस पर जा बैठने की नीयत से--आगे कदम बढ़ाया।

एक सायत के लिए ऐसा मालूम हुआ मानों शेरसिंह उस नौजवान को टोके या उससे कुछ कहेंगे, मगर फिर न जाने क्या सोच कर वे रुक गये। कुछ सोचा और तब अपने को सब तरह बचाते हुए उस सिंहासन के ऊपर चढ़ गये जो इस लायक था कि उस पर सात आठ आदमी कुशादगी से बैठ सकते थे। यह नौजवान भी उस पर आ चढ़ा और तब उसने न जाने क्या किया कि वह सिंहासन पुनः उसी तरह नीचे उतरने लगा जिस तरह ऊपर चढ़ा था।

काफी नीचे उतर जाने के बाद वह सिंहासन रुका और अन्दाज से शेरसिंह को मालूम हुआ कि अब वह आगे को बढ़ रहा है। देर तक वह चलता रहा, तब रुका और पुनः ऊपर उठने लगा। इसके बाद जब वह सिंहासन रुका तो शेरसिंह ने अपने को एक ऐसी जगह में पाया जहां वे इसके पहिले भी कई बार आ चुके थे और अगर हमारा खयाल सही है तो हमारे पाठक भी एकाध बार यहां आ चुके हैं, ताज्जुब नहीं कि इस जगह का कुछ वर्णन सुन कर पाठकों को इसकी याद आ जाय।

एक बहुत ही बड़ा बाग है जो कितना लम्बा चौड़ा है इसका कुछ पता नहीं लगता। चारो तरफ दूर दूर तक जिधर निगाह जाती है घने और गुंजान पेड़ ही नजर आते हैं, मगर बीच की कुछ जगह जहाँ इस समय यह नौजवान और उससे कुछ दूर हट कर शेरसिंह खड़े हैं, पेड़ों से खाली है। इस जगह चारों तरफ बहुत से फुहारे बने हुए हैं और बीचोबीच में ऊंची कुर्सी देकर एक संगममंर की बारहदरी है जो काफी लम्बी चौड़ी और कुशादा है। बारहदरी से कुछ हट

कर एक नाला नजर आता है जिसमें बहुत तेजी से पानी बह रहा है--मगर वह किधर से आता या किधर को जा रहा है इसका कुछ पता नहीं लगता* ।

सिंहासन से उतर वह नौजवान उस बारहदरी के पास जाकर खड़ा हुआ। थोड़ी देर तक वह न जाने क्या सोचता रहा, तब उसी जगह एक साफ पत्थर पर बैठ गया और अपने कपड़ों के अन्दर से उसने एक छोटी सी किताब निकाली जिसे एक जगह से खोल बहुत ध्यान से पढ़ने लगा। इस किताब की सूरत देखते ही शेरसिंह चौंक पड़े, दबे पांव नौजवान के पास पहुंच वे कुछ देर तक उसको गौर से देखते रहे तब मन ही मन बोले, "बेशक वही है।" न जाने उन्होंने क्या सोचा कि यकायक हाथ बढ़ा कर वह किताब छीन ली। औचक में पड़ा हुआ वह नौजवान कुछ भी न कर सका। उसके मुंह से केवल एक आश्चर्य की आवाज निकली और उधर वह किताब शेरसिंह के कपड़ों के अन्दर छिपकर लोप हो गई❁ ।

नौजवान चमक कर उठ खड़ा हुआ और उसके हाथों में एक हलकी तलवार नजर आने लगी जिसके लोहे पर सुनहला पानी चढ़ा हुआ था। मगर वह वार करे तो किस पर और अपनी किताब खोजे तो कहां ! न तो शेरसिंह ही उसे दिखाई पड़ते थे और न अब कहीं किताब ही नजर आती थी। वह भौंचक की तरह इधर उधर देखने लगा और उसके मुंह से आप ही आप निकल गया, "यह क्या हो गया ? तिलिस्मी किताब कहां चली गई !"

सुनहरी तलवार हाथ में लिए नौजवान आगे बढ़ा और इधर से उधर घूमने लगा। शेरसिंह चुपचाप उसकी कार्रवाई देखते और मन ही मन मुस्कुराते जा रहे थे। वे मुंह से कुछ भी न बोले, मगर नौजवान के पास से हट कर कुछ दूर जा खड़े हुए। घबड़ाया हुआ नौजवान देर तक इधर से उधर घूमता रहा, पर जब उसको कुछ भी पता न लगा तो हार कर वह एक जगह खड़ा हो गया और अपने कपड़ों के अन्दर से एक जफील निकाल कर जोर से बजाई।

अभी कठिनता से उस जफील का तीक्ष्ण स्वर मिटा होगा कि नौजवान के बगल ही में एक सुफेद शक्ल खड़ी दिखाई पड़ने लगी। यह कहां से आई या कैसे

* इस बारहदरी का हाल पाठक भूतनाथ सत्रहवें भाग के छठवें बयान में पढ़ चुके हैं।

❁ पाठकों को याद रखना चाहिए कि तिलिस्मी कवच की तासीर से शेरसिंह दृष्टि से लोप हैं।

उस जगह प्रकट हो गई यह हम कुछ भी नहीं कह सकते और न उस सुफेद आकृति की सूरत शक्ल ही के बारे में हम कुछ कह सकते हैं--जो कुछ नजर आता था वह सिर्फ एक सुफेद खोल थी जिसमें आंख कान नाक मुंह या हाथ पांव का कोई नाम निशान न था, बस यही जान पड़ता था कि एक सफेद ढांचा सामने खड़ा है।

इस सफेद खोल के अन्दर से आवाज आई, "क्यों बेटा, क्या है ! क्यों मुझे बुलाया ?" नौजवान उसी तरफ घूम कर बोला, "अभी अभी क्या हो गया कुछ मेरी समझ में न आया, मैं आगे की कार्रवाई समझने के लिए तिलिस्मी किताब देख रहा था कि यकायक वह कहीं लोप हो गई !"

उस सफेद आकृति के अन्दर से एक हलकी हँसी की आवाज आई, तब यह सुनाई दिया, "क्या तुम उसको देखना चाहते हो जिसने तुम्हारी किताब छीन ली है !" नौजवान ने उत्कण्ठा से कहा, "जरूर, अगर किसी ने उसको मुझसे छीन लिया है तो जरूर मैं उससे निपट लेना चाहता हूं।" सुफेद शक्ल बोली, "यह शीशा लो और अपनी आंखों के सामने लगाओ। उसको देख सकोगे जिसकी यह कार्रवाई है।" नौजवान के हाथ में कोई चीज आ गई और उधर वह सुफेद शक्ल गायब हो गई।

नौजवान ने यह शीशा अपनी आंखों के सामने लगाया और एक बार चारो तरफ देखा, तब अपना तलवार वाला हाथ ऊँचा किया और सीधा शेरसिंह की तरफ बढ़ता हुआ डपट कर बोला, "बस धीरे से मेरी किताब सामने रख दो नहीं तो अभी काट कर दो टुकड़े कर दूंगा !"

शेरसिंह ताज्जुब में डूब कर कुछ देर के लिए सकते की सी हालत में हो गये। इस शीशे में क्या कोई ऐसी करामात है कि वह तिलिस्मी कवच की तासीर को भी मात कर दे ! वे तो इस समय दुनिया की आंखों से छिपे हुए हैं, तब उस नौजवान ने उन्हें कैसे देख लिया ! जरूर यह उस शीशे की ही करामात है ! पर यह आया कहां से, और वह सुफेद शक्ल कौन थी जिसने ऐसी चीज नौजवान को दी, वे अभी यही सब कुछ सोच रहे थे कि डपटता हुआ वह नौजवान उनके सामने आ खड़ा हुआ और तलवार उठा कर बोला, "बस फौरन मेरी किताब मेरे हवाले कर दो नहीं तो जान रक्खो कि मैं जरा भी मुलाहिजा न करूँगा और काट कर दो टुकड़े कर दूंगा !"

शेरसिंह चमक गये। यह किसकी आवाज वे सुन रहे हैं ! यह नौजवान कौन है ! जरूर यह उनकी जान पहिचान का ही कोई है और जरूर इस

मगर इस वक्त ज्यादा सोच
आवाज को वे आज के पहिले कहीं सुन चुके हैं। झपटता हुआ वह नौजवान सिर पर आ पहुंचा था
बिचार का मौका न था। और नजदीक ही था कि तलवार का वार कर बैठे। एक क्षण के लिए शेरसिंह
के मन में आया कि नौजवान को वार करने का मौका दें और देखें कि
तिलिस्मी कवच ऐसे मौके पर उनकी हिफाजत करता है या नहीं पर फिर न
जाने क्या सोच उन्होंने वैसा न किया। वे पैतरा बदल कर एक कदम पीछे हट
गये और साथ ही अपने हाथ से एक झटका नौजवान के बाएँ हाथ पर ऐसा
मारा कि वह हाथ हिल गया और जो शीशा उसमें पकड़े वह आंखों के सामने
किए हुए था वह हाथ से छूट जमीन पर गिर टुकड़े टुकड़े हो गया। साथ ही
गुस्से में भरे हुए नौजवान ने तलवार का वार उन पर किया जिसे अपनी फुर्ती
और चालाकी से उन्होंने खाली कर दिया। मगर अब उनका और नौजवान का
कोई मुकाबला रह न गया था, शीशा आंखों के सामने से हटते ही नौजवान के
सामने से शेरसिंह पुनः पहिले की तरह लोप हो गये थे।

झुंझलाया हुआ वह नौजवान तलवार के हाथ इधर उधर मारने लगा
मगर इससे क्या हो सकता था! वह शीशा अब कहाँ उसकी आंखों के सामने
था जिसकी बदौलत वह उनको देख पाता। शेरसिंह कुछ देर तक मुस्कुराते
हुए उसकी यह कारवाई देखते रहे, इसके बाद हँस कर बोले, "नौजवान—
सम्हलो; होश में आओ और बताओ कि तुम कौन हो और इस तिलिस्म
के अन्दर क्यों आये हो?"

वह नौजवान सम्हल कर खड़ा हो गया। कुछ देर तक वह इस आवाज पर
गौर करता रहा, तब बोला, "यह बताने के पहिले मैं यह जानना चाहता हूं कि
तुम कौन हो, यहां किस तरह आ पहुंचे और तुमने मेरी किताब क्यों ले ली!"

शेरसिंह ने जवाब दिया, "मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूं और गैर आद-
मियों से यहाँ की दौलत और यहाँ के सामान की हिफाजत करना मेरा काम
है। अब तुम बताओ कि कौन हो और यहाँ क्यों आए?"

नौजवान कुछ देर चुप रहा। ऐसा जान पड़ता था कि मानों वह इस
आवाज पर गौर करके इसको पहिचानने की कोशिश कर रहा है। आखिर वह
बोला, "सिवाय इसके मैं और क्या कह सकता हूं कि मैं इस तिलिस्म का मालिक
हूं और यहां जो कुछ है यह सब कुछ मेरा ही है।"

शेरसिंह जोर से हंस पड़े फिर चुप हो गये। उनका शक फिर लौट आया
था। जरूर इस आवाज को वे आज के पहिले भी सुन चुके हैं। तब आखिर यह

नौजवान है कौन और किस बूते पर इतना बढ़ बढ़ कर बातें कर रहा है?
आखिर वे बोले, "तुम्हारा नाम क्या है?" नौजवान तुरन्त बोल उठा, "और
तुम्हारा नाम क्या है?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "लोगों में मैं तिलिस्मी भूत
के नाम से मशहूर हूं।"

"तिलिस्मी भूत!" नौजवान के मुंह से आप ही आप कुछ आश्चर्य के
साथ निकल गया। शेरसिंह बोल उठे, 'हां तिलिस्मी भूत! और तुम अगर
चाहो तो मैं तुम्हें अपनी शक्ल भी दिखा सकता हूं। क्या मैं तुम्हारे सामने प्रकट
होऊं—तुम डरोगे तो नहीं?"

नौजवान हंस कर बोला, "नहीं, तुम भूत प्रेत या पिशाच जो कोई भी
हो विश्वास रक्खो कि मैं डरूंगा नहीं! तुम जरूर मुझे अपनी सूरत दिखाओ!!"

एक पटाखे की आवाज हुई और बहुत सा धूआं उस जगह फैल गया जिसने
धीरे धीरे साफ होकर तिलिस्मी भूत की डरावनी सूरत पैदा कर दी।

इसमें शक नहीं कि वह नौजवान बड़ा ही हिम्मती और दिलावर था।
तिलिस्मी भूत की डरावनी सूरत ने उसके ऊपर कोई डर या खौफ कायम न
किया बल्कि वह चमक कर शेरसिंह के सामने आ गया और अपनी तलवार
सम्हाल कर बोला, "बेशक तुम्हारी शक्ल भूत जैसी ही है, मगर इतना मैं समझ
गया कि इस सूरत के भीतर छिप कर तुम अपना कोई काम बनाया चाहते हो।
तुमने अच्छा किया जो मेरे सामने प्रकट हो गये, अब कम से कम तुमसे दो दो
हाथ तो मैं कर ही सकूंगा और पूछ सकूंगा कि तुमने मेरी किताब क्यों छीन ली?"

शेरसिंह बोले, "अगर तुममें इतनी हिम्मत है तो मैं तुमसे लड़ने को
तैयार हूं मगर याद रक्खो कि मैं तिलिस्मी शय हूं और तुम मेरे सामने एक पल
भी नहीं ठहर सकते।"

नौजवान ने जवाब दिया, "इसका फैसला तो दो हाथ से ही लग जायगा।
तुम भूत हो या पिशाच या कोई शय ही क्यों न हो मैं तुमसे लड़ने को तैयार हूं!"

नौजवान ने अपनी तलवार सम्हाली और उधर शेरसिंह के हाथ में भी एक
नीमचा दिखाई पड़ने लगा, मगर फिर न जाने क्या सोच कर उन्होंने उस हथि-
यार को ठिकाने रख लिया और एक गोला अपने कपड़ों के अन्दर से निकाला।
उस नौजवान को गोला दिखा कर वे बोले, "अगर इस गोले की तासीर से तुम
बच गए तो मैं समझूंगा कि तुमसे लड़ने के लिए हथियार की जरूरत पड़ेगी।"

नौजवान बोला, 'मालूम पड़ता है कि तुम न भूत हो न प्रेत बल्कि कोई
चालाक ऐयार हो और मुझको..." मगर इसके आगे कहने की उसको मोहलत

न मिली। शेरसिंह ने वह गोला उस नौजवान के सामने की तरफ जमीन पर पटक दिया जो गिरते ही फूटा और उसके अन्दर से बहुत ज्यादा धूएँ ने निकल कर उस नौजवान को चारो तरफ से घेर लिया।

जरूर इस धूएँ में बेहोशी का असर था, क्योंकि जब वह धूआं साफ हुआ तो हमने देखा कि वह नौजवान बेहोश जमीन पर पड़ा हुआ है। शेरसिंह, जो यही चाहते थे, तुरन्त उसके पास पहुंचे और देर तक गौर से उसकी शक्ल देखते रहे, तब आप ही आप बोले, "मैं इसे बिल्कुल नहीं पहिचानता और साथ ही इसकी सूरत बदली हुई भी नहीं जान पड़ती क्योंकि रंग का कहीं नाम निशान नहीं है, फिर भी एक दफे धोकर देख लेना चाहिए।" पास ही बहते हुए नाले से वे कपड़ा गीला करके ले आये और उस नौजवान के चेहरे को उससे देर तक कस कर रगड़ते रहे पर सूरत में किसी तरह का फर्क पड़ते न देख आखिर रुक कर बोले, "सूरत हर्गिज बदली हुई नहीं है, फिर भी आवाज जरूर पहिचानी हुई सी जान पड़ती है! इसे बूआजी के पास ले चलना चाहिए, शायद वे इसके बारे में कुछ कह सकें!"

शेरसिंह ने चाहा कि नौजवान को गठरी में बांधें और ले चलें, मगर इसी समय उनकी निगाह उस सुनहरी तलवार पर गई जो वह नौजवान लिए हुए था, पर जो अब उसके हाथ से छूट कर पास ही जमीन पर जा गिरी थी। उसे उठाना चाहा पर यकायक रुक गए और एक निगाह गौर से देख कर बोले, "जरूर तिलिस्मी है!" उन्होंने नौजवान की उंगलियों पर गौर किया, तिलिस्मी हथियारों के जोड़ की अंगूठी पड़ी देखी—तब वह तलवार उठा कर उसकी कमर से लगी म्यान के अन्दर डाल दी* इसके बाद नौजवान की गठरी बांधी और पीठ पर लाद कर ले चले।

इसके थोड़ी देर बाद हम शेरसिंह को अपनी मामूली सूरत में उस नौजवान की गठरी उठाये उसी कमरे में वापस लौटते देखते हैं जहां वे बूआजी और मैना को छोड़ गये थे। इन्हें देर लगाते पा वे दोनों घबरा रही थीं पर अब इनको वापस लौटते देख बूआजी ने एक लम्बी सांस खींच कर कहा, "बारे तुम किसी तरह लौटे तो सही शेरसिंह! मैं तो घबरा रही थी कि क्या मामला है और तुम इतनी देर कहां लगा रहे हो? इस गठरी में मालूम होता है तुम उसी नौजवान

* पाठक समझ ही गये होंगे कि शेरसिंह के पास जो तिलिस्मी हथियार और उसके जोड़ वाली अंगूठी थी उसके कारण उन पर यह तलवार छूने का असर न हुआ।

को लाए हो?"

शेरसिंह ने कहा, "जी हां, यही बात है बूआजी!" और तब नौजवान की गठरी धीरे से जमीन पर रखते हुए कहा, "मैं इसे पकड़ लाया हूं पर ताज्जुब की बात यह है कि यद्यपि इसकी आवाज कुछ शक जरूर पैदा करती है मगर मैं कुछ भी पहिचान नहीं पाता कि यह नौजवान है कौन? मैं इसलिये इसे यहां ले आया कि शायद आप कुछ समझ सकें कि यह कौन है?"

इतना कह शेरसिंह ने वह गठरी खोली और उस नौजवान का चेहरा बूआजी के सामने किया जो देर तक गौर से उसकी तरफ देखती रहीं और तब सिर हिला कर बोलीं, "नहीं मैं इसे बिल्कुल नहीं पहिचानती, मैंने आज तक कभी यह सूरत नहीं देखी!"

बूआजी के साथ साथ मैना ने भी गौर से उस नौजवान की सूरत देखी थी। इस समय उसने कहा, "मुझे यह आकृति कुछ पहिचानी सी जान पड़ती है मगर कुछ ख्याल नहीं पडता कि कब या कहाँ पर इसे देखा है, और आप कहते हैं कि इसकी आवाज आपकी पहिचानी हुई मालूम होती है?"

शेर०। बेशक ऐसा ही है, देखो अब यह होश में आ रहा है, तुम भी बात करके देख लो।

सचमुच अब वह होश में आ रहा था। मैना ने यह देख कर कहा, "क्या इसके हथियार ले लेना और हाथ पैर बांध देना बेहतर न होगा?" मगर शेरसिंह लापरवाही से बोले, "क्या जरूरत है? मैं जब चाहूं इसे बेहोश कर दे सकूंगा। यह हम लोगों का कुछ बिगाड़ नहीं सकता!" फिर भी उन्होंने अपने चेहरे पर नकाब जरूर डाल ली।

थोड़ी देर बाद उस नौजवान ने एक करवट बदली, एक दो दफे अंगड़ाई ली, और तब आंख खोली। कई लोगों के बीच अपने को पा वह ताज्जुब करता हुआ उठ बैठा और गौर से सभी की सूरत देखने लगा। उसके चेहरे पर आश्चर्य का कुछ भाव आ गया था जिसे देख शेरसिंह ने उससे पूछा, "नौजवान तुम कौन हो और किस तरह इस जगह आ पहुंचे?"

नौजवान ने गौर से शेरसिंह की तरफ देखा और कहा, "मैं खुद नहीं जानता कि कैसे इस जगह आ पहुंचा। मगर आप लोगों को यहां देख कर मुझे जरूर ताज्जुब हो रहा है। क्या आप लोग इस जगह कैद कर दिये गये हैं?"

शेरसिंह के इशारे से मैना ने उस नौजवान से बातें करना शुरू किया—

मैना०। हाँ, हम लोग कैदी के तौर पर ही इस जगह अपनी मुसीबत की

जिन्दगी गुजार रहे हैं, पर आप कौन हैं? क्या हम लोग यह समझें कि आप भी कैदी बना कर इस जगह भेजे गये हैं?

नौज०। (सिर हिला कर) मुमकिन है कि आगे चल कर यह बात सही साबित हो पर कम से कम अभी तक तो मैं ऐसा नहीं समझता। क्योंकि (कमर को हाथ लगा कर) मेरी तलवार मेरे पास है और मेरा (छाती के ऊपर हाथ लगा और कोई चीज टटोल कर) बाकी सब सामान भी मेरे पास है, सिवाय एक किताब के जिसे मैं कहीं नहीं देख रहा हूं।

मैना०। वह किताब कैसी थी?

नौज०। उसमें कुछ बहुत जरूरी बातें लिखी हुई थीं और अगर मेरा ख्याल सही है तो उसको जरूर उसी कम्बख्त ने ले लिया जो अपने को तिलिस्मी भूत कहता था और जिसने धोखा देकर मुझको बेहोश कर दिया था। शायद मुझे यहां तक ले आने वाला भी कम्बख्त वही हो। पर खैर कोई हर्ज नहीं, जब मेरे हाथ पांव खुले हुए हैं और मेरा सामान मेरे पास मौजूद है तो अब भी मैं बहुत कुछ कर सकता हूं!"

कहते हुए नौजवान ने वही सीटी निकाली जिससे एक बार पहिले भी काम लिया था और उसे होठों से लगा कर जोर से बजाया। सीटी की तेज आवाज सब तरफ गूंज गई और इसके साथ ही कहीं से आवाज आई, "क्यों बेटा, मुझे क्यों बुलाया?"

वही सुफेद शक्ल जो एक बार पहिले शेरसिंह को दिखाई दी थी पुनः उस नौजवान के बगल में नजर आई। सब लोग और खास कर शेरसिंह बड़े गौर से उस सूरत को देखने लगे। नौजवान ने उसे देखते ही कहा, "यह मैं कहां आ गया! ये लोग कौन हैं! और तिलिस्मी किताब कहां है?"

उस सुफेद शक्ल ने जवाब दिया, "तुम तिलिस्म के अन्दर हो, ये लोग तुम्हारे दुश्मन हैं और तुमको धोखा देना चाहते हैं। तुम्हारी किताब (शेरसिंह की तरफ बता कर) इसके पास है।"

यह सुनते ही वह नौजवान चमक गया और उसका हाथ अपनी तलवार पर गया। शेरसिंह ने समझा कि शायद वह उन पर वार करे और इसलिए वे भी होशियार हो गये, पर उस नौजवान ने जो कुछ किया उसके लिए वे बिलकुल ही तैयार न थे। नौजवान ने अपनी सुनहरी तलवार कमर से निकाली और उसे एक खास ढंग से झटका देकर शेरसिंह की तरफ घुमाया। ताज्जुब की बात थी कि झटका खाते ही वह तलवार लम्बी हो गई और देखते देखते उसने शेरसिंह को

बांहों के पास से कस कर इस तरह लपेट लिया जिस तरह कि कोई चाबुक खम्भे पर मारने से उस खम्भे को लपेट लेती है। इसका कसाव इतना जबर्दस्त था कि वे हाथ हिलाने लायक भी न रहे।

यह काम इतनी फुर्ती से हो गया कि देखने वालों को पलक झपकाने की मुहलत भी न मिली। सभों को बेहद ताज्जुब हुआ मगर खास कर शेरसिंह की तो गुस्से के मारे अजब हालत हो गयी। क्रोध के सबब से उनके मुंह से बात निकलना मुश्किल हो गया, बड़ी कठिनता से उन्होंने कहा, "मैना, देख क्या रही है। सब आफत की जड़ वह सुफेद शक्ल है। जैसे बने उसे पकड़, देख जाने न पावे!"

मैना अपनी जगह से उठने लगी मगर उस सुफेद शक्ल ने उसे डांट कर कहा, "क्या तेरी शामत आई है! चुपचाप बैठी रह, खबरदार जो जुम्बिश खाई है। (नौजवान की तरफ घूम कर) तुम देर क्यों कर रहे हो! क्या अपने काम की फिक्र नहीं है? तुम्हारी किताब इसकी जेब में है, उसे निकालो और चलो यहां से!"

नौजवान आगे बढ़ा और टटोल कर उसने अपनी किताब शेरसिंह की जेब से निकाल ली। उस तिलिस्मी तलवार ने शेरसिंह को इस तरह बेबस किया हुआ था कि वे अपनी जगह से जरा जुम्बिश भी न खा सकते थे। हाथ तो बंधे ही हुए थे, शायद उसी तलवार की बरकत से उनके सारे बदन में कुछ इस तरह की झुनझुनी चढ़ रही थी कि वे उठ कर खड़े भी न हो सकते थे। वे क्रोध से भर गये थे मगर मुंह से एक बात तक सीधा कहना मुश्किल हो रहा था, अस्तु कुछ भी रुकावट डाल न सके और नौजवान किताब लेकर पीछे हट गया। उस सुफेद शक्ल ने अब कहा, "अपनी तलवार कब्जे में करो और निकल चलो यहां से! देर करना बेवकूफी होगी।"

नौजवान ने विचित्र तरह पर तलवार की मूठ को उमेठा जिसके साथ ही उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी और सिमट कर छोटी हो गयी। देखते देखते वह उसी तौर की हो गई जैसी कि पहिले थी। सुफेद शक्ल ने नौजवान को कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वह इस कमरे से बाहर निकल गया और किसी तरफ को गायब हो गया।

गुस्से में भरे शेरसिंह ने गरज कर कहा, "सुफेद शक्ल, तू ही सब आफत की जड़ है, ठहर मैं तुझसे समझता हूं!" उनके हाथ पांव की झुनझुनी अब कम होने लगी थी और वे उनसे थोड़ा बहुत काम लेने के लायक हो रहे थे। वैसा ही एक दूसरा गोला जिससे अभी थोड़ी ही देर पहिले काम लिया था उन्होंने निकाला और

जोर से उस सुफेद शक्ल के ऊपर फेंका जो अब लोप हो रही थी। बहुत सा धूआं सब तरफ फैल गया जिसने उठ कर उस सुफेद शक्ल को चारो तरफ से ढक लिया।

लेकिन अगर शेरसिंह का यह खयाल रहा हो कि धूआं उस सुफेद शक्ल को भी बेहोश बना कर उनके कब्जे में दे देगा तो उनका यह खयाल गलत निकला। थोड़ी देर बाद वह धूआं थोड़ा थोड़ा करके खिड़की की राह कमरे के बाहर निकल गया और कमरे की सब चीजें दिखाई पड़ने लगीं मगर वहां वह सुफेद शक्ल कहीं नजर न पड़ी, हां एक पुर्जा उसी जगह जमीन पर अवश्य पड़ा हुआ नजर आया जिस पर कुछ लिखा हुआ था। शेरसिंह ने उसको उठा लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था, "दुश्मन को कभी कमजोर या छोटा न समझना चाहिए। अगर तुमने उस नौजवान को कब्जे में कर ही लिया था तो तलवार उसके पास क्यों छोड़ दी !"

शेरसिंह ने पुर्जा पढ़ते ही कहा, "अफसोस, बेशक बहुत बड़ी गलती मैंने की और उसकी सजा भी ठीक पाई, मगर अब क्या करना चाहिए ?"

परेशानी की मुद्रा से शेरसिंह ने अपने चारो तरफ देखा और अब पहिले पहिल उनका ध्यान इस बात पर गया कि उस कमरे में वे अकेले ही हैं। न तो बूआजी वहां नजर आ रही थीं और न मैना का कहीं पता था। आश्चर्य के साथ उनके मुंह से निकल गया, "हैं, बूआजी और मैना कहां चली गईं ! मेरे गोले के असर से उन दोनों को भी बेहोश हो कर इसी जगह पड़े रहना चाहिए था। तब क्या मैं यह समझूं कि वही सुफेद शक्ल उन दोनों को भी उठा ले गई।"

जवाब में एक हल्की हंसी उस कमरे में गूंज उठी, तब यह आवाज आई—"बेशक ऐसा ही है।"

शेरसिंह गौर और ताज्जुब से अपने चारो तरफ देखने लगे, मगर वहां था ही कौन जो उनकी नजर में आता। वह बड़ा कमरा एक दम खाली था और बाहर भी जहां तक निगाह जाती थी कहीं किसी आदमी की सूरत नजर न आती थी।

शेरसिंह उठ खड़े हुए। एक बार उन्होंने गौर के साथ बाहर भीतर सब तरफ देखा, तब मन ही मन बोले, "जरूर मेरा कोई बड़ा भारी दुश्मन पैदा हो गया है जो कदम कदम पर मेरे काम में बाधा डाल रहा है। इससे निपटना जरूरी है !"

॥ चौथा भाग समाप्त ॥

१५ वां संस्करण] १९८६ ई० [२२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

पाँचवाँ भाग

पहिला बयान

बहुत गौरसे अपने चारो तरफ देखते हुए शेरसिंह उस कमरेके बाहर निकले और तब मामूली रास्ते से चल कर उस मकान के भी बाहर हो नीचे वाले उस छोटे बाग में जा पहुंचे जिसके अन्दर यह मकान बना हुआ था। हम ऊपर यह भी लिख आए हैं कि इस बाग को चारो तरफ से और भी कितनी ही इमारतों ने घेरा हुआ था।

मगर शेरसिंह इस जगह भी नहीं रुके और कई गुप्त रास्तों से होते हुए वहां पहुंचे जहां संगमर्मर वाली वह बारहदरी थी जिसे सैकड़ों फुहारों ने घेरा हुआ था अथवा जहां से अभी कुछ ही देर पहिले के उस नौजवान को गिरफ्तार कर ले गए थे जो बाद में उन्हें इस प्रकार जक दे उनके कब्जे के बाहर हो गया था। इस समय इस बाग के फुहारों में से एक भी चलता हुआ नजर न आता था और न उस बारहदरी में ही कोई विशेषता दिखाई पड़ती थी, पर उसके पास वाली उस नहर में पानी बहुतायत से बहता चला जा रहा था। कुछ देर तक वे उस बारहदरी की सीढ़ियों के पास खड़े न जाने क्या क्या सोचते रहे, इसके बाद घूम कर उस बारहदरी के पीछे की तरफ पहुंचे और एक जगह जा कर रुके।

हम पहिले लिख आए हैं कि इस बारहदरी की जगत बहुत ऊंची और सब तरह से साफ तथा बहुत चिकनी बनी हुई थी। इस समय जहां शेरसिंह खड़े थे वहां भी उनके सामने करीब एक पुरसे की ऊंचाई तक साफ चिकनी संगमर्मर की दीवार थी और उसके ऊपर सफेद पत्थर का मोटा बन्द देकर तब बारहदरी के खम्भे उठाए गए थे। बहुत गौर के साथ कुछ देखते हुए शेरसिंह ने एक जगह